RNI Regd No. RAJHIN/2013/60831

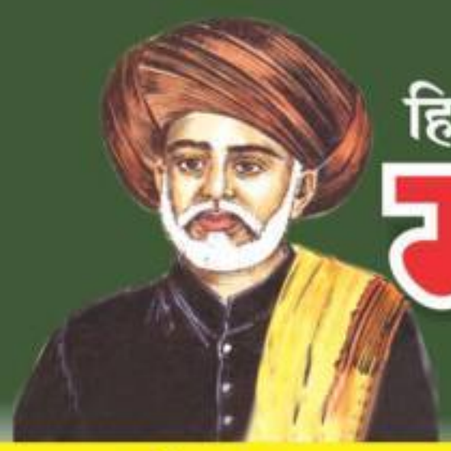

हिन्दी मासिक

माली सैनी सन्देश

जोधपुर

निष्पक्ष, निडर, नीतियुक्त पत्रकारिता

वर्ष : 15 अंक : 180 28, जून, 2020 मूल्य : 20/-

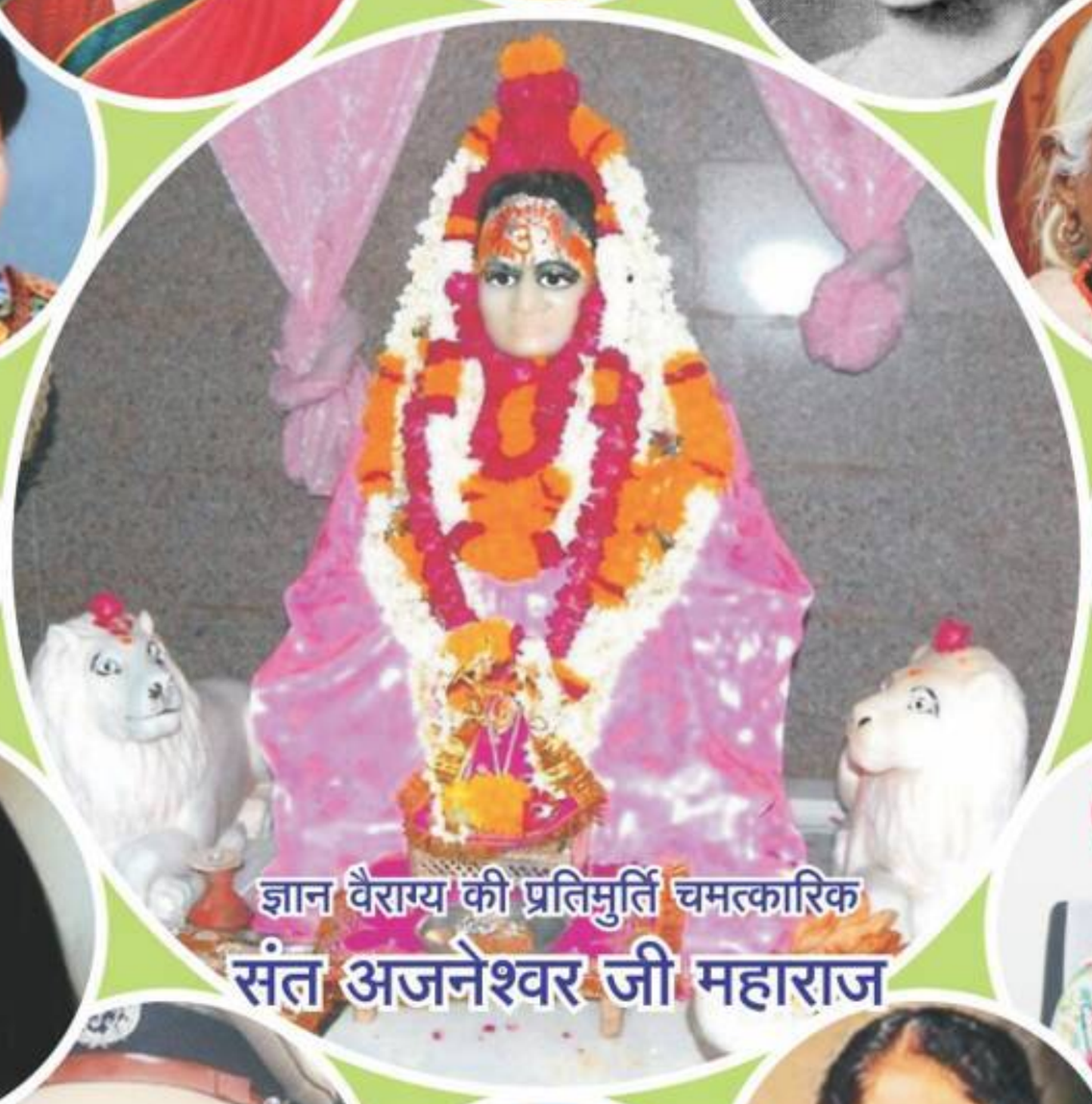

मातृशक्ति विशेषांक

महिला एक्सीलैंसी राष्ट्रीय अवार्ड प्रधानमंत्री देवगोड़ा से प्राप्त करती शिक्षाविद् डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत

उत्कृष्ट सेवा कार्यों हेतु म.प्रदेश मुख्यमंत्री शिवराज चौहान से सम्मानित होती राष्ट्रीय अध्यक्षा अलका सैनी

देश की सबसे छोटी उम्र की कथा वाचिका देवी ममता

उत्कृष्ट प्रशासनिक कार्यों के लिए राष्ट्रपति से सम्मानित भाग्यश्री बनावते आईएएस

ओलपिंयन धाविका अनेकों अंतराष्ट्रीय पदक विजेता मनजीत कौर सैनी

रोटी बैंक सेवा एवं गरीबों हेतु दैनिक सेवा कार्य करने वाली डॉ. प्रियका मौर्या

फिल्म एवं टीवी इण्डस्ट्रीज फेशन डिजाईनर अनेकों अवार्ड से सम्मानित रितु देवड़ा

राष्ट्रपति से सम्मानित हिन्दी साहित्य लेखिका कवियत्री मोनालिसा पंवार सोलंकी

RNI Regd No. RAJHIN/2013/60831

Postal Regd No. Jodhpur/463/2017-19

माली सैनी सन्देश

• वर्ष : 15 • अंक 179 • 28 मई, 2020 • • मूल्य : 20/- प्रति •

माली सैनी संदेश पत्रिका के सम्मानीय माननीय संरक्षक सदस्यगण

श्रीमान रमेशचंद्र कच्छवाहा
(अध्यक्ष, ठेकेदार ऐसोसियेशन, नगर निगम जोधपुर)

श्रीमान लक्ष्मण सिंह सांखला
(समाजसेवी / भामाशाह)

श्रीमान मोहनसिंह सोलंकी
(उद्योगपति / समाजसेवी)

श्रीमान नरपतसिंह सांखला
(बिल्डर्स / समाजसेवी)

श्रीमान नेमीचंद गहलोत
(उद्योगपति / भामाशाह)

श्रीमान पुखराज सांखला
(अध्यक्ष, माली संस्थान, जोधपुर)

श्रीमान ब्रह्मसिंह चौहान
(जिला उपाध्यक्ष, भाजपा, जोधपुर)

श्रीमान प्रदीप कच्छवाहा
(उद्योगपति)

श्रीमान भगवानसिंह गहलोत
(उद्योगपति / भामाशाह)

श्रीमान युधिष्ठर सिंह परिहार
(व्यवसायी / समाजसेवी)

श्रीमान सुरेश सैनी
(समाजसेवी)

श्रीमान (डॉ.) सुरेन्द्र देवड़ा
(हृदय रोग विशेषज्ञ, एम्स)

श्रीमान संपतसिंह कच्छवाहा
(शिक्षाविद / समाजसेवी)

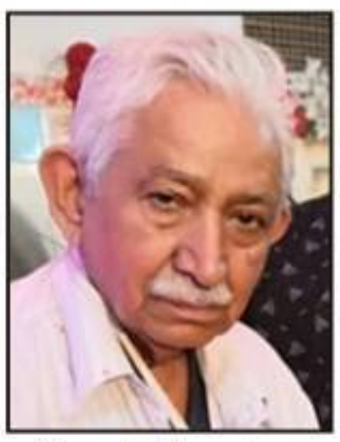

श्रीमान इंद्रसिंह सांखला
(समाजसेवी)

श्रीमान नरेश सांखला
(कॉन्ट्रेक्टर / समाजसेवी)

श्रीमान प्रवीण सिंह परिहार
(बिल्डर / उद्यागपति)

श्रीमान रामेश्वरलाल कच्छवाहा
(व्यवसायी / समाजसेवी)

श्रीमान (डॉ.) पवन परिहार
(शिशु रोग विशेषज्ञ, पावटा स्टेलाईट)

श्रीमान प्रीतम गहलोत
(व्यवसायी / समाजसेवी)

विशेष सूचना :

मातृशक्ति विशेषांक में समाज की महिलाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए उत्कृष्ट कार्यो का संकलन करने का प्रयास किया गया है। लेकिन इसमें हमें समाज की अनेकों महिलाओं की जानकारी समय पर उपलब्ध नहीं होने के कारण उनकी जीवनी एवं उनके द्वारा किए गए कार्यो का प्रकाशन करने का सौभाग्य नहीं मिला है हमें अगले अंकों मे उनका भी जीवन परिचय प्रकाशित अवश्य करेंगे।

समाज की एक मात्र ऑन लाईन पत्रिका माली सैनी संदेश आप कहीं भी पढ़नें के लिए लॉग ऑन करें :

www.malisainisandesh.com

समाज के उत्थान एवं शिक्षा के विकास में हमारी मातृशक्ति का विशेष योगदान रहा हैं....

अतिथि संपादक

डॉ (श्रीमती) निधि गहलोत
एमबीबीएस (डिप् हॉस्पिटल मैनेजमेंट, जोधपुर)

या देवी सर्वभूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम।

माली सैनी समाज का मातृशक्ति को समर्पित यह अंक आप लोगों के हाथों में हैं। यह अंक अपने आप में वंदना है समाज की उन नारी शक्तियों की जिन्होंने अपने अदम्य साहस, धीरज, प्रतिभा, वीरता तथा अध्यात्म आदि अन्य उच्च मानवीय गुणों से समाज के सामने उच्च आदर्श रखें व अपनी सेवाएं दी। पूर्ववर्ती युग की विषम परिस्थितियों में रहकर भी हमारी समाज की महिलाएं हर क्षेत्र में अग्रणी रही है।

संत शिरोमणि अजनेश्वर जी महाराज ने अध्यात्म की ऊंचाइयों को छुआ है वहीं गौरा धाय के त्याग और बलिदान ने राजकुंवर को बचाकर मारवाड़ के धरोहर और इतिहास की रक्षा की है। जहां राजा रजवाड़ों, ब्रिटिश कालीन समय में राजस्थान राज्य (तबका मारवाड़ स्टेट) की पहली महिला डॉक्टर पार्वती जी गहलोत हमारी समाज की रही है, वही स्वतंत्रता के पहले काल में भी जोधपुर से बाहर दिल्ली की इंद्रप्रस्थ स्कूल व लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस व स्वतंत्र भारत में सफदरगंज हॉस्पिटल दिल्ली से सुपरिंटेंडेंट पद से रिटायर होने वाली डॉ संतोष (पुत्री श्रीमती यशोदा देवी सालिगराम जी गहलोत) भी हमारे जोधपुर के समाज से हैं।

वैदिक कन्या की प्रधानाध्यापिका श्रीमती भजनी देवी, स्काउट गाइड की प्रमुख नेत्री जमुना बाई जी...कहां तक गिनाया जाए। मध्यकालीन रूढ़िवादी भारत से लेकर आज के आधुनिक युग तक, कम सुविधाओं, सामाजिक संकीर्णता, अशिक्षा आदि तमस को तोड़ती हुई नारी शक्ति निरंतर अपनी ज्योति से समाज को नई दिशा दिखाने में प्रयासरत है।

अस्तु संपूर्ण समाज का भी यह दायित्व है कि वह महिला को दोयम दर्जे का नागरिक कदापि न माने। अपनी बेटियों को जन्म का अधिकार ही ना दें, बल्कि बेटी बचाने के साथ–साथ, उच्च शिक्षा दीक्षा, स्वरोजगार आदि से पुष्पित पल्लवित होकर संपूर्ण समाज को लाभान्वित करने का अवसर दें। लड़की की शादी के लिए खर्च करने वाले धन से अधिक चिंता शिक्षा में खर्च होने वाले पैसों की व्यवस्था की करें।

एक बेटी पढती है तो वह ना सिर्फ दो परिवारों को शिक्षित करती हैं परंतु दो पीढ़ियों के शैक्षिक व सांस्कृतिक मूल्यों को प्रभावित करके उन्हें तारती है। आज जो पाश्चात्य का अंधानुकरण हो रहा है, सामाजिक सरोकारों में जो कटाव आ रहा है, युवा पीढ़ी में जो भटकाव हो रहा है, अगर हम उस सब को रोककर हमारे समाज के बच्चों को उच्च संस्कारवान बनाना चाहते हैं, वातावरण को परिवर्तन करना चाहते हैं तो इसमें नारी शक्ति का बहुत बड़ा रोल है। एक शिक्षित संस्कारवान बेटी ही आगे जाकर एक अच्छी मां बनती है, वही नई पीढ़ी में सद्संस्कारों का सृजन और बुराइयों का निवारण करवा सकती है। जातियां और समाज अगर परस्पर सौहद्र से रहें, तो वह राष्ट्र को दृढ़ करने में एक मजबूत इकाई हो सकते हैं। परस्पर प्रेम, सौहद्र, राष्ट्रीय भावना का बीजारोपण एक महिला सबसे ज्यादा अच्छा कर सकती है। अस्तु यह अंक समाज की महिलाओं को यह संदेश भी है की आप चाहे तो वीर शिवाजी की मां जीजाबाई की तरह पूरा युग परिवर्तन कर सकती हैं। समाज के बच्चों के व्यक्तित्व व चरित्र का निर्माण एक कुशल कुंभकार की तरह आपके हाथों में है।

हमारा समाज कि कुछ लोग जहां स्वतंत्रता के समय से की आधुनिक शिक्षा में आगे रहे हैं जो गांव कस्बे में आज भी ऐसी बच्चियां है जिनके लिए स्कूल जाना भी मुहाल है। अतः आप सबसे मेरा निवेदन है कि जो भी संपन्न वर्ग है ,वह अपने आसपास के किसी गरीब समाज भाई को मदद करें, किसी बेटी को पढ़ाएं, किसी बेरोजगार बच्चे को स्वरोजगार के लिए मदद दें या फिर उसे दिशा ही दिखा दे।

अंत में यही लिखना चाहूंगी की मातृशक्ति की की प्रशंसा नारी में निहित तीनों देवियां दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती की स्तुति है। हमारी समाज की ही जोधपुर विश्वविद्यालय की समाजशास्त्र की प्रथम महिला प्रोफेसर डॉ तारा लक्ष्मण गहलोत के शब्दों में दीया मैसेज उद्धृत करना चाहूंगी –

"आज आवश्यकता है नारी को सशक्त, सबल व शिक्षित बनाने हेतु ऐसे अवसर पैदा करने की जिसमें वह खुद एक आत्म गौरव युक्त मानवीय गरिमा का जीवन यापन कर सके। नारी के प्रति समाज को दृष्टिकोण बदलना होगा समानता ,सामाजिक न्याय वअधिकारों की रक्षा करनी होगी! तभी हमारा समाज और जागृत व प्रगतिशील बनेगा। सबला बनकर, सशक्त बन कर, शोषण मुक्त नवसमाज का निर्माण करो। जहां ना दहेज, ना भेदभाव ना कन्या भ्रुण हत्या, हो बस जहां सामाजिक न्याय व समरसता।"

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के स्वयं के विचार है। किसी भी विचार के साथ संपादकीय सहमति का होना आवश्यक नहीं है। सभी प्रंसगों का न्यायिक क्षेत्र जोधपुर ही होगा।

ज्ञान, वैराग्य की प्रतिमूर्ति देव स्थानों में पूज्यनीय, प्रातः स्मरणीय, चमत्कारिक

महिला सन्त अजनेश्वर जी महाराज

भगवद् भक्ति में पुरुष और नारी का कोई भेद स्वीकार्य नहीं है। परमात्मा को प्राप्त करने के लिए भक्ति के मार्ग को सभी के लिये सुलभ तथा सुगम माना गया है। मीरा बाई, सहजो बाई, दया बाई आदि नारियाँ भक्तिपथ का अनुगमन कर सिद्धि प्राप्त करने में सफल हुई। दक्षिण भारत के आलवार भक्त कृष्णोपासक थे। इनमें आन्दाल नामक नारी भक्त मीरा की ही भाँति कृष्ण को अपना पति मानकर दाम्पत्य भाव से उपासना करती थी। सूफी सन्तों में भी नारियों को स्थान मिला था। उनसमें राबिया जैसी भक्त स्त्रियों का उल्लेख मिलता ही है। जोधुपर को भी एक ऐसी महिला सन्त को जन्म देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिनके अनुयायियों की संख्या आज भी कम नहीं है और जो प्रतिदिन इस नारी सन्त द्वारा स्थापित आश्रम में नियमित रूप से जाकर भक्ति तथा भगवान के नामस्मरण द्वारा स्वजीवन का उत्थान करते हैं।

इस महिला सन्त का नाम अजनेश्वरी महाराज था, जिनके चित्र आज भी जोधपुर के सद्गृहस्थों के पूजाकक्षों में देवप्रतिमाओं की ही भाँति पूजे जाते हैं। सन्त अजनेश्वर का जन्म नाम अजनी बाई था। इनका जन्म वि. सं. 1908 (1851 ई.) की आश्विन कृष्ण एकादशी को जोधपुर के एक कच्छवाहा माली परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम श्रीराम तथा माता का नाम हरकू बाई था। पिता स्वयं भक्तिमार्ग के पथिक थे तथा वैराग्योन्मुख होने के कारण गृहत्यागी बन चुके थे। 1913 वि. के वैशाख मास में जब अजनी बाई 5 वर्ष की बालिका ही थी, उन्हें कबूतरों के चौक में स्थित एक मदिर में परमात्मा के सर्वोन्कृष्ट नाम 'ओम्' की महिमा सुनने को मिली। पूर्वजन्म के संस्कारवश उनका चित्त भी भक्ति की ओर उन्मुख हो गया और वे नियमित रूप से नगर के मध्य में स्थित कुंजबिहारी जी के मंदिर में दर्शनार्थ जाने लगीं।

उन दिनों बालविवाह का प्रचलन था। अतः अजनी बाई का विवाह भी दस वर्ष की अल्पायु में रामबख्शजी के साथ कर दिया गया। संयोग ऐसा रहा कि जोधपुर के ही सिद्ध सन्त महात्मा देवीदान जी इनके बड़े भाई थे। विवाह तो एक लौकिक बंधन था जिसे अजनी बाई ने मीरां तथा आन्दाल की भाँति स्वीकार ही नहीं किया। इसी बीच उनके पिता श्रीराम जी ने संन्यास धारण कर लिया। विवाह के एक वर्ष पश्चात् ग्यारह वर्ष की आयु में अजनी बाई भी गृहस्थ को त्याग कर वैराग्यपथ की पथिक बन गई। उन्होंने अपने पिता तथा गुरु से ओंकार का मंत्र गुरुमंत्र के रूप में मिला। आपने लगभग बारह वर्ष ओम की उपासना की और प्राणायाम का भी अभ्यास किया था। जिसे उन्होंने आजीवन धारण किया तथा अपने शिष्यों को भी इसी एकाक्षर मंत्र का उपदेश दिया। संन्यास की दीक्षा लेने के पश्चात् उन्होंने द्वारिका, पुरी तथा रामेश्वर की सुविस्तृत यात्राएँ की तथा सत्संग का लाभ उठाया।

उपर्युक्त यात्रा में उन्हें तीन वर्ष लगे। नगर में लौटकर उन्होंने सुखानन्द की बगेची को अपना साधना–स्थल बनाया और वह त्याग, तप तथा द्वन्द्व सहन आदि के द्वारा जीवन परिष्कार में लग गई। विद्याध्ययन के साथ–साथ हठयोग की साधना में भी वे प्रवृत्त हुई तथा राजयोग के साधनों के द्वारा समाधि की स्थिति तक पहुंच गई। इस स्थान में रहते हुए वे अत्यन्त अल्प आहार लेतीं और दीर्घकाल के लिये मौन व्रत धारण कर उन्होंने समाधि को सिद्ध किया। आप परिग्रह शून्य थे। पैसा छुते भी नहीं थे। यदि कोई पैसा रख जाता तो उस सीन को धुलवाते थे। भगवान ने आपको बालक स्वरूप में दर्शन दिए जिस समय आप बद्रीनाराण (बद्रीनाथ) की यात्रा पर थे। ज्यों–ज्यों अजनेश्वर जी की ख्याति बढ़ती गई, लोगो का उनके स्थान पर आवागमन बढ़ने लगा।

कहा जाता है कि स्वभाव से द्वेषी कुछ लोगों की शिकायत पर जोधपुर सरकार ने आपको कारागृह में डाल दिया। वहां आप एक रात ही रहे। उस रात में जनाना महल में सर्वत्र पुरूष ही पुरूष दिखाई देने लगे। सर प्रताप के पेट में भंयकर पीड़ा हुई। प्रातः होते ही अजनेश्वर जी महाराज को मुक्त करना पड़ा और फतेह बुर्ज बकसीस किया। आपके चमत्कार से प्रभावित राजपरिवार ने किले से भी उपर स्थान पर आप प्रतिदिन महारानी को प्रातः दर्शन देते थे। उसके पश्चात महारानी भोजन लेती थी। आज भी किले से भी उपर आपका स्थान है जो कि आप की महानता को दर्शाता है।

जब भक्तजनों का आना–जाना अधिक बढ़ा तो इसे भजन में बाधक समझकर वे फतह बुर्ज में चली गई जो आज एक पहाड़ी के शिख पर बाईजी महाराज के आश्रम के नाम से जाना जाता है। यह सुविस्तृत और भव्य आश्रम सिवांची दरवाजे से चांदपोल की ओर जाने वाले मुख्य राजमार्ग के बांयी ओर की एक छोटी पहाड़ी पर अवस्थित है जहां साधकों के निवास के लिये कुटियायें, प्रार्थनास्थल, पाकशाला आदि अनेक स्थानों का निर्माण विगत वर्षो में हुआ है। इस स्थान पर पहुँचकर सन्त अजनेश्वरजी ने एक पाट पर मृगछाला को अपना आसन तथा एक कम्बल को अपना वस्त्र बनाया।

सन्त अजनेश्वर जी (जो जोधपुर वासियों में बाई जी महाराज के नाम से जाने जाते है) की साधना का स्वरूप निर्गुण सन्तों की विचारधारा को ही लेकर चलता है। कालान्तर में अन्य मत तथा पंथों की भाँति उसमें भी गुरु की स्थलपूजा, मूर्तिपूजा आदि तत्वों का समावेश हुआ। अजनेश्वरजी ने परमात्मा के मुख्य नाम 'ओम्' तथा उसके सच्चिदानन्द स्वरूप को ही मान्यता दी है। ओम् की महिमा शास्त्रों में सर्वत्र पाई जाती है। यजुर्वेद में उसे आकाश के तुल्य महान् तथा व्यापक बताया गया है। 'ओम् एवं ब्रह्म' को तो उपनिषदों ने उसे वेदों का चरण, वर्ण्य विषय, तपस्वियों की तपस्या का लक्ष्य तथा ब्रह्मचर्यादि साधनों से प्राप्य कहा है। गीता ने उसे 'एकाक्षर ब्रह्म' कहा तो पातंजल योग में उसे प्रणव का नाम देकर अर्थचिन्तनपूर्वक उसका जप करने का उपदेश दिया है। ओम् के इसी शास्त्रवर्णित स्वरूप को हृदयंगम कर बाई जी महाराज ने इसकी महिमा को इस प्रकार बताया है –

ओमकार निज नाम है, सब नावों का मोड़।
ओम ओम हिरदे रटो, मिटे मन की खोड़।।
ओमकार को सिंवर ले, भज ले सांसो सांस।
भवजल की फांसी कटे, मिटे यम की त्रास।।

वे यह जानती है कि परमात्मा के नाम तो असंख्य हैं, किन्तु ओम् के महत्व को वे सर्वोपरि मानती हैं–

असंख्य नाम नारायण तिहरा, सब ही नाम मोंकू हैं प्यारा।
ओम् नाम की बलिहारी जाऊं, ओम नाम को शीश नवाऊं।।

सन्त साहित्य में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। वहाँ गुरु और ब्रह्म

में कोई अन्तर नहीं किया जाता। अजनेश्वर जी की दृष्टि में भी गुरु सच्चिदानन्द स्वरूप हैं जिनके दर्शनों से त्रितापों का शमन होता है। उनके शब्दों में –

गुरु से गोविन्द मिले, बिन गुरु गोविन्द न पाय।
अनन्त जनम को बिछड़ियों, कहुं नहिं पाया ठांव।।

उन्होंने दृश्यमान संसार को नश्वर तथा क्षणभंगुर ठहराया। पानी के बुलबुले, ओस की बूंद तथा अंजलि के पानी की भाँति उसे नाशवान् बताया। वे मृत्यु को निश्चित मानती हैं और गीता की भाँति इस तथ्य में विश्वास करती हैं कि कोई किसी को न तो मारता हैं और न मारा जाता है – **नायं हन्यति न हन्यते।**

बाईजी महाराज के वचन हैं–

मारिया किसी का ना मरे, करलो कोटि उपाय।
जब मृत्यु मारण आवसी, तब बचायों बचसी नाय।।

वे कथनी की अपेक्षा करनी में विश्वास रखती हैं –

करनी इमृत सारखी, कहनी विष की बेल।
जो कहणी रहसी हुवे, तो सुख सागर में खेल।।

सन्त अजनेश्वरजी ने ज्ञान और भक्ति में समन्वय माना है। वे नामस्मरण को अत्यधिक महतव देती हैं तथा इसे ही संसार सागर से पार जाने का उपाय मानती हैं।

ज्ञान, भक्ति और वैराग्य को वे साधक के लिये आवश्यक समझती हैं–

हरि सिंवरण में चि दिसत्त रेवो, आलस नींद निवार।
ज्ञान भक्ति वैराग्य में, सन्तों रहो होशियार।।

भक्ति मार्ग में उन्हें महर्षि नारद तथा शाण्डिल्य कथित भक्ति के नौ (नवधा भक्ति) का रूप स्वीकार हैं। इनमें भी वे नामस्मरण, कान्ताभावासक्ति, तथा आत्मनिवेदन को प्रधानता देती हैं। वे सन्त–समागम और सत्संगत द्वारा चरित्र को निर्मल बनाने की बात करती हैं तथा शील, सन्तोष, शुचिता, अपरिग्रह तथा दानवृति को आत्मा के उत्कर्ष का साधन स्वीकार करती हैं। उनकी दृष्टि में मानव जन्म सभी प्राणियों में उत्कृष्ट है क्योंकि मनुष्य को ही सत्, असत् और धर्म एवं अधर्म में विवेक करने की शक्ति प्राप्त है। वे कामिनी और कंचन को अध्यात्मसिद्धि में बाधक मानती हैं–

हाड मांस की कामनी, कंचन काच कथीर।
सन्तों इनके त्याग बिन, मिटे न भव की पीर।।

सम्वत 1984 की श्रावण शुक्ला चतुर्दशी की प्रातः अजनेश्वरी जी ने शरीर त्यागा। आपको पवनदाग दिया गया। आप बाईजी महाराज के नाम से आज भी सुविख्यात है आपके पश्चात "बाईजी महाराज" पद बन गया। आपकी उत्तराधिकारिणियां बाईजी महाराज कहलाती है।

सन्त अजनेश्वर जी की शिक्षाओं को नगर के महिलावर्ग ने उन्मुक्त भाव से स्वीकार किया। विशेषतः सवर्ण हिन्दुओं की विधवाओं के लिये उनके उपदेश जीवन को सदाचारयुक्त, चरित्र निर्माण से सम्पन्न तथा मर्यादा–पालन में सहायक हुए। इंद्रिय संयम, शीलसंयम, त्यागमय तथा संतोषयुक्त जीवन जीने की प्रेरणा इन उपदेशों से सन्नारियों तथा सद्गृहस्थों को मिली। यही कारण है कि सन्त अजनेश्वर जी के समाधि लाभ करने के पश्चात् भी उनके आश्रम का गौरव यथावत् रहा तथा उनके अनुयायी शिष्यवर्ग ने अजनेश्वर धाम को भक्ति, उपासना तथा साधना का एक केन्द्रस्थल बना दिया। वि.सं. 1984 की श्रावण सुदी 14 को सन्त अजनेश्वरजी का निधन हुआ। आज भी जोधपुर तथा समीपवर्ती क्षेत्र के असंख्य नर–नारी इस महिला सन्त का स्मरण भक्तिपूर्वक करते हैं।

आप ज्ञान, वैराग्य की मूर्ति है, आज भी आपके दर्शन व श्रद्धा से कई भक्तों की कामनाएँ पूरी होती है।

संत श्री अजनेश्वर महाराज की वाणी

।। ऊँ श्री राम ।।

भ्रमना भ्रमना बावरे, ब्रह्म तूं जोय अंधा।। टेर।।

दोयनाय दोयनाय दोयनाय प्यारे, दूर, मत को कर दूर बंदा।

समदृष्टि कर जोय जू मन में, एक वही पूरण चंदा।।

सुखनाय दुखनाय दुःख को दूर कर, अजर अमर आनन्द कंदा।।

सुखनाय सुखनाय सुख तुजमाय नहीं, सुख दुःख दोनों हैं फंदा।।

एक नाय दोय नाय अनके भी नाय, छोड़ दे तू सब का संगा।।

आप ही आप तू क्यूं नहीं जाने, आप ही है परमानंदा।।

आप आप में आपको लख ले, सभी रंगों में आप रंगा।।

आप ही ख्याली आप खेल है, आप ब्रह्म सच्चिदानंदा।।

अजनेश्वर कहे यह निश्चय कर,

छोड़ सभी गोरख धंधा।। वृहयत् ब्रह्म....

ऊँ आनन्द ओम्। आनन्द ऊँ आनन्द

समाज की दबंग मातृशक्ति
श्रीमती डॉ. कल्पना सैनी
अध्यक्षा, राज्य पिछड़ा आयोग
उतराखण्ड सरकार

नाम	:	**श्रीमती (डा.) कल्पना सैनी**
धर्मपत्नी	:	डॉ. नाथीराम सैनी सेवा निवृत चिकित्सा अधिकारी, उत्तर प्रदेश
पुत्री	:	डॉ0 पृथ्वीसिंह सैनी विकसित पूर्व राज्य सिचाई मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार
जन्म	:	ग्रा. तेलीवाला, शिवदासपुर, हरिद्वार उत्तराखण्ड
शिक्षा	:	एम. ए., पी. एच. डी.
	:	सेवानिवृत प्रधानाचार्या
निवासी	:	538, आवास विकास, रूड़की हरिद्वार
संतान	:	1 पुत्री इंजिनियर अटंलाटा (अमेरिका)
		1 पुत्र इंजिनियर, लुसाका (जाम्बिया)

राजनैतिक पृष्ठभूमि : 1983में हित चिन्तक विहिप से प्रारम्भ, फिर दूर्गावाहिनी जिला संयोजक, विहिप की जिलाकार्यकारिणी सदस्या, दो बार सेवा भारती नगराध्यक्ष।

महिला धर्म प्रसार जिला सदस्य, राष्ट्र सेविका समिति की सेवारत गठ की सदस्या व प्रदेशमें भाजपा में बुद्धि जीवी प्रकोष्ठ की सदस्य व मंत्री प्रदेश अनुशासन समिति सचिव व सांगठनिक जिला रुड़की की जिलाध्यक्ष। N FL की स्वतंत्र निदेशक वर्तमान में राज्य पिछड़ा वर्ग की अध्यक्षा है।

महिला सशक्तिकरण अवधारणा एवं आन्दोलन की आद्य प्रवर्तक, भारत की प्रथम महिला शिक्षिका

माता सावित्री बाई फूले

इस देश की महिलाओं में सावित्रीबाई ही प्रथम शिक्षित स्त्री, प्रथम अध्यापिका, भारत की सभी जातियों की प्रथम नेता और अस्पृश्यता का जम कर विरोध करने वाली प्रथम कार्यकत्री थी। महात्मा ज्योतिबा फूले के कार्यों में उनकी अटल निष्ठा थी।

महात्मा ज्योतिराव फूल (11 अप्रेल 1827–28 नवम्बर 1890) की पत्नी श्रीमती सावित्रीबाई फूले (3जनवरी 1831–10मार्च 1897) न केवल भारत की प्रथम अध्यापिका था, बल्कि वह नारी सामाजिक चेतना तथा आधुनिक शब्दावली में महिला सशक्तिकरण अवधारणा एवं आन्दोलन की आद्य प्रवर्तक थी। वह न केवल शूद्रातिशूद्रों तथा नारी शिक्षा आन्दोलन की साहसी अग्रदूत थी, बल्कि एक कुशल सामाजिक संगठनकर्ता भी थी। वह न केवल महात्मा फूले की अटूट आस्थावान सहचर, सहभागी और अर्द्धांगिनी थी। बल्कि भारत की प्रथम महिला साहित्यकार (कृति : काव्य फूले 1854) भी थी। वह 19वीं शताब्दी के भारतीय समाजिक–धार्मिक पुनर्जागरण एवं सांस्कृतिक नवोत्थान युग की प्रथम सामाजिक कर्मण्यवादी महिला महात्मा थीं। कृतज्ञ राष्ट्र का यह सामाजिक दायित्व है कि वह सामाजिक क्रांति ज्योति सावित्रीबाई फूले की पुण्य स्मृति में उनकी जन्मतिथि (3 जनवरी) पर महिला साक्षरता दिवस तथा पुण्य तिथि का आयोजन महिला सशक्तिकरण दिवस के रूप में करें।

जन्म और विवाह : महाराष्ट्र के एक छोटे से ग्राम नायागांव (तहसील खंडाला, जिला सतारा) में 3 जनवरी 1831 को खंडोजी नेवसे पाटिल के परिवार में सावित्रीबाई का जन्म हुआ। धनकवाड़ी के पाटिल (गांव मुखिया) की बेटी सगुणाबाई क्षीरसागर महात्मा ज्योति बा फूले की मौसेरी बहन थी। वह बाल विधवा थी। उसने शिशु ज्योतिराव फूले का पालन–पोषण किया था। उसके प्रयत्नों से युवक ज्याति का विवाह नायगांव में सावित्रीबाई के साथ 1840 ई में हुआ। उस समय युवक ज्योति की आयु 13 वर्ष और सावित्री की आयु 9 वर्ष थी।

सामाजिक चिंतन की दृष्टि से युवक ज्योति और सावित्री का विवाह दो समाजोन्मुख शक्तियों का संगम था। कुछ ही वर्षो बाद (1848 ई से) युवक ज्योतिराव के सामाजिक विद्राही व्यक्तित्व ने सावित्रीबाई के व्यक्तित्व को इतना अधिक प्रभावित कर दिया कि वह अपने पति के सामाजिक क्रांति कार्य की सक्रिय सहभागी बन गई।

शिक्षाः प्रारम्भ में प्रबुद्ध युवक ज्योति ने सगुणाबाई क्षीरसागर और अपनी पत्नी सावित्रीबाई को स्वयं पढ़ाया। बाद में 1848 में ज्योतिराव के ब्राह्मण मित्र सखाराम यशवंत परांजपे, सदाशिव बल्लाल गोवंडे और शिवराम भवालकर ने सावित्रीबाई के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाद में ईसाई मिशनरी मरे मिचेल की पत्नी श्रीमती मिचेल ने अपनी नार्मल स्कूल (1840 में पुणे में स्थापित) में सगुणाबाई और सावित्रीबाई फूले को परीक्षण के बाद तीसरी कक्षा में भर्ती किया। श्रीमती मिचेल नारी शिक्षा की प्रबल पक्षधर थी।

प्रथम भारतीय महिला शिक्षिका : 1848 में अपने ब्राह्मण मित्र सखाराम यशवंत परांजपे की बारात में एक घोर रूढ़िवादी चिपावन ब्राह्मण द्वारा अपमानित युवक ज्योतिराव ने अपने अपमान को समस्त शूद्रादि–अतिशूद्रों का अपमान समझ सामाजिक दासता से मुक्त कराने के लिए शिक्षा को सर्वोत्तम सधन माना। उन्होंने अपनी पुस्तक 'किसान का कोड़ा' (1833 परन्तु 1967 में प्रकाशित) शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा–विद्या बिन गई मति बिन गई नीति, नीति बिन गई गति, गति बिन गया वित्त, वित्त बिन चरमराए शूद्र एक अविद्या ने किए इतने अनर्थ।

इस प्रकार शिक्षा को सामाजिक चेतना का प्रकाश स्तम्भ मानते हुए ज्योतिराव फूले ने पुणे के बुधवार पेठ में ताँत्या साहब भिड़े की हवेली (भिड़ेवाला) में अपनी प्रथम कन्याशाला अगस्त 1848 में प्रारम्भ की। सावित्रीबाई फूले इसी कन्यापाठशाला में अध्यापिका पद पर नियुक्त की गई।

महात्मा फूले द्वारा पूणे में अपनी प्रथम कन्याशाला प्रारम्भ करने तथा उसमें सावित्री बाई फूले का अध्यापिका पर पर कार्य करने की अभूतपूर्व घटना को पूणे के कट्टरपंथी ब्राह्मणों ने ईश्वरीय विधान विरोधी, हिन्दू धर्म विरोधी तथा समाज विरोधी समझते हुए उसकी घोर भर्त्सना की। अतः रूढ़िवादी वर्ग ने सावित्रीबाई को घर से कन्याशाला जाते तथा शाला से घर लौटते समय उसे शारीरिक एवं मानसिक कष्ट देने (ताने कसना, गोबर–कीचड़ फेंकना आदि) प्रारम्भ किए। फूले दम्पति को नारी शिक्षा के साामजिक कार्य से विचलित करने के लिए पूणे के रूढिवादी वर्ग ने फूले के पिताश्री गोविन्दराम से शिकायत की। अन्ततः अपने पिता के आग्रह पर फूले दम्पति ने 1849 में गृह त्याग कर दिया। ऐसी स्थिति में फूले दम्पति की प्रथम पाठशाला 5–6 मास बाद ही बंद हो गई।

असफलता में ही भावी सफलता के बीच निहित है। वित्तीय स्थिति में न्यूनाधिक रूप से सुधार होने पर फूले दम्पति ने पूणे के जूनागंज पेठ में अतिशूद्र छात्र–छात्राओं के लिए बुधवार पेठ, पूणे में अण्णासाहब चिपलूणकर के भवन में 3 जुलाई 1851 को कन्याशाला प्रारम्भ की। सावित्रीबाई फूले का स्थानान्तरण जूनागंज पेठ पाठशाला से इस कन्याशाला में प्रधानाध्यापिका के पद पर कर दिया गया।

इस प्रकार अनेक शताब्दियों से शूद्रों तथा कन्याओं के लिए शिक्षा के बंद द्वार प्रथम बार खोलने का श्रेय ज्योतिबा फूले और उनकी साहसी पत्नी सावित्री बाई फूले को है। एक सफल अध्यापिका के रूप में सावित्री बाई फूले के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए बॉम्बे प्रेसीडेंसी के रेकार्ड (जी.डी. खंड सप्तम् पृ. 207–09) में लिखा है– सावित्री बाई फूले ने वेतन लिए बिना महिला शिक्षा में सुधार के लिए समर्पित भाव से सराहनीय कार्य किया हैं। हमें आशा है कि ज्ञान के प्रसार के साथ इस देश के लोग महिला शिक्षा के लाभों के प्रति जागृत होंगे।

ज्योतिबा फूले ने 1855 में प्रौढ़ो के लिए एक रात्रिशाला खोली, जिसमें प्रौढ़ महिलाओं को सावित्री बाई फूले पढ़ाती थी। मुम्बई सरकार के 6 अभिलेखों में फूले दम्पति द्वारा पूणे तथा उसके आस पास के क्षेत्रों में जनवरी 1848 से लेकर 15 मार्च 1852 तक कुल 18 विद्यालय खोले जाने का उल्लेख है जिनमें से 4 विद्यालय कन्याओं के लिए थे। नारी शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के उपलक्ष्य में मुम्बई सरकार की ओर से संस्कृत कॉलेज पूणे के अधीक्षक मेजर कैड़ी ने एक भव्य सार्वजनिक समारोह में 16 नवम्बर 1852 को 193 य. के दो शॉल भेंट कर ज्योतिबा फूले को सम्मानित

किया। इस अवसर पर ज्योतिबा ने अपनी पत्नी सावित्री बाई फूले से कहा– यह गौरव तुम्हारा ही गौरव है। मैं स्कूल खोलने के लिए कारण मात्र बन गया, लेकिन मुझे इस बात का गर्व है कि उन स्कूलों को सुचारू रूप से चलाने में तुम सफल रहीं।

सामाजिक कार्य : ज्योतिबा और उनकी पत्नी सावित्रीबाईफूले का सामाजिक कार्य अलग–अलग करके देखना असम्भव है। दोनो दो शरीर अवश्य थे, परन्तु उनकी आत्मा एक थी। ज्योतिबा मार्गदर्शक थे तो सावित्रीबाई सामाजिक क्रान्ति की ज्योति की वाहक थी। फूले दम्पति दो सामाजिक शक्तियों का एकाकार रूप्था। फूले दम्पति ने मुक्ति के लिए परम्परागत रूढ़ियों का खण्डन किया। सती प्रथा तथा विधवा मुंडन का विरोध तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। सावित्रीबाई ने नारी शिक्षा के कार्य में ज्योतिबा का जो योगदान रहा वह अक्षुण्ण है।

फूले दम्पति ने जनवरी 1863 में विधवाओं के अवैध बच्चों के लालन–पालन के लिए सन् 1863 में बाल हत्या प्रतिबन्ध गृह खोला और विधवाओं को गुप्त तथा सुरक्षित प्रसूति के लिए प्रसूतिगृह खोला। प्रसूतिगृह में जन्में काशीबाई नामक एक विधवा ब्राह्मण नारी के बच्चे (यशवन्त) को खोद लिया। बालक यशवन्त बाद में डॉक्टर बन गया। 4 फरवरी को उसका विवाह राधाबाई पुत्री कृष्णराय ससाणे से करके समाज सुधार का एक आदर्श प्रस्तुत किया। महाराष्ट्र में यही सर्वप्रथम अन्तर्जातीय विवाह था। ज्योतिबा के देहावसान के बाद आठ वर्षों तक सावित्रीबाई ने सत्यशोधक समाज (स्थापना वर्ष सितम्बर 1873) का कार्यभार सम्भाला।

साहित्य और विचार : सावित्रीबाईफूले श्रेष्ठ अध्यापिका, प्रभावशाली वक्ता, कुशल प्रशासिका, लेखिका, और कवयित्री थी। उनका 'काव्यफूल' शीर्षक काव्य संग्रह 1854 में प्रकाशित हुआ। उनके द्वारा रचित ग्रन्थ निम्न हैं :–

1. काव्यफूले (1854) 2. मातृश्री सावित्रीबाई ची भाषणे व वाणी–विषय उद्योग व विद्यादान (181)
3. बावनकशी सुबोधरत्नाकर (काव्य संग्रह), 4. ज्योतिबांची भाषणे भाग 1 से 4 (सं. सावित्रीबाई)
5. सावित्रीबाईफूले के विविध विषयों पर भाषण, 6. सावित्रीबाईफूले द्वारा ज्योतिबा को लिखे गए दो पत्र।

वास्तव में सावित्रीबाई की ज्ञान ज्योति महात्मा फूले की आलोकमयी ज्योति से प्रज्जवलित हो गई थी। अपने पति काण स्वीकार करते हुए वे ''काव्यफूले'' में कहती है :–

''वे है अज्ञानी जनों के कर्णधार देते हैं उन्हें नित सद्विचार
वे हें कृति वीर तथा ज्ञानयोगी झेलते है दुख स्त्रियों–शूद्रों की
खातिर।''

उन्होंने ज्योतिबा को नमन करते हुए लिखा :–

''जिनके कारण करती हूँ मैं कविता,
जिनकी कृपा से चित को आनन्द है मिलता
जिनकी मिली है बुद्धि इस सावित्री को
लाख लाख प्रणाम करती हूँ स्वामी ज्योतिराव को''

उन्होंने अपनी–जागों, पढ़ो–लिखों शीर्षक कविता में लिखा है :–

''उठो, अति शूद्र भाईयों, जागो!
पारम्परिक गुलामी को तोड़ने को तैयार हो जाओं,
भाईयों, पढ़–लिखने के लिए जागो!

अपनी 'अज्ञान' शीर्षक कविता में वे कहती है :–
''एक ही शत्रु हमारा उसे भगाएँ
सब मिलकर उसके सिवा नहीं है दूजा, खोजो, मन में सोचो,
सूनो गौर से उसका ना अज्ञान!''

वे सभी मानव को एक ही ईश्वर की सन्तान मानते हुए कहती हैं–

''जब तक हम इस बात से अवगत नहीं हो पाते कि सभी मानव एक ही ईश्वर की सन्तान है, तब तक ईश्वर को सही रूप में समझना नामुमकिन हैं। हम सब भाई–भाई हैं, यह महसूस करना ही ईश्वर की सही पहचान है।''

अस्पृश्यता और जातिवाद के ऐतिहासिक दोषों का विश्लेषण करते हुए सावित्री बाई फूले कहती है – ''दो हजार सालों से शूद्रातिशूद्रों को श्रेष्ठ लोगो ने ज्ञान, सम्पति एवं सता से दूर रखा। इसलिए विदेशियों ने आक्रमण करके श्रेष्ठ लोगों को जीत लिया। मुठ्ठी भर ब्राह्मण क्षत्रिय एवं वैश्य घमण्ड से विदेशियों से लड़ते रहे। वे हमें पूछते तक नही थे। विदेशियों ने उन्हें मिट्टी में मिलाया। देश की बारबार होने वाली पराजय के लिए वे ही जिम्मेदार हैं।'' अस्पृश्यता के कारण धर्मान्तण पर प्रकाश डालते हुए सावित्री बाई फूले कहती हैं – ''महार–मांगों को अदूत क्यों समझते हो? शूद्रातिशूदों को अशिक्षित क्यों रखते हैं? आपकी इस मूर्खता के कारण ही आपके जाति–बन्धु इसाई बन रहे हैं।

मूर्खों! स्वयं को तो हिन्दू समझते हो और अस्पृश्य को हिन्दू होने के बावजूद दूर क्यों रखते हो। महार–मांगों की छाया तक को कलुषित मानना धर्म का अपमान करना है।''

इन विचारों से स्पष्ट होता है कि शूद्रातिशूदों के सामाजिक उत्थान के लिए ज्योतिबा के समान सावित्री बाई फूले भी जीवनपर्यन्त संघष करती रही।

नारी चेतना की प्रणेता : नारी शिक्षा के क्षेत्र में अपने ज्योतिबा को समर्पित भाव से सहयोग देकर सावित्री बाई फूले ने भारतीय नारी के इतिहास में एक नए अध्याय का सूत्रपात किया। इस सन्दर्भ में मामा परमानन्द ने 31 जुलाई 1890 को बड़ौदा रियासत के दीवान घामणस्कर को लिखे पत्र में कहा – ''ज्योतिराव से भी अधिक उनकी पत्नी सावित्री बाई की जितनी सराहना कि जाए कम हैं। उन्होंने अपने पति को सम्पूर्ण सहयोग दिया, उनके साथ रहकर मुसीबतों का डटकर सामना किया, कष्ट तथा यातनाएं सहीं। ऊँचे वर्गों की उच्च शिक्षित महिलाओं में भी ऐसी त्यागी महिला बिरला ही होगी।

निष्कर्ष :– भारत की प्रथम महिला अध्यापिका बनकर उन्होंने नारी सामाजिक चेतना आन्दोलन का शुभारम्भ किया और यही से स्त्री मुक्ति आन्दोलन की गंगोत्री निकली। सावित्री बाई फूले ने शूद्रातिशूद्रों एवं स्त्री जाति को ज्ञान दान करके सामाजिक पुर्जागरण के आधुनिक युग का द्वार सबसे लिए खोला। वे महिला सशक्तिकरण अवधारणा की आद्य प्रवर्तक थीं। भारत सरकार के डाक विभाग ने 10 मार्च, 1998 को सावित्री बाई फूले पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गौरव का अनुभव किया।

प्रथम महिला कृषि वैज्ञानिक–सुश्री अरूणा परिहार

आपका जन्म 14 जून 1949 को श्री जनकसिंह परिहार एवं श्रीमती ओमकुमारी परिहार के यहां जोधपुर में हुआ। आपने एमएस.सी., पीएच.डी. डाक्टरेट की डिग्री जोधपुर विश्वविद्यालय से प्राप्त कर राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर में व्याख्याता पद पर नौकरी शुरु की। आप भारत के कई कृषि महाविद्यालयों में अब तक 78 शोध पत्र व अशोध लेखन प्रस्तुत कर चुकी हैं तथा 1986 में अमेरिका से भी प्रशिक्षण प्राप्त किया हैं। आप प्रोफेसर निमेटोलोजी राज. कृषि विश्वविद्यालय में कार्यरत थी यहां के छात्रावास की वार्डन भी रही। माली समाज को आप पर गर्व है आपने अपने उच्च शिक्षा एवं उत्कृष्ट कार्यशैली से देश ही नहीं विदेश में भी समाज एवं देश के नाम को गौरवान्वित किया है।

मरूधर जननी का अपूर्व त्याग

जसधारी गोरां धाय मां

मारवाड़ के प्रशस्त इतिहास में वीरागंना गोरां धाय का अपूर्व साहस व त्याग का परिचय एक निर्णायक घटना थी अन्यथा मारवाड़ का स्वरूप ही दूसरा होता। वीरागंना गोरां धाय टाक नें अपनी आत्मा के अभिन्न अंश नवजात पुत्र को मारवाड़ की रक्षा के लिए समर्पित कर दिया। वीरागंना गोरां धाय टाक का जन्म 4 जून 1646 को एक सैनिक क्षत्रिय (सैनी) टाक परिवार में हुआ। वह माता रूपा देवी व पिता रत्ना टाक की पुत्री थी। रूपाधाय महाराजा श्री जसंवत सिंह प्रथम की धाय थी। उनके नाम से रूपाधाय बावड़ी मेड़तीगेट के अन्दर है। गोरां धाय का विवाह मण्डोर के भलावत गहलोत परिवार में मनोहर गोपी भलावत के साथ हुआ।

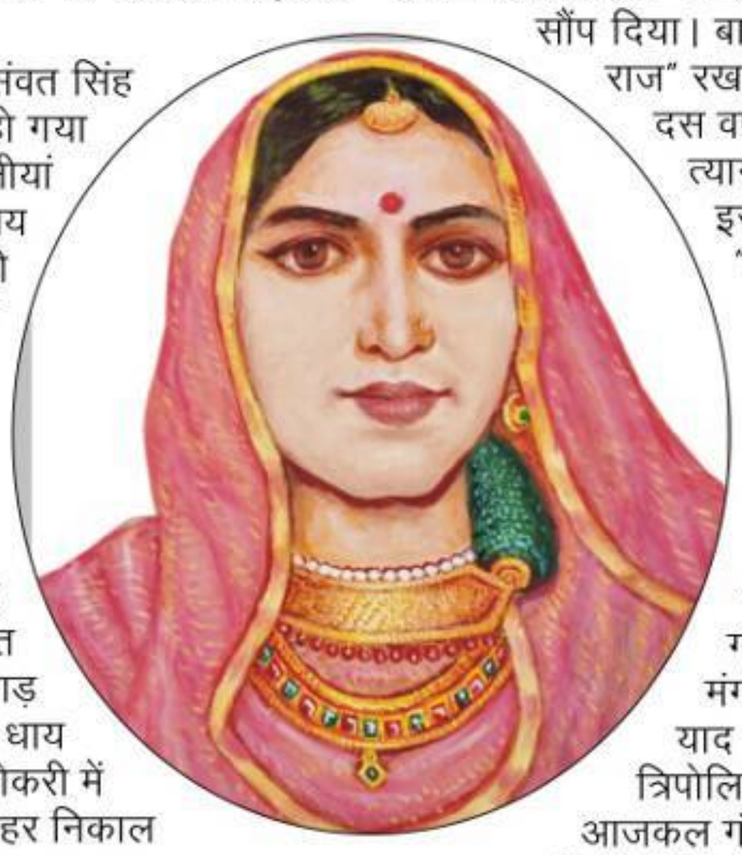

जब संवत् 1735 में जोधपुर नरेश महाराजा जसंवत सिंह का स्वर्गवास काबुल के मार्ग में जमरुद के थाने में हो गया और बादशाह औरंगजेब की आज्ञा से उनकी रानीयां आदि जब वहां से चलकर दिल्ली पहुंची तब वे मय राजकुमार अजीत सिंह के सहित दिल्ली में शाही पेहरे में ले ली गई। बादशाह औरंगजेब नें जोधपुर राज्य को हड़पने के लिए महाराजा की मृत्यु के बाद जन्मे हुए राजकुमारों को औरस नहीं माना और उन पर अपना कब्जा करना चाहा। एक राजकुमार का तो काबुल से दिल्ली पहुँचने पर स्वर्गवास हो गया। उधर रानीयों और राठौड़ सरदारों को बादशाह के रंग–ढंग को देखकर संदेह हो गया। इसलिए राठौड़ दुर्गादास आदि सरदारों नें राजकुमार अजीत सिंह को शाही पेहरे से जैसे–तैसे निकाल कर मारवाड़ की तरह भेजने का उपाय किया। राजकुमार की धाय गोरां ने सफाई कर्मचारी का स्वांग भराकर उसकी टोकरी में अजीत सिंह जी को सुलवाकर ज्यों–त्यों पेहरे से बाहर निकाल देना तय हुआ।

इस योजना के अनुसार संवत् 1736 सावंत वदी एकम् सोमवार को धाय ने अपने बालक पुत्र को राजकुमार की जगह सुला दिया और राजकुमार अजीत सिंह को एक टोकरी में लेटाकर और उसके ऊपर कूड़ा–कचरा बिखेर कर सफाई कर्मचारी के वेश में शाही पेहरे से बाहर पहुँचा दिया और बच्चे को मुकनदास खिंची को सुपुर्द कर दिया। मुकनदास सपेरे का स्वांग भरे हुए उस किशनगढ़ की हवेली से कुछ ही दूरी पर बैठा हुआ था। स्वामी भक्त मुकनदास खिंची राजकुमार को अपने पिटारे में रखकर पुंगी बजाता हुआ मारवाड़ की तरफ चल पड़ा। इस घटना के दूसरे ही रोज बादशाह को संदेह हुआ कि बालक राजकुमार हाथों से न निकल जाए इसलिए उसने कोतवाल को आज्ञा की मृत राजा कि रानीयों को राजकुमार सहित शाही महल में ले आओ और यदि कोई सामना करे तो उसे सजा दो। इस पर दुर्गादास की संरक्षता में राठौड़ वीर लड़ने को तैयार हो गये और युद्ध ठन गया। रानीयां भी युद्ध में जुझकर काम आई। युद्ध के पश्चात् जो नकली राजकुमार बादशाह के हाथ लगा उसे जोधपुर के डेरे से गिरफ्तार हुई दासियों को दिखाकर उसने अपनी तसल्ली कर ली और उसे अपनी पुत्री जेबुनिशा को परवरिश के लिए सौंप दिया। बादशाह ने इस नकली राजकुमार का नाम "मुहम्मदी राज" रखा और यह औरंगजेब की सेना में रहकर बीजापुर में दस वर्ष की आयु में प्लेग से मर गया। गोरां धाय का अपूर्व त्याग मारवाड़ के इतिहास में अमर पद पा गया और इसलिए इसका नाम जोधपुर राज्य के राष्ट्रीय गीत "धूसा" में गाया जाता है।

मुकन जैदेव गोरां जसधारी, धिन दुरगौ राखियों अजमाल।। धूंसो।।

गोरां धाय 48 वर्ष की आयु में सैनिक क्षत्रिय जाति की पुरातन शमशान भूमि खांडिया कोट, जगतसागर की बारी, हाई कोर्ट रोड़, जोधपुर के पास संवत् 1761 शाके 1626 की जेठ वदी 13 भानिवार को अपने पति मनोहर के साथ सती हो गई। सती स्थल पर सवंत् 1768 दुज भादो वद 4 मंगलवार को छतरी का निर्माण किया गया। इसकी याद में गोरां धाय बावड़ी का निर्माण 1712 ई. में त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर के दक्षिण–पूर्व में स्थित है। आजकल गौरिंधा बावड़ी के नाम से जानी जाती है।

सैनिक क्षत्रिय समाज (सैनी) को गोरां धाय टाक के व्यक्तित्व एवं कृतत्व को उजागर कर इस बलीदानी चरित्र को जन–जन तक पहुँचाना हमारा कर्तव्य है। यदि हम अपने बलिदानी नर–नारीयों के अवदान को विस्मृत कर देगें तो इतिहास हमें माफ नहीं करेगा।

प्रस्तुति : –
आनंद सिंह परिहार
लेखक, संपादक एवं प्रकाशक
(जसधारी गोरां धाय)

मानव हितैषी, 'पद्म भूषण' सम्मानित

कुमारी सुरेन्द्रा सैनी

सुरेन्द्रा सैनी का जन्म विभाजन पूर्व पंजाब प्रांत में हुआ था। 1925 में आप भारत आ गयी। आपने कन्या महाविद्यालय लाहौर में मैट्रिक करने के उपरान्त उच्च शिक्षा के लिए गवर्नमेण्ट कॉलेज होशियार पुर से राजनीति में एम.ए. और पत्रकारिता में डिप्लोमा प्राप्त किया। शिक्षा प्राप्ति के बाद आपने यमुना नदी के शरणार्थी शिविरों में महिलाओं तथा बच्चों को शिक्षित करने का दायित्व संभाला और शीघ्र ही राजधानी की सामाजिक कार्यकर्ता कर्मठ समासेविका के रूप मे उभर कर सामने आई। 1967 से 1977 तक आप मैट्रोपोलिटन काउन्सिल की सदस्य रही। 1962 से 1971 तक नई दिल्ली नगर निगम में वरिष्ठ उप प्रधान के पद को सुशोभित किया। जनकल्याण की प्रतिनिष्ठा के फलस्वरूप ही आपको दिल्ली सोशियल वैलफेयर एडवाइजरी बोर्ड की चैयरमेन चुना गया जिस पर आप आजीवन सुशोभित रही। 1955 में इन्टरनेशन फोरम ऑफ यूथ एक्सचैंज प्रोग्राम के अधीन आपके नेतृत्व में एक महिला डेलिकेशन ने अमेरिका का भ्रमण किया। इसके उपरान्त मंगोलिया में अफरो–एशियन वूमैनस कॉन्फ्रेंस में भारतीय डेलिगेशन के सदस्य के रूप में शामिल हुई। 1975 में आपने वाशिंगटन में वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑफ द डेफ की ओर से भारतीय डेलिगशेन सम्मिलित किया। भारत सरकार ने 1970 में आपको पद्म भूषण से सम्मानित किया। आप भारतीय विद्या भवन तथा बाल भवन आदि अनेक संस्थाओं से जुड़ी रही। बायोग फिल्स इंस्टीट्यूशन ऑफ यू.एस.ए. नामक अमेरिकी संस्था ने आपको 'वर्ल्ड एवार्ड' से सम्मानित किया। 1985 में आपको सोसायटी फॉरईक्वल अपोर्चुनिटी फॉर दी हैण्डिकैप्ड' की एक अन्य सुप्रसिद्ध संस्था ने एन.डी. दीवान मेमोरियल एवार्ड से पुरस्कृत किया। 1993 में संस्थापित अन्य पिछड़ी जातियों के निर्धारण हेतु न्यायमूर्ति श्री जे.सी. जैन की अध्यक्षता में गठित आयोग की आप सदस्या रही। इस आयोग ने दिल्ली ओ.बी.सी. सूची में माली व इनकी अनेक प्रजातियों सागरवंशी माली, कुर्मी, कोहरी, काछी, शाक्य, मौर्य कुशवाहा इत्यादि को सम्मलित करने की सिफारिश की जिसे सरकार ने ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया। आप समाज सम्मेलनों में हमेशा भाग लेने के साथ अपना मार्गदर्शन देती रहती हैं।

विल्क्षण प्रतिभा की धनी, राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर समाज को गौरवान्वित करने वाली विदुषी मातृशक्ति

डॉ. तारा लक्ष्मण गहलोत

- 17वर्ष की अल्प आयु में अध्यापिका
- समाज की प्रथम राजपत्रित अधिकारी
- 1961 में एम. ए. प्रथम गोल्ड मेडलिस्ट
- समाज से प्रथम असिस्टेण्ट प्रोफेसर
- बालश्रम न्यायलय की ऑनरी मजिस्ट्रेट
- राजस्थानी भाषा को मान्यता दिलाने के लिए आजीवन प्रयासरत
- राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा सम्मानित
- 30 से अधिक बार अनेकों पुरस्कारों से सम्मानित होने वाली साहित्यकार

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो वक्त और परिस्थितियों के गुलाम होते हैं और कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपनी परिस्थितियों को खुद बदल देते हैं स डॉ (श्रीमती) तारा लक्ष्मण गहलोत ऐसी ही एक विलक्षण, प्रतिभावान व दृढ़ प्रतिज्ञ महिला थी जिन्होंने अपने रास्ते खुद बनाए।

डा. तारा लक्ष्मण गहलोत का जन्म 18 जून1933 को हिम्मतनगर, गुजरात में अपने नाना के घर हुआ था। नाना जोधपुर के थे और हिम्मतनगर राजघराने में अच्छे पद पर थे , अतः वहीं रह रहे थे। मां सुंदर बाई और पिता श्री पन्नालाल जी सांखला की आप द्वितीय कन्यारत्न थी। पिता सैनिक क्षत्रिय माली समाज के पहले स्नातक थे और कट्टर आर्यसमाजी विचारधारा के थे। हालांकि परिवार में शिक्षा का माहौल था परंतु उस समय का सामाजिक माहौल ऐसा नहीं था कि महिला शिक्षा को बहुत ज्यादा प्रोत्साहन दिया जाता।

बचपन में विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए वे ऐसे समय से रूबरू हुई थी जहां महिलाओं को लेकर अनेक रूढ़ीयां, कुरीतियां, पर्दा प्रथा,बाल विवाह, तथा लड़का लड़की में भेद चरम पर थे। तारा जी ने अपनी प्राथमिक शिक्षा श्री वैदिक कन्या पाठशाला, बागर, जोधपुर से की जो कि उस समय पांचवी कक्षा तक की थी। छठी कक्षा में अध्ययन हेतु राज महल गर्ल्स हाई स्कूल ,जोधपुर ,में प्रवेश लिया। सातवीं कक्षा का उस समय 1947 तक मारवाड़ मीडल बोर्ड होता था। उनके समय में वह आखिरी मिडिल बोर्ड था व उन्होंने बोर्ड में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया। सन 1950 में राजमहल स्कूल से उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। उनकी बड़ी बहन धर्म वती गहलोत भी उनके प्रति बहुत प्रेम रखती थी और उनको प्रोत्साहन देती रहती थी। परंतु परिवार में जब बड़ी बहन के साथ– साथ उनके विवाह की भी बात चली तो तारा जी ने इसका डटकर विरोध किया और उन्होंने कहा कि वह अभी आगे बहुत शिक्षा लेनी चाहती हैं और अपने जीवन में कुछ ऐसा मुकाम पाना चाहती हैं, जो समाज में सभी के लिए, खासकर अन्य महिलाओं के लिए भी सहायक और उदाहरण हो। ऐसे समय में उन्होंने विवाह से इनकार किया और पारिवारिक विरोध के बावजूद अपनी पढ़ाई जारी रखी।

उन्होंने अपने शिक्षा का खर्च खुद उठाने की ठानी और स्वावलंबन की अनोखी मिसाल पेश करते हुए 17 वर्ष की अल्पायु में ही श्री वैदिक कन्या पाठशाला में अध्यापिका बन गई। लेकिन यह उनकी स्वावलंबन, आत्म विश्वास भरी गौरवशाली यात्रा की पहली सीढ़ी मात्र थी।

यहां अध्यापन कार्य करते हुए स्वयं पाठी विद्यार्थी के रूप में उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और राजनीति शास्त्र में एम. ए. किया और हिंदी की कई डिग्रियां ,साहित्य रतन, साहित्य वाचस्पति आदि प्राप्त की। तारा जी के साथ "प्रथम" शब्द बहुत ज्यादा जुड़ा है। सर्वप्रथम उन्हें गौरव मिला माली समाज की राजस्थान सरकार (समाज कल्याण विभाग) जयपुर में प्रथम राजपत्रित अधिकारी बनने का। यह नौकरी समाज कल्याण विभाग की सोशल डिफेंस स्कीम जिसमें भूली भटकी, आपात ग्रस्त महिलाओं को, बालकों के निवास, शिक्षा, प्रशिक्षण व पुनर्वास होता था। इसी सरकारी नौकरी में रहते हुए मद्रास स्कूल आफ सोशल वर्क मद्रास में 1 वर्षीय डिप्लोमा का मौका मिला और महिला पुनर्वास केंद्रों, नारी निकेतन, बाल सुधार गृह, विजिलेंस होम, सर्टिफाइड स्कूल, ऑब्जर्वेशन होम रिमांड होम, जेल, इत्यादि के अवलोकन व कार्यशैली समझने का बहुत बड़ा अवसर मिला। इसी नौकरी ने उनके भविष्य की समाज सेवा के कार्य में अग्रणी रहने वह सभी तरह की सरकारी, गैर सरकारी योजनाओं को जन–जन तक पहुंचाने की नींव रखी। नौकरी करने के साथ–साथ भी उन्होंने अपने आगे पढ़ने कि दृढ़ इच्छा को जारी रखा। 1961 में राजस्थान यूनिवर्सिटी जयपुर से एम. ए. सोशियोलॉजी में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर– कर विश्वविद्यालय का प्रथम गोल्ड मेडल प्राप्त किया।

विद्या व्यसनी होने के कारण तारा जी का विश्वविद्यालय व पढ़ाई की तरफ झुकाव बढ़ता चला गया। 1963 में ही जोधपुर विश्वविद्यालय समाजशास्त्र की प्रोफेसर के रूप में नियुक्त होकर वह समाज की पहली महिला विश्वविद्यालय असिस्टेंट प्रोफेसर भी बनी। तब राजस्थान में समाजशास्त्र में पीएचडी की कोई सुविधा नहीं थी। उस समय आपने हिम्मत कर –कर, आगरा जाकर, पीएचडी समाजशास्त्र किया और राजस्थान में समाजशास्त्र की पहली महिला पीएचडी धारीका बनी। उस समय गांधीवादी विचारों से प्रेरित ताराजी सफेद खादी की साड़ी पहनती थी और लैंब्रेटा स्कूटर चलाने वाली पहली महिला के रूप में उनकी पूरे शहर में एक अलग ही छवि थी।

7 अक्टूबर 1971 को आपका विवाह समाज के लब्ध प्रतिष्ठित परिवार में शिक्षा प्रेमी व व्यवसायी सालगराम जी गहलोत के पुत्र रतन श्री लक्ष्मण सिंह जी गहलोत से हुआ। श्री लक्ष्मण सिंह जी स्वयं विज्ञान के छात्र रहे थे व उनका खुद का ट्रांसपोर्ट और टायर का व्यवसाय था। उद्यमी होने के साथ–साथ सामाजिक गतिविधियों और शिक्षा संबंधी कार्यकलापों को बहुत बढ़ावा देते थे। समाज की कितनी ही बालिकाओं की शिक्षा जारी रखने के लिए वे उनको किताबें ,स्कूल फीस इत्यादि में सहायता करते रहते थे। अतः तारा जी को एक प्रगतिशील ससुराल मिला। उस समय जब महिलाएं वाहन कम ही चलाती थी, तारा जी अपनी फिएट कार खुद चलाते हुए अलग ही पहचानी जाती थी । घर

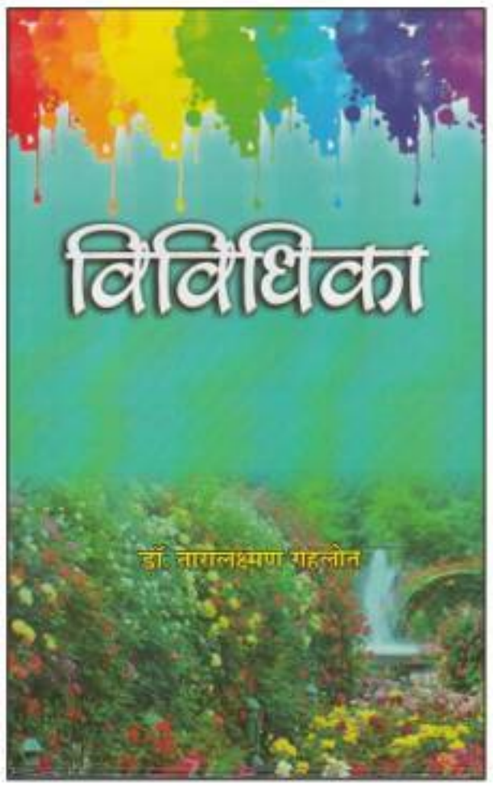

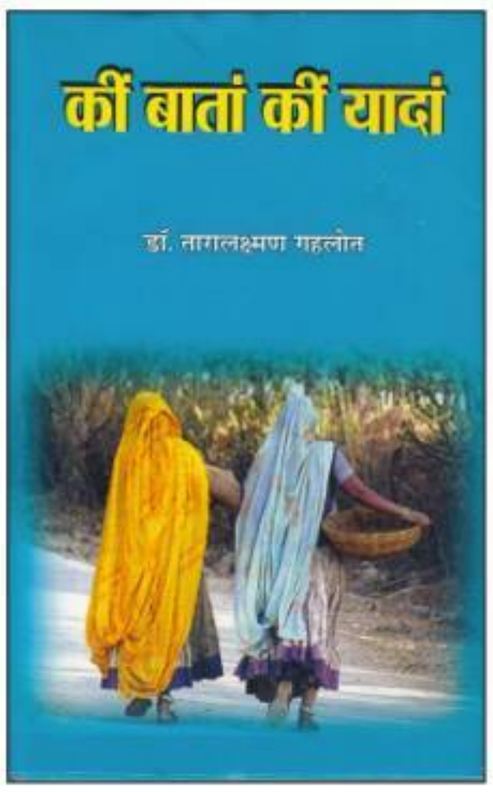

गृहस्थी के साथ–साथ तारा जी ने सोशल वर्क का अपना काम नहीं छोड़ा और विभिन्न संस्थाओं से जुड़ी रहीं। समय–समय पर सरकार द्वारा भी विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों के बोर्ड इत्यादि में उनकी ऑनरेरी (निशुल्क) सेवाएं ली गई।

बाल न्यायालय कि राज्य सरकार से नामित ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, पारिवारिक न्यायालय में ऑनरेरी काउंसलर, राजस्थान स्टेट लीगल एड अवेयरनेस कमेटी की सदस्य,जिला प्रशासन द्वारा महिला विकास अभिकरण की गवर्निंग काउंसलिंग व कार्यकारिणी की सदस्य, आकाशवाणी प्रोग्राम सलाहकार समिति की भी दो बार (तीन 3 वर्ष के कार्यकाल के लिए) सदस्य रहे। इसके साथ ही वे साक्षरता कार्यक्रम और विकलांगों (दिव्यांगों) मूक बधिर, अंध इत्यादि के विभिन्न कार्यक्रमों गतिविधियों में भाग लेती रहीं। 2002 में नये जुवेनाइल जस्टिस एक्ट के अंतर्गत राज्य सरकार द्वारा बनाई गई बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष रहीं।

इस प्रकार तारा जी ने जीवन के तीन मुख्य क्षेत्र शिक्षा, साहित्य और सामाजिक कार्य में अपना अप्रतिम योगदान दिया। हालांकि साहित्य का कार्य उनका निरंतर कुछ कुछ चलता रहता था, और काव्य सम्मेलन, लेखक, सम्मेलन इत्यादि में वे भाग लेती रहती थी। परंतु 1990 में विश्वविद्यालय से 30 वर्ष की गौरवशाली सेवा से सेवानिवृत्त होने के पश्चात उन्होंने अपनी साहित्यिक गतिविधियों को बहुत आगे बढ़ाया।

सन 1993 में सदा प्रोत्साहन देने वाले पतिदेव श्री लक्ष्मण सिंह जी गहलोत का भी एक भयंकर एक्सीडेंट हुआ जिसमें उन्हें बहुत दिनों तक सेवा सुश्रुषा की जरूरत महसूस हुई। तब तारा जी ने दिन–रात एक कर कर उनकी सेवा की और उनके प्रोत्साहन से गद्य और पद्य की अनेक साहित्यिक लेख व पुस्तकें प्रकाशित कराई। तत्पश्चात 2009 में पति की मृत्यु के पश्चात और खुद भी स्वयं 2012 के बाद कुछ अस्वस्थ रहने के बाद भी उन्होंने लेखन कार्य जारी रखा। इस प्रकार उन्होंने लगभग 14 से अधिक पुस्तकें लिखीं। यह बताना उल्लेखनीय है कि राजस्थानी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए भी तारा जी हमेशा तत्पर रहती थी और उन्होंने अपना अधिकतर साहित्य मारवाड़ी (राजस्थानी) भाषा में लिखा। उनकी हृदय से इच्छा थी कि राजस्थानी भाषा को भारत सरकार से मान्यता मिले, आने वाली पीढ़ियां हमारी मायड़ भाषा से दूर ना हो। इसके लिए तो उन्होंने अपने स्तर पर कई बार प्रयास भी किए। इन विभिन्न पुस्तकों पर राज्य, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उनको पुरस्कार मिलते रहे, जिनकी की एक लंबी फेहरिस्त है।

जहां आपके सामाजिक कार्यों के लिए आपको जिला व राज्य प्रशासन द्वारा समय–समय पर सम्मानित किया गया। वही 8 मार्च 1997 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर दिल्ली के विज्ञान भवन में प्रधानमंत्री देव गोड़ा जी के हाथों सामाजिक कार्यों में एक्सीलेंसी अवार्ड व राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष डॉक्टर मोहिनी गिरी द्वारा "सशक्त महिला" का अवार्ड प्रदान किया गया। साहित्य के क्षेत्र में राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर की ओर से महेंद्र जाजोदिया पुरस्कार, राजस्थानी रत्नाकर दिल्ली 2001, मानद डिलीट उपाधि, राजस्थानी विकास मंच संस्थान जालौर की ओर से ,जोधपुर के 64 स्थापना दिवस के अवसर पर मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट की ओर से राजस्थानी भाषा में सर्वश्रेष्ठ लेखन के लिए,लाखोटिया पुरस्कार, दिल्ली में सितंबर 2010 में माली समाज अहमदाबाद, जोधपुर नागौर इत्यादि द्वारा सम्मान। राजस्थानी भाषा साहित्य के संदर्भ में अनुपम कार्य करने वाली चूरू की प्रयास संस्था द्वारा भी उनको सावित्री चौधरी खून सिंह साहित्य पुरस्कार 2016 उनकी संस्मरण आत्मक प्रति यादां ही यादां के लिए दिया गया। सैनिक क्षत्रिय माली सांस्कृतिक संवर्धन एवं इतिहास शोध संस्थान रजिस्टर जोधपुर द्वारा मां गोरा धाय सम्मान मई 2017। इसके अलावा भी साहित्यिक सारस्वत सम्मान, साहित्य श्री सम्मान, साहित्य विद् सम्मान, काव्य विभूति सम्मान, साहित्य सेवा सम्मान आदि मुख्य हैं।

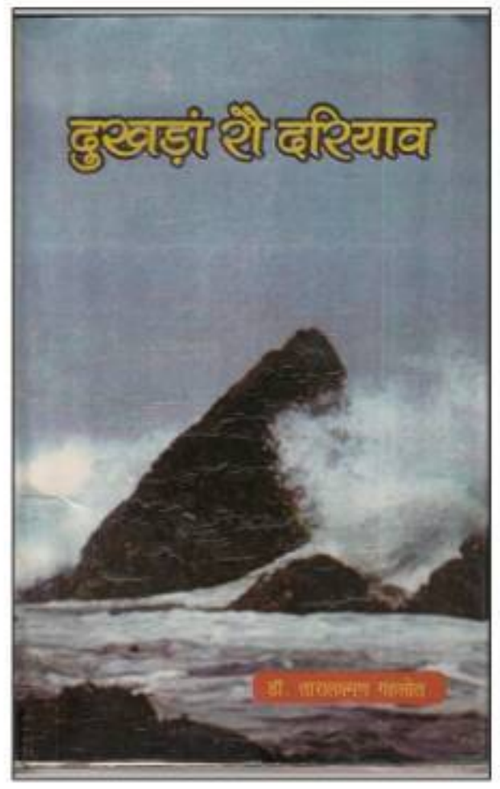

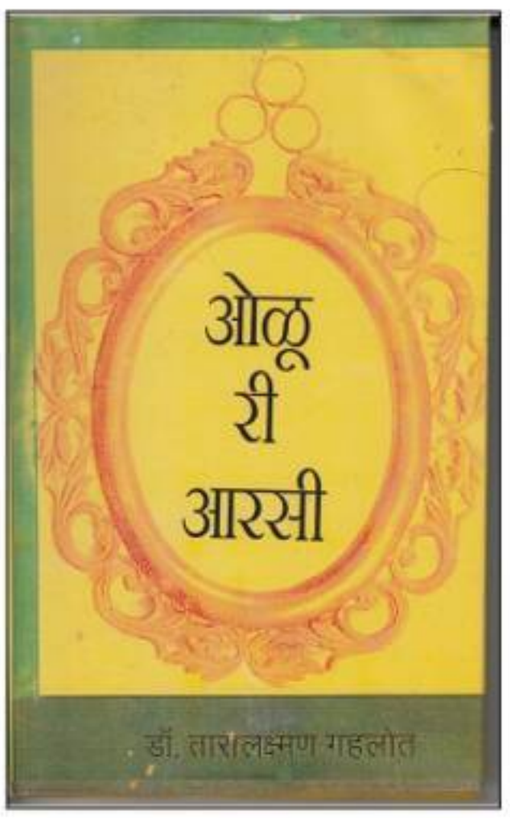

आप विभिन्न संस्थाओं की एक्सपर्ट टीम व परामर्शदाता समितियों में रहे, माली समाज की सावित्रीबाई फुले महिला महाविद्यालय, जोधपुर की भी आप परामर्शदाता समिति में थी। आपको 30 से अधिक सम्मान, उपाधियां, अलंकरण आदि से नवाजा गया। उनकी संस्मरण पुस्तक "ओलु री आरसी" ,श्यादा रा चितराम, दुखड़ां रो दरियाव, पीड़ा री परतां, की बातां की यादां और यादां ई यादांश्य के अलावा उनकी कविता पुस्तक कैक्टस मांय तुलसी, हलद अर सूंठ व अनुभूति के वातायन विद्धवजनों में बहुत चर्चित व प्रशंसित रही है । आप कई पुस्तकों व पत्रिकाओं की अनुवादकर्ता, संपादक व सह संपादक रहीं। खुद उनकी राजस्थानी भाषा व अन्य पुस्तकों को कई विद्यार्थियों ने शोध का विषय बना कर अपनी पीएचडी का टॉपिक रखा। तारा जी ने अपने बच्चों की शिक्षा पर भी बहुत ध्यान दिया। पुत्री डॉ निधि गहलोत एलोपैथिक चिकित्सक है और तारा जी व लक्ष्मण जी की अनुपम गाइडेंस में साहित्य (लेखन, काव्य, संभाषण) पेंटिंग और अन्य गतिविधियों में अनेक पुरस्कार प्राप्त किए। पुत्र इंजीनियर(डॉ) आलोक सिंह गहलोत, एमबीएम इंजीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर, में कंप्यूटर इंजीनियर के एसोसिएट प्रोफेसर हैं और रोबोटिक्स इत्यादि कार्य में अपने स्वयं के प्रोजेक्ट और शोध कर रहे हैं। इस प्रकार तारा जी ने एक समग्र जीवन जिया, संघर्षों के बाद भी आगे बढ़ती रहीं।

उनके बचपन के जमाने में जब कोई लड़की पढ़ती थी तो रूढ़िवादी महिलाएं ताने देती थीं, पढ़ लिक और कई किला री कुचियां लाओ ? (अधिक पढ़ने लिखने से तुम ऐसा क्या महत्वपूर्ण कर लोगे)। तो तारा जी की संपूर्ण जीवन यात्रा देखकर ऐसा लगता है कि सच में ही पढ़ लिखकर वह ना केवल बहुत महत्वपूर्ण व उच्च पदों पर गई वरन् समाज की आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक प्रखर ध्रुव तारे की भांति, समाज की महिलाओं और सभी वर्गों को आगे बढ़ने का दिशा ज्ञान कराती रहेंगी। 26 नवंबर 2018 को माली समाज के इस अमूल्य रतन ने अपनी यह नश्वर देह त्याग दी पर उनकी जीवन यात्रा व कार्य सदा ही सर्व समाज को प्रेरणा देते रहेंगे ।

विषम परिस्थितियों में पढ़ कर दृढ़ इच्छा शक्ति से आई.ए.एस. बनी, युवाओं के लिए प्रेरक व्यक्तित्व

भाग्यश्री बानायत (माली)

विश्व में कोरोना के कारण अभूतपूर्व हालात बने हुए है। इसके पहले भी विविध देशों में विविध प्रकार की संक्रमित बीमारियाँ, नैसर्गिक आपदा, मानव निर्मित आपदा आयी है, लेकिन उसका असर समूचे विश्व में नहीं था। अभी हम सभी ऐसी स्थिति से गुजर रहे है, जिसका सामना किस तरह से करना है, यह कोई भी नहीं जानता। इसलिए समूचे विश्व के सामने यह एक चुनौती है।

सरकार और विविध यंत्रणाओं की ओर से चेतावनी के अलग–अलग उपाय किए जा रहे है। भारत सरकार ने 24 मार्च 2020 से लॉकडाऊन का निर्णय लिया है, जिसका कड़े रूप से क्रियान्वयन भी हो रहा है। इन हालातों में कुछ अधिकारी बहुत ही साहस एवं नई कल्पनाओ से इस निर्णय का क्रियान्वयन कर रहे है। अपने कार्य से आम जनों को राहत पहुंचा रहे है।

भारतीय संस्कृति में रेशम वस्त्र को बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए इस वस्त्र की मांग भी अधिक रहती है। किसानों के लिए रेशम की खेती किफायती साबित हो रही है। दुरदर्शन में रहने के दौरान "आमची माती,आमची माणसं " (मराठी) इस कार्यक्रम में हमने रेशम की खेती पर एक डाकुमेंट्री बनाई थी।

रेशम की खेती का, रेशम उद्योग का विकास हो, इसके लिए महाराष्ट्र सरकार ने रेशम संचालनालय की स्थापना की । इस संचालनालय का मुख्यालय नागपुर में है। वर्तमान में रेशम संचालनालय के संचालक पद पर भाग्यश्री बानायत–धिवरे कार्यरत है।

लॉकडाऊन शुरू होने के कारण महाराष्ट्र के रेशम किसान संकट में आए है। सरकार ने रेशम को पीक करके अभी तक घोषित नहीं किया है। इसे अभी भी जीवनावश्यक वस्तूओं की सूची में स्थान नहीं मिला है। इसलिए लॉक डाऊन के चलते अब तैयार रेशम कारखानों में कैसा पहुंचाया जाए, यह एक बड़ी समस्या किसानो के सामने थी। अगर समय पर कारखानों तक यह रेशम नहीं पहुंचाया गया, तो किसानों को बहुत नुकसान उठाना पड़ता।

रेशम संचालक भाग्यश्री बानायत–धिवरे ने परिस्थिति की गंभीरता को पहचनाकर सरकार से संपर्क साधा और रेशम किसानों को लाइसेन्स उपलब्ध कराए। जिससे किसानों का सभी रेशम संबंधित कारखानों में पहुँच सका। इस बात से किसानों को बहुत राहत मिली है और वे आर्थिक नुकसान से भी बच पाये है। आगे जब भी लॉक डाऊन खुलेगा तब कारखानों को आवश्यक कच्चा माल उनके पास ही उपलब्ध होने से वे तुरंत ही काम शुरू कर सकेंगे ।

भाग्यश्री घर में कोई भी पार्श्वभूमी नहीं होते हुए, ग्रामीण क्षेत्र की रहते हुए भी वे भारतीय प्रशासकीय अधिकारी बन सकी। उनकी प्रारंभिक शिक्षा अमरावती जिले के हिवरखेड स्थित जिला परिषद स्कूल में हुई। आगे मोर्शी स्थित महाविद्यालय से बीएससी की शिक्षा पूरी की। माँ तुलसाबाई, पिता भीमराव दोनों भी शिक्षक होने से उनके घर में शैक्षणिक वातावरण था। इसलिए बीएससी के बाद भाग्यश्री ने भी बी.एड किया, एक साल एम.एस.सी भी किया। लेकिन उस बीच उनके पिता का दिल का दौरा पड़ने से निधन हुआ। जिससे उनका परिवार बिखर गया।

ऐसे हालातों में रिशतेदारों ने साथ देना जरूरी था। लेकिन जायदाद को लेकर उनकी पिता की मृत्यु के बीस दिन पूरे भी नहीं हुई थे की, भाग्यश्री को माँ के साथ कोर्ट में हाजिर होना पडा। इस घटना ने उन्हें संघर्ष का एहसास कराया। अब उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम होना बहुत जरूरी था।

अमरावती महानगरपालिका में उन्हें शिक्षा विभाग में विषय विशेषज्ञ के रूप में काम मिला। माँ को संभालते हुए, घर का काम करके वे गाँव से अमरावती आना–जाना करती थी। इसी बीच वे प्रतियोगी परीक्षाएं भी देने लगी।

अमरावती में प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी की कोई संस्था तथा निजी कोचिंग क्लास नहीं थे। इसलिए उन्होंने स्व–अध्ययन पद्धति पर जोर दिया। पिता का नहीं होना, माँ की बीमारी, खुद की भी कुछ स्वास्थ्य समस्याएँ इन सभी पर मात कर वे मेहनत कर रही थी। उनके इन प्रयासों को सफलता मिलने लगी और वर्ष 2005 में प्रकल्प अधिकारी, 2006 में तहसीलदार, 2007 में सहायक आयुक्त, विक्रीकर विभाग ऐसे महाराष्ट्र लोकसेवा आयोग की प्रतियोगी परीक्षाओं में उनका चयन होता गया। लेकिन वे इसी पर संतुष्ट नहीं थी, उन्हें और आगे बढ़ना था।

फिर वर्ष 2007 में नायब तहसीलदार व प्रकल्प अधिकारी, शिक्षण विभाग इन दोनों में क्लास–2 के पद पर उनका चयन हुआ। किस पद पर पदस्थ होना चाहिए, इस पर उन्होंने अपने माँ से पूछा तो माँ ने जबाव दिया–तुम्हें जो अच्छा लगे, तुम वहीं करों। हालांकि भाग्यश्री को लग रहा था की, माँ शिक्षा में कार्यरत थी, इसलिए वे उन्हें उसी का चयन करने की सलाह देगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। भाग्यश्री को आई ए एस ही होना था। इसलिए उन्होंने दोनों पद छोड़ दिये। एक ओर अनुपस्थिति से उनकी अमरावती महानगरपालिका की नौकरी भी छूट गई और दूसरी ओर उन्होंने दोनों पद अस्वीकार कर दिये थे ।

उनके हाथ में अच्छे पद की नौकरी थी, लेकिन अब वे इसे खो चुकी थी। वह डटकर केंद्रीय लोकसेवा आयोग की परीक्षा देती रही। वर्ष 2010 में कुछेक की अंको से उनका चयन हो न पाया। लेकिन इस असफलता से खुद को संभालते हुए, वर्ष 2011 में उन्होंने कड़ी मेहनत की और वर्ष 2012 में उनका भारतीय प्रशासकीय अधिकारी के रूप में चयन हुआ। परीक्षा उत्तीर्ण होना, उनके सामने चुनौती थी। इसलिए उन्होंने इस परीक्षा के बारे में, उसकी पढ़ाई को लेकर किसी को भी नहीं बताया था। मुख्य परीक्षा के लिए भाग्यश्री ने मराठी साहित्य और इतिहास इन विषयों का चयन किया था।

इस पद के लिए उनका साक्षात्कार बहुत बड़ी चुनौती थी। जिसे उन्होंने बहुत ही अच्छे से पूरा किया। साक्षात्कार के दौरान सभी सवालों के जवाब दिए। अमरावती जिले की होने से उन्हें एक सवाल पूछा गया, जिले की मुख्य समस्या क्या है ? इसके जवाब में उन्होंने कहा की, किसानों की आत्महत्या ही सबसे बड़ी समस्या है। फिर उन्हें अगला सवाल पूछा की, अगर आप वहाँ जिलाधिकारी हुई, तो इस समस्या का समाधान कैसे करेगी? तब भाग्यश्री जी ने, खेत तालाबों के निर्माण से पानी उपलब्ध कराने पर इस समस्या का समाधान कर सकते है। उस समय उन्हें 'शेत तळी' इस मराठी शब्द का हिंदी, इंग्रजी में योग्य शब्द सुझ नहीं रहा था। इसलिए उन्होंने दुभाषी की मांग की और उनकी मांग पूरी भी की गई। फिर भी वे विस्तार से परीक्षकों को नहीं समझा पा रही थी। मामला बिगडता हुआ देखकर उन्होंने सीधा कागज लिया और खड़े रहकर खेत तालाब का चित्र निकालकर अपनी बात को, अपनी संकल्पना को उनके समक्ष स्पष्ट किया।

चुनाव मंडल की प्रमुख वरिष्ठ महिला अधिकारी थी। उनकी बारे में सब कहते थे की, वे बहुत ही कम अंक देती है। इसलिए चयन होगा या नहीं, इसी दुविधा में भाग्यश्री थी। खुशी की बात ये की, उनका चयन हुआ। उस साल चयनित होने वालों में वे महाराष्ट्र की अकेली महिला उम्मीदवार थी।

आपने प्रशासकीय अधिकारी होना ही क्यों चुना ? यह पूछने के बाद भाग्यश्री ने उनके जिंदगी का किस्सा बताया। जिसमें वे कहती है– एक बार एक रुबाबदार, वरिष्ठ पुलिस अधिकारी पोलीस वर्दी में उनके घर आए, उन्होंने भाग्यश्री से उनके पिता के बारे में पूछा। उनके पिता को देखते ही उस पुलिस अधिकारी ने उन्हें नमन किया,उनके पाव छुये। उस समय वो पुलिस अधिकारी भावुक हो गए थे। उनके पिताजी ने अपने छात्र को पहचान लिया। गाँव का वो एक बिगडा हुआ लड़का था। जिंदगी में वो लड़का कुछ कर सकेगा, इस बात से उसके पिता सब आशा छोड़ चुके थे। लेकिन उनके पिताजी ने उस लड़के को ऐसा सबक सिखाया,ऐसी शिक्षा दी, की, आगे उसने कभी भी स्कूल को बंक नहीं किया। आगे वहीं लड़का पुलिस अधिकारी बन गया। जब वह अपने गुरु से मिलने आया था, तब वह सीआयडी में बड़े पद पर कार्यरत था।

इस घटना से भाग्यश्री को लगा की, उन्हे भी पुलिस अधिकारी होना चाहिए। भाग्यश्री ने अपनी इच्छा को अपने पिता के सामने रखा। तब पिताजी ने कहा की, बडी सोच रखो। उनकी इसी बात से प्रशासकीय अधिकारी बनने की प्रेरणा मिली।

विदर्भ के ग्रामीण क्षेत्र की भारतीय प्रशासकीय अधिकारी के रूप में वे पहली महिला अधिकारी है। भाग्यश्री का चयन नागालैंड कैडर लिए हुआ। मसुरी से प्रशिक्षण पूरा होने के बाद नागालैंड सरकार की सेवा में वह पदस्थ हुई। वहाँ पर पदस्थ होने के लिए बहुत लोगों ने उन्हें फिर से इस निर्णय को लेकर विचार करने के लिए कहा। लेकिन खुद पर भरोसा, आत्मविश्वास और पति भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी संजय धिवरे के प्रोत्साहन से भाग्यश्री ने वहाँ पर जाना तय किया। इसी बीच उनकी माँ की तबीयत बहुत खराब हो गई थी। माँ का ध्यान कैसे रखा जाएगा, इस बात से वे चिंतित थी, लेकिन उनके पति ने बहुत ही सहजता से माँ की जिम्मेदारी स्वीकार की।

नागालैंड में भाग्यश्री ने उपविभागीय अधिकारी–फेक, अतिरिक्त जिला आयुक्त–कोहिमा, उपसचिव– गृह विभाग, सचिवालय इन पदों पर बखूबी काम किया। भाग्यश्री ने बताया की, एक दौरे में उनके सन्मानार्थ भोजन दिया गया था। भोजन से पहले सभी को एक पेय दिया गया। भाग्यश्री जी उसे पीने ही वाली थी, की उनका ड्राईवर जोर–जोर से कहने लगा, मैडमजी उसे ना पिये.... फिर उन्होंने उसे नहीं पिया, पता चला की, वो शोरा (शराब) है। भोजन से पहले सभी ने शोरा यानि की शराब लेना नागा संस्कृति का एक भाग था।

ड्राईवर को पता था, की उनकी मैडम पुरी शाकाहारी है। उन्होंने उनके अफसर को पूछा, क्या खाना चाहिए ? उसने बडी सहजतासे कहा चावल खाइए ,क्योंकि उसमें सिर्फ मछली होती है। अंत में स्वयं के सन्मानार्थ आयोजित किए गए भोजन में उन्हें भूखा रहना पड़ा ।

नागालैंड में काम करना एक प्रकार से बहुत बड़ी चुनौती है। जिसका भाग्यश्री ने बहुत ही साहस एवं धैर्य से उसका सामना किया।

नागालैंड के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम पी. बी. आचार्य सर के आमंत्रण पर मैं नागालॅंड गया था। नागालैंड बहुत ही दूर–दराज क्षेत्र है। वहाँ पर कभी भी पहाड़ गिरती है और यातायात बंद होती है। चुनौतीपूर्ण भौगोलिक, राजकिय, सामाजिक स्थिति को पहचानकर एक महाराष्ट्र की महिला अधिकारी का नागालैंड कॅडर का स्वीकार करना यह बहुत ही धैर्य एवं साहस की बात है। ये बात सिर्फ भाग्यश्री के लिए ही नहीं, बल्कि देश की सभी महिलाओ लिए गर्व की बात है।

महाराष्ट्र सरकार मे प्रतिनियुक्ति से वे वर्ष 2018 में रेशम संचालक हुई। इस पद पर वह बहुत ही सराहनीय काम कर रही है। रेशम की खेती के लिए अपारंपरिक राज्य में किए गए कार्य पर उन्हें तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, वस्त्रोद्योग मंत्री स्मृति इराणी के हाथों सम्मानित किया गया है ।

पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभाताई पाटिल के हाथों उन्हें 'विदर्भ कन्या' के रूप में वर्ष 2016 को मुंबई के एक कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। इसके अलावा भाग्यश्री कई पुरस्कारों से सम्मानित है। उन्हें लिखने में भी रुचि है। वे महाराष्ट्र टाइम्स (मराठी समाचार–पत्र) के लिए ''सहज सुचलं'' यह स्तंभ लिखती है। इसके अलावा उन्होंने आकाशवाणी के दर्पण, युवावाणी के लिए लेखन किया है। उनके लेखन पर उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कार से भी नवाजा गया है। साहित्य के प्रति रुचि होने से विविध साहित्य सम्मेलन में भी उनकी सहभागिता रहती है। भाग्यश्री ''संचयी विचार धारा'' की कार्यकारी संपादक भी है।

ग्रामीण क्षेत्र से होने के कारण उन्हें इस बात का एहसास है की, यहाँ पर कितनी सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे स्वयंके अनुभवों से ग्रामीण क्षेत्र में स्पर्धा–परीक्षाओं को लेकर जनजागरण एवं निः शुल्क मार्गदर्शन करती है। साथ ही महिला सक्षमीकरण के लिए भी वे हमेशा प्रयासरत है। बेटा–बेटी में भेदभाव न करें, बल्कि दोनों को भी समान समझना चाहिए, यहीं संदेश परिजनों को दे रही है। अपने पिता ने कभी भी बेटी होने पर भेदभाव नहीं किया, इस बात पर उन्हें बहुत गर्व है।

भाग्यश्री के बारे में लिखने के लिए मुझे जिनकी मदद हुई, वे मिशन आईएएस के प्रमुख प्रा. डॉ. नरेशचंद्र काठोले सर, भाग्यश्री के बारे में कहते है की, भाग्यश्री में किसी भी प्रकार की बड़प्पन की भावना नहीं है। बहुत ही सरल, सीधे–साधे ढंग से वे रहती है, उनके विचारों में–उनके आचरण में सहजता, सरलता, बहुत ही प्रभावी वक्तृत्व शैली है, जिससे वे दूसरे ही क्षण में छात्रो के मन में अपना स्थान बना लेती है।

उनके पति संजय धिवरे, भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी है। उनकी बेटी सनोजा स्कूल में पढ़ रही है। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों से संदेश के रूप में वह कहती है की युवाओं ने बड़ी संख्या में प्रतियोगी परीक्षाओं की ओर बढ़ना चाहिए। असफलता मिलने पर निराश न हो, बल्कि ओर भी कड़ी मेहनत से प्रयास करें और सक्षम रूप से सेवा करने की मानसिक तैयारी भी रखें। चूंकि आई ए एस की सेवा में 24 घंटे रहना पड़ता है।

सच कहें तो, भाग्यश्री का जीवन एक किताब का विषय है। एक लेख में उनका जीवन वर्णन, उनके अनुभव को बताना संभव नहीं है। इसलिए उनके बारे में जो भी अधिक जानना चाहते है, या जानने की इच्छा रखते है वे यु ट्यूब पर उनके प्रेरणादायी कार्यक्रम, बातचीत जरूर देख सकते है।

'पहले करें फिर कहें' विचार को साथर्क करने वाली भाग्यश्री को भविष्य की असीम शुभकामनाएँ....

वर्ष 1936 में विदेश से शिक्षा प्राप्त कर राजस्थान की प्रथम महिला चिकित्सक बनीं

डॉ. पार्वती गहलोत

समाज सुधार और शिक्षा प्रसार के सन्दर्भ में स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824–1883) और आर्यसमाज का विशेष योगदान रहा है। वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए महाराजा जसवन्तसिंह द्वितीय (1873–1895) के निमन्त्रण पर स्वामीजी का जोधपुर में 31 मई, 1883 को आगमन हुआ। मंडोर निवासी श्री किशोरसिंह गहलोत भी उन भाग्यशाली व्यक्तियों में से एक थे जो स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुनने के लिए नियमित रूप से जाते थे। किशोरजी स्वामी जी की शिक्षाओं से अत्यन्त प्रभावित हुए। परिणामस्वरूप उनके तीनों पुत्रों (सर्वश्री रामप्रताप, सालगराम और जगदीशसिंह गहलोत) पर भी दयानन्द और आर्यसमाज की शिक्षाओं का स्थायी प्रभाव पड़ा।

श्री राम प्रताप जी (प्रताप जी) गहलोत ने अपनी पुत्रियों पार्वती तथा रामकुंवर तथा पुत्र गोविन्दसिंह के लिए शिक्षा की उत्तम व्यवस्था की। यह सुखद आश्चर्य की बात है कि कालान्तर में श्री राम प्रताप जी की दोनों पुत्रियाँ तथा पुत्र डाक्टर बने। उनके पौत्र–प्रपौत्र आदि भी डॉक्टर बने है। सुश्री पार्वती गहलोत का जन्म 21 जनवरी, 1903 को हुआ। उनके पिताश्री प्रताप जी शिक्षा प्रेमी तथा प्रगतिशील सामाजिक विचारों के प्रबुद्ध व्यक्ति थे। उस समय संयुक्त परिवार होते थे जहां कोई भी विषम परिस्थिति आने पर सभी सहयोग करते थे। व्यापारी चाचा सालगराम जी गहलोत ने पार्वती जी के शिक्षण का भार अपने कंधों पर लिया, उल्लेखनीय है कि (सुश्री) पार्वती गहलोत प्रख्यात इतिहासकार और समाजसुधारक जगदीश सिंह गहलोत की भतीजी थी।

उस समय में कन्या को अपने घर से बाहर निकलने की मनाही थी। तथाकथित ऊँची जातियाँ भी अपनी बालिकाओं को विद्यालय में भेजने की नैतिक अपराध की संज्ञा देती थी। महात्मा ज्योतिराव फूले की भाँति गहलोत परिवार ने अपनी मेधावी पुत्री को लुधियाना मेडिकल कॉलेज में शिक्षा लेने भेजा जो एक अपूर्व साहसिक कदम था। पार्वती गहलोत राजस्थान की प्रथम महिला डॉक्टर बनी तो तत्कालीन सभी भारतीय समाचार पत्रों ने इस उपलब्धि को विशेष खबर के रूप में सविस्तार प्रकाशित किया। परिवार में प्रताप जी और सालगराम जी ने मिलकर आपस में सहयोग रखकर स्त्री शिक्षा की यह नींव डाली। इसी क्रम में सालगराम जी ने अपनी पुत्री संतोष गहलोत को भी इंद्रप्रस्थ स्कूल दिल्ली से पढ़वाया और फिर उनका दाखिला लेडी हार्डिंग कॉलेज दिल्ली में हुआ। आज जब हम अपनी बच्चियों को अभी भी बाहर पढ़ने के लिए भेजते हुए कई बार सोचते हैं तो यह विचारणीय विषय है कि गहलोत परिवार के भाइयों ने उस समय कितना साहसिक कदम उठाकर अपनी बेटियों को बार पढ़ाया होगा। (उस समय यह शिक्षा जोधपुर क्या राजस्थान में भी उपलब्ध नहीं थी)। यह किशोर सिंह जी के परिवार की प्रगतिशील ता और नई सोच का ही परिणाम था कि उनके परिवार में एक के बाद एक कई लोग डॉक्टर बने। पार्वती जी के छोटे भाई गोविंद सिंह गहलोत भी अपने समय के कुछ प्रथम डॉक्टरों में रहे हैं।

मारवाड़ रियासत के महाराजा ने डॉ. पार्वती गहलोत की कुशाग्रता, दक्षता और कर्तव्यनिष्ठा से प्रभावित होकर उन्हें इंग्लैण्ड में उच्च शिक्षा पाने हेतु भेजा। सन् 1936 में वह इंग्लैण्ड से लौटी तो वे दूसरा कीर्तिमान स्थापित कर चुकी थी। राजस्थान की वह प्रथम महिला डॉक्टर थी जिसने विलायत में शिक्षा प्राप्त की।

भारत की प्रमुख समाजसेविका डॉ. पार्वती गहलोत की तुलना महाराष्ट्र के महात्मा ज्योतिराव फूले की पत्नी से की जा सकती है जो भारत की प्रथम शिक्षिका थी। उन दिनों मारवाड़ के प्रधानमंत्री अंग्रेज ही होते थे। सर डोनाल्ड फील्ड डॉ. पार्वती गहलोत की विशेषज्ञता, कार्यकुशलता और रोगियों के प्रति निष्ठा से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होने डॉ. पी. गहलोत का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जिसमें चांदी का एक सौ एक तोले का स्मृतिचिहन् प्रदान किया। जोधपुर राज्य के उच्च अधिकारियों, प्रकाण्ड बुद्धिजीवियों, संभ्रांत उद्यमियों और समाजसेवियों ने उस समारोह में पार्वती देवी को **'मरुधरा की फ्लोरेन्स नाइटेंगल'** घोषित किया। मारवाड़ के प्रमुख नागरिक श्री जसवन्तराज जी मेहताने कहा– ''डॉ. पार्वती गहलोत एक युगप्रवर्तक महिला है जिसने यह प्रमाणित कर दिया है कि हमारी महिलाओं में पुरुष के समान विलक्षण प्रतिभा होती है। हमें डॉ. पार्वती गहलोत की तरह अपनी बहिनों, बहुओं और बेटियों को शिक्षा देनी चाहिये। इससे हमारी सभी सामाजिक कुरीतियाँ समाप्त हो जायेगी तथा समाज का सर्वांगीण अभ्युदय होगा।''

उम्मेद अस्पताल, जो पहले जसवन्त जनाना अस्पताल कहलाता था, उसकी प्रथम महिला अधीक्षिका ने कहा कि 'मेरे इंग्लैण्ड प्रवास के समय डॉ. पार्वती गहलोत ने कुशल चिकित्सका एवं दक्ष सर्जन का कार्य किया। ये विश्वस्तर की डॉक्टर हैं। इन्होंने जटिल से जटिल ऑपरेशन कर अपनी असाधारण क्षमता का परिचय दिया है।' मारवाड़ के प्रधानमंत्री सर डोनाल्ड फील्ड ने कहा – **'डॉ. पार्वती गहलोत एक समर्पित चिकित्सक हैं। अस्पताल के अतिरिक्त दूर–दराज के गांवों में भी वह गंभीर रोगियों को देखने जाती है। यह एक बहुत बड़ा सेवाकार्य है।'**

दिन–रात चिकित्सारत होते हुए भी आप नारी–जागरण का भी महत्वपूर्ण कार्य करती थीं। जोधपुर के महाराजा ने उन्हें वेतन के रूप में एक सौ रूपया मासिक आजीवन सवारी भत्ता स्वीकृत किया ताकि वे दिन–रात प्रजा की सेवा करती रहे। स्मरण रहे कि 1936 में बड़े–बड़े अधिकारियों को भी एक सौ रूपये मासिक वेतन नहीं मिलता था।

स्थानीय उम्मेद अस्पताल की अधीक्षिका के पद पर उन्होंने काफी वर्षो तक महिलाओं और शिशुओं की दिन–रात सेवा की। वे सदैव हँसमुख रहती, रूग्ण महिलाओं को उपचार के साथ मानसिक सांत्वना देती तथा उन्हें सहज रूप से स्वास्थ्य–विज्ञान के सूत्र भी समझाती रहती थी। **रोगिणी महिलाओं के लिए वे डॉक्टर, शिक्षिका और अभिभाविका, यहाँ तक कि करुणामयी ममतापूर्ण देवी के समान थीं।** उनके द्वार सभी के लिए खुले रहते थे विशेष रूप से अशिक्षित पिछड़े परिवार की स्त्रियों हेतु। इसी तरह वे अपनी 'ड्यूटी' का कोई समय नहीं मानती थी तथा चौबीसों घण्टे गम्भीर रोगियों को जीवनदान देने के लिए तत्पर रहती थी।

डॉ. पार्वती गहलोत के कठोर अनुशासन और कर्तव्यपरायणता का सम्मान प्रधानमंत्री और महाराजा भी करते थे। वे कभी अस्पताल की मर्यादाओं और नियमों का उल्लंघन किसी को नहीं करने देती थी। एक बार जोधपुर के स्वास्थ्य मंत्री के भाई रात्रि को उन्हें कॉटेज वार्ड में मिलने गये तो उन्होंने उन्हें तत्काल बाहर निकाल दिया। तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री को इस त्रुटि के लिये क्षमायाचना करनी पड़ी। **डॉ. पार्वती गहलोत ने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया इतने लम्बे सेवा काल में उन्होंने एक दिन भी बीमारी की छुट्टी (मेडिकल लीव) नहीं ली। यहाँ तक कि सामान्य अवकाश भी नहीं लिया।**

अपने जीवनकाल में ही डॉ. (मिस) पार्वती गहलोत को उल्लेखनीय मान–सम्मान तथा यश मिला। उनकी ख्याति दूर–दूर तक फैल गई थी। मारवाड़ी समाचार (रियासती अंक, कलकता) ने अपने 17 जुलाई, 1940 के अंक में श्री उम्मेद जनाना हॉस्पिटल के विधिवत् उद्घाटन (31 अक्टूबर, 1938) के समाचार के साथ–साथ डॉ. (मिस) पार्वती गहलोत का चित्र भी प्रकाशित किया था।

उनका व्यक्तित्व अत्यन्त सौम्य, सादगी तथा सरलता से परिपूर्ण था। वे आत्ममुग्ध अंहकार से पूर्णतया मुक्त थी। सादा जीवन, उच्च विचार, मानवीय संवेदनशीलता तथा सहज जीवनशैली उनके व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे। बालिकाओं की शिक्षा में उनकी विशेष रूचि थी। 27 अक्टूबर, 1988 को जोधपुर की इस महान् विभूति का देहावसान हुआ।

सोशल मिडिया में 2 लाख से अधिक फॉलोअर्स रोटी बैंक के माध्यम से समाज सेवा करने वाली युवा होम्योपैथी

डाक्टर प्रियंका मौर्या

डॉ. प्रियंका मौर्या, लखनऊ उत्तर प्रदेश में एक प्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक और सलाहकार है। उन्हें 8 वर्षों से भी अधिक चिकित्सा का अनुभव है।

उन्होंने अपना बीएचएमएस डिग्री ग्वालियर विश्वविद्यालय से लिया है। फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे सोशल प्लेटफॉर्म पर डॉ. प्रियंका मौर्या जी के दो लाख से भी ज्यादा फॉलोअर्स है। वह नियमित रूप से होम्योपैथी, स्वास्थ्य और सामाजिक मुद्दों की जानकारी सोशल मीडिया पर साझा करती रहती हैं। प्रियंका मौर्या जी के पिता श्री राम बृक्ष मौर्या भी आजमगढ़ उत्तर प्रदेश के एक वरिष्ठ होम्योपैथी चिकित्सक हैं। उन्हें 35 साल से भी ज्यादा चिकित्सा का अनुभव है। डॉ. प्रियंका मौर्या जी अपने पिताजी को अपना गुरु मानती हैं।

अपने पेशेवर जिंदगी के अलावा डॉ. प्रियंका मौर्या, इंडियन रोटी बैंक जो कि एक एनजीओ है, के साथ सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय हैं। इंडियन रोटी बैंक एक सेल्स ग्रुप है जो विशेष रूप से भारत में गरीब और जरूरतमंद लोगों को खाना खिला रहा है अभी तक इस समूह के साथ 2000 से भी ज्यादा लोग जुड़े हैं। डॉ. प्रियंका मौर्या इंडियन रोटी बैंक उत्तर प्रदेश कि प्रदेश संयोजक है और साथ ही साथ इंडियन रोटी बैंक की संजीवनी टीम की नेशनल कोऑर्डिनेटर है। इंडियन रोटी बैंक 14 राज्यों में अपने 100 केंद्रों के साथ सक्रिय रूप से गरीबों की सेवा कर रहा है। इंडियन रोटी बैंक कोविड–19 महामारी के दौरान जनता को चिकित्सा सलाह सुनिश्चित करने के लिए डॉ. प्रियंका मौर्या जी के मार्गदर्शन और नेतृत्व में एक पहल की थी।

लॉकडाउन के बीच गैर आपातकालीन मामलों में डॉक्टरों तक पहुंचने में गरीब लोग असमर्थ हो रहे थे। इंडियन रोटी बैंक के इस पहल ने गरीब लोगों को लॉकडाउन और कोविड–19 महामारी के बीच मुफ्त चिकित्सा सलाह तक पहुंचने में मदद की। इंडियन रोटी बैंक ने अपनी उपलब्धता के आधार पर विभिन्न डॉक्टरों द्वारा संजीवनी मुफ्त चिकित्सा परामर्श हेल्पलाइन शुरू किया था। गरीब लोगों को फोन कॉल पर विशेषज्ञ डॉक्टरों के एक नेटवर्क से जुड़ने और घर बैठे सामान्य स्वास्थ्य संबंधित चिंताओं के लिए मुफ्त चिकित्सा सलाह प्राप्त करने का एक मंच प्रदान करता है। उत्तर प्रदेश में इस सुविधा की शुरुआत करके इंडियन रोटी बैंक पूरे प्रदेश में इस कार्यक्रम को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है।

डॉ. प्रियंका मौर्या पूरे भारत में स्वास्थ्य शिविर नेत्र शिविर और रक्तदान जैसे शिविर आयोजित करने के लिए योजना बना रही हैं। यह गतिविधियां समाज के कमजोर वर्ग के लोगों के बीच स्वच्छता, खाद्य पोषण और स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं के बारे में जागरूकता पैदा करने में मदद करेंगी।

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित मोनालिसा पंवार

नाम : – मोनालिसा पंवार
पुत्री :– श्री अशोक पंवार तथा सुनिता पंवार
पत्नि :– श्री श्याम सोलंकी
शिक्षा :– एम ए , बी एड
जन्म :– जोधपुर
कार्यस्थल :– केनरा बैंक जोधपुर

उपलब्धियां :– 2017 में माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा राजभाषा गौरव पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा आलेख मुद्रा योजना की सफलता में सार्वजनिक बैंकों की भूमिका था।

मोनालिसा को कविताएं कहानियां तथा आलेख लिखने में रूचि है। इनके द्वारा लिखे गए आलेख, कहानियां व कविताएं बैंकिंग तथा राष्ट्रीय स्तर के अनेकों पत्रिकाओं तथा पुस्तकों में प्रकाशित हो चुकी हैं। इन्होने बैंकिंग सेवा 2010 में शुरू की।

2015 से इन्होने अनेकों बैंकों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार मे हिस्सा लिया। मोनालिसा ने अपनी कविताओं एवं कहानियों के साथ ही हिन्दी लेखन के लिए अनेकों बार सम्मानित होने का गौरव प्राप्त किया है। आप अल्प समय में अनेकों उपलब्धियों को प्राप्त कर चुकी है साथ ही आपने स्वयं की पुस्तक का भी प्रकाशन किया है। हम समाज की होनहार बेटी को हार्दिक बधाई प्रेषित करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते है।

संतोष सांखला
9252067133
9414359805

नेमीचंद सांखला
9529551444

आ. पी. तंवर
9414117306

तंवर मार्बल
मूर्ति एण्ड हैण्डीक्राफ्ट

हमारे यहां मार्बल स्लैब, टाईल्स, मंदिर मूर्ति, जाली, पालकी, मार्बल फ्लॉवर व हैण्डीक्राफ्ट आदि का कार्य किया जाता है।

Marble Art (Android Apps on Gooble Play Store)
E-Mail : marbletanwar@gmail.com
शोरूम : सैनी कॉम्पलैक्स, 1 फ्लोर, शॉप नं. 40, रेल्वे स्टेशन के पास, मकराना (राज.)

संपूर्ण जीवन को सेवा कार्यो में लगा 66,000 महिलाओं को आजिविका प्रदान कर मिसाल कायम करने वाली

सुश्री लता कच्छवाह

80 के दशक के उत्तरार्द्ध में एक सफल और आत्मसशक्त महिलाओं के रूप में काम करना सबसे कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्यों में से एक था। सुश्री लता कच्छवाहा ऐसी आत्मसशक्त महिलाओं में से एक है, जिन्होने समाज में महिलाओं की स्थिति को विकसित करने के लिए इस क्षेत्र में असाधारण काम किया है। बाड़मेर सीमा क्षेत्र में विभिन्न मुददों पर महिलाओं की आजिविका से जोड़ने हेतु 66000 महिलाओं को जोड़ने का कार्य किया ।

सुश्री लता जोधपुर के प्रसिद्ध रामलाल कच्छवाहा के परिवार से है। इनके पिता का नाम स्वर्गीय श्री हुकम सिंह कच्छवाहा है। आर्टस में मास्टर्स डिग्री पूरा करने के बाद सुश्री लता ने गरीब एवं ज़रूरतमंद परिवारों के उत्थान के लिए कार्य करने का फैसला लिया।

घर की इकलौती लाडली बेटी ने जब ठान ली तो घर की शान शौकत, आराम को छोड़ कर बाड़मेर के रेतीले धोरों में अपना जीवन लगा दिया और, इन रेत के धोरों में जहां पानी भी मुश्किल था एवं बाड़मेर सीमा क्षैत्र चौहटन के गांवों को चुना जहां सिर्फ एक सड़क थी जहां से गांवों में पहुंचने हेतु एक किलोमीटर से 15 किलोमीटर तक पैदल सफर तय किया। कभी उंटों पर कभी ग्रामीण बसों में यात्रा की और लोगों के घर घर तक पंहुची। गरीबों की रसोई तक पंहुची तो लोगों ने अपना माना, अपना दुख दर्द भी बांटा जहां बाहरी लोगों पर अविश्वास था वहां विश्वास की एक मजबूती कायम की।

जीवन के अपने कर्म की शुरूआत की शिक्षा के बाद जोधपुर के कागा में हरिजन बच्चों को शिक्षा से जोड़ने व उन्हें पढाने के कार्य से की और उसमें आनन्द था। एक वर्ष के पश्चात ही उनकी माता का देहान्त हो गया तो पुरी दुनिया सुनी लगने लगी। पुरा परिवार व सब कुछ था लेकिन माँ की ममता के बिना इतना सब होते हुए भी सब सूना था।

उसी दौरान भाई महेन्द्रसिंह द्वारा मन बहलाने एवं बदलाव के लिए बाड़मेर चलने का आग्रह किया और आप भाई के आग्रह पर बाड़मेर आ गई और बाड़मेर में आपकी मुलाकात समाज सेवी पदमश्री मगराज जी जैन साहब से हुई और उनके कार्यों एवं कार्य की रीति नीति ने उन्हें प्रभावित किया और उनके साथ जुड़कर जीवन का एक लक्ष्य सामने रख कर महिलाओं को आगे लाने का निश्चय किया और तब से कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

लोगों के जीवन की कठिनाइयों को समझा, जाना, बदलाव का जिम्मा उठाया, रोजगार के साधन नहीं थे, निरंतर पड़ने वाले अकालों में मनुष्य एवं पशुओं के हालात खराब थे। 50 प्रतिशत लोग रोजगार की तलाश में पलायन कर जाते थे और गांवों में केवल बूढे, बच्चे एवं महिलाएं ही रह जाते थे।

महिलाओं का पूरा समय पानी लाने में ही लगता था। महिलाएं 4 से 7 किलोमीटर दूर से पानी लाती थी, पूरा श्रम पानी लाने में लगता था, आयवर्धन हेतु कार्य करने का समय नहीं रहता था।

बाड़मेर सीमा क्षेत्र में भारत पाक युद्ध के पश्चात् 1965 व 1971 की लड़ाई के बाद पाक विस्थापित कई जातियों के परिवार सीमा पर आकर बसे। आजिविका का साधन खेती एवं पशुपालन ही थे। खेती वर्षा आधारित थी। पशुओं के हालात खराब थे ऐसे में मेगवाल जाति की महिलाओं के पास जो पारम्परिक हुनर था, घर की महिलाएं अपनी बेटीयों के लिए दहेज हेतु कांचली, अंगरखी, तकीया, रूमाल या दामाद की बुकानी, बटुआ आदि सुंदर वस्त्र, चादर, रालियां, घर सजाने के लिए तोरण, उंटों एवं घोड़ों को सजाने के लिए तन आदि बनाती थी। यह इतने सुंदर रंगों के धागों का व कांच का उपयोग करके सुंदर कारीगरी से बनाती की देखते ही मन उल्लास से भर जाता था क्योंकि बनती अपनों के लिए जो थी तो उसमें अपनत्व की भावना एवं दिल से लगाव व जुड़ाव होता था और धीरे धीरे ये बाजार में व्यवसाय के रूप में बनने लगी, मांग बढी लेकिन दाम कम मिलने पर काम की क्वालिटी(गुणवत्ता) भी गिर गई। व्यापारी और महिला कारीगरों के बीच बहुत बिचौलिए हो गये थे, इस कारण महिलाओं को दिन भर में मात्र 3 रूपये ही मजदूरी मिलती थी।

महिलाओं के कशीदाकारी एवं हस्तशिल्प के कार्य को आगे बढाने के लिए 1986 में नेहरू युवा केन्द्र से जुड़ कर शुरूआत की एवं परम्परागत तरीके से किये जाने वाले कार्य में व्यावयायिक रूप से क्या बदलाव करने की जरूरत है एवं उसमें नया क्या कर सकते हैं इन तमाम बिंदुओं को लेकर चिंतन मनन करने के बाद जिस समय बाड़मेर के चौहटन क्षैत्र में कार्य करना बहुत ही चुनौतियों भरा माना जाता था उस समय आपने चौहटन की महिलाओं के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर कार्य कर उनको विकास की धारा में जोड़ने के लिए अपनी कर्मभूमि बनाया ।

बाड़मेर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने हेतु सरकारी एक योजना ग्रमीण युवाओं के लिए थी जिसमें पूरे जिले के लिए कार्य था। साथ ही एक योजना शहरी युवाओं के लिए भी थी जिसमें शहरी युवाओं को रोजगार से जोड़ना था और बाड़मेर की 8 पंचायत समितियों में युवा केन्द्रों में जैन साहब द्वारा इस परियोजना का कार्य संचालित हो रहा था। इसके तहत जिले की 1700 से अधिक ग्रामीण और 1600 शहरी महिलाओं के साथ काम करना शुरू किया। नेहरू युवा केन्द्र के सामाजिक कार्यों के साथ 1986 में आपने काम शुरू किया। उन सभी कार्यो को पूरी जिम्मेदारी के साथ किया।

बाड़मेर जो देखने में रेतीले धोरो का आर्कषण तो था ही, जहां लोगो को पीने का पानी भी पूर्णतया नसीब नही था। अप्रेल से जून तक का 48 से 50 डिग्री का तापमान और भंयकर आंधीयाँ, अकालो की मार जिन्हें लोग किस तरह झेलते थे जो कभी किताबों में पढा था उसकी वास्तविक भयंकरता ने बहुत नजदीक से जानने व समझने का अवसर मिला।

युवाओं को प्रशिक्षण देना व उनको रोजगार से जोड़ने के साथ–साथ जो उत्पादन होता था उसको बाजार तक पहुँचाना ताकि उसकी डिमांड(मांग) को समझा जा सके इस हेतु नेहरू युवा केन्द्र के माध्यम से देश के हर कोने में दस्तकारी सामग्री की ब्रिकी हेतु मेलों में जाना होता था व उस सामान को बेचने, उद्योग मेले, राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय मेलो में जो भारत मे लगते थे उनमें भाग लेते थे दिल्ली, मुम्बई, जयपुर, बैंगलोर, चण्डीगढ़, मद्रास इत्यादि स्थानों पर भारत सरकार द्वारा आयोजित किए जाते थे विशेष कर कर्पाट द्वारा ग्राम श्री मेले में आयोजित किये जाते थे।

साथ ही आदरणीय श्री मगराज जी जैन को पदम् श्री मिलने के बाद उनके समन्वय और अधिक गहनता से कार्य करने का अवसर मिला। "श्योर" संस्था की शुरूआत अर्थात स्थापना सन् 1990 में हुई और आप भी इसमें शामिल हो गई। आपने 1990 में श्योर संस्था से जुड़कर कशीदाकारी एवं हस्तशिल्प के कार्य को गति देने की बड़े स्तर पर एवं जुनुन बनाकर इस कार्य की शुरूआत कर दी, तब से बाड़मेर जिले की हजारों महिलाओं को लाभान्वित करने के लिए सैकड़ों प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण कार्यक्रम, प्रदर्शन,

बीज वितरण, चारा प्रबंधन, वित्तीय साक्षरता, बेहतर कृषि पद्धतियों, जैव–फर्म, वाडी तकनीक, वर्मी कम्पोस्ट, औषधीय पौधे, किचन गार्डनिंग और जैविक खेती के उपयोग को और अधिक प्रसार के लिए महिला प्रौद्योगिकी केन्द्र की स्थापना की गई।

इन दस्तकार महिलाओं को संगठित किया गया। 1994 में स्वयं सहायता समूह बना कर इनको साथ मिलाकर ग्रुप में कार्य करने हेतु प्रेरित किया गया। ग्रामीण महिलाओं पर परिवार के लोगों का अंकुश रहता था कि ये घर से बाहर नहीं निकलें, ऐसे में आपने अथक प्रयास किये एवं आपको जो कार्य करने को दिया गया वह किया और पूरा विश्वास दिलाया। इस तरह 10 में 100 और 1000 में हजारों महिलाएं जुड़ी जो कभी घर की दीवार से बाहर नहीं गई थी, जिन्होंने कभी ट्रेन नहीं देखी वो दिल्ली, बम्बई और कई बड़े शहरों में अपना सामान बेचने गई और समझा कि लोग क्या पहनते है, क्या सजाते है और उनको कैसे कपड़े में कैसा रंग किस प्रकार का काम चाहिए। इसी दौरान सन् 1994 में दस्तकारों के प्रशिक्षण, डिजाइनिंग व मार्केटिंग के लिए बाड़मेर से 75 किलामीटर दूर जहां आसपास के गावों में दस्तकारों की अधिकता थी उनके बीच में क्राफ्ट डवलपमेंट सेंटर की स्थापना की जो आज तक उसी रफ्तार से कार्य कर रहा है। इसके साथ ही स्वयं सुश्री लता कच्छवाहा ने हस्तशिल्प को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न देश–विदेशों की यात्राएं की जैसे अमेरिका, सिंगापुर, थाईलैंड, बांगलादेश, श्रीलंका आदि।

लता जी द्वारा सन् 2011 अमेरिका में फेयर ट्रेड (यू एस ए की एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है) के माध्यम से कार्यक्रम में भाग लिया। फेयर ट्रेड संस्था दस्तकारी विकास के कार्यों के साथ साथ दस्तकारों के शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण आदि मुददों पर भी काम करके दस्तकारों के सर्वागीण विकास करके समाज के विकास की मुख्य धारा से दस्तकारों को भी जोडने का कार्य प्राथमिकता से कर रही है, दस्तकारी से होने वाली आय से उनके परिवार में बदलाव आये।

वहां पर विभिन्न शहरों की लगभग एक हजार दूकानें थी, इसी यात्रा के दौरान आपने ने सिएटल शहर में वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी में हस्तशिल्प पर लेक्चर भी दिया जिसका विषय था "हुनर मंद लोगों का सर्वांगीण विकास"। इस प्रकार इस हैडिक्राफ्ट के काम को बढावा देना, उनके हुनर का पूरा दाम मिलने के साथ उनके श्रम अधिभार(ड्रेजरी) को कम करना, इस काम से उनके जीवन में क्या बदलाव आया व उनके लिए सिर्फ रोजगार ही नहीं बल्कि बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य के विकास में उनकी भागीदारी में स्थान का भी सहयोग मिलें। कारीगरों के हुनर की गुणवत्ता बढाना उदेश्य बना और काम के साथ कारीगर महिलाओं को सिखाया की अपने काम का दाम स्वयं तय करें और पूरा दाम लेंवे। अभी तक कुल 10530 महिलाओं को हस्तशिल्प का प्रशिक्षण देकर हाथों के हुनर से जोड़ा जो आज के समय में अपनी आजिविका वो स्वयं इसी काम से कर रही है और ये महिलाएं घर का सारा काम करने के बाद हस्तशिल्प कार्य करके प्रति माह 3000 रूपये हस्तशिल्प के काम से कमा रही है। साथ ही 80 महिलाओं को दक्ष प्रशिक्षक के रूप में तैयार किया है जो अन्य स्थानों पर जाकर महिलाओं को हस्तशिल्प का प्रशिक्षण दे रही है एवं प्रति माह 15000 रूपये कमा रही है।

इन्हीं कामों के साथ–साथ गांवों में अन्य मुद्दे भी निकलकर आये जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य महिलाओं की स्थिति, लिंग भेद, दलितों के साथ छुआछूत का व्यवहार, कृषि, पशुपालन, आदि। इन आवश्यकताओं को समझा और इस प्रकार आयवर्धन के साथ अन्य मुद्दों पर भी योजना बना कर कार्य प्रारंभ किया।

सुश्री लता ने आगे क्षेत्र की ग्रामीण महिलाओं की स्वास्थ्य देखभाल और व्यक्तिगत स्वच्छता पर काम किया। उन्होंने गर्भावस्था के पूर्व, दौरान एवं उपरांत की देखभाल, महिलाओं के पोषण, प्रसव संस्थानों की कमी, उच्च शिशु एवं मातृ मृत्यु दर और टीकाकरण के बारे में गलतफहमी के मुद्दों पर काम किया है। उसने क्षेत्र के पानी के मुद्दे पर काम किया। जलस्रोतों तक पहुँच सुनिशचित की, विभिन्न जल स्रोतों का निर्माण नवीनीकरण, पुनरूद्धार का कार्य किया, शुद्ध पीने के पानी की उपलब्धता और पानी लाने के लिए महिलाओं की यात्रा के समय में कमी लाने अर्थात ड्रजरी रिडक्शन(महिला श्रम अधिभार) को कम करने के लिए घरों में पानी की छोटी छोटी टांकलियों का निर्माण करवाया ताकि महिलाएं उसमें 5–7 दिनों का पानी का संग्रहण कर सके एवं उस बचे हुए समय को दस्तकारी के काम में लगा कर आजिविका को बढावा दे सके।

सुश्री लता कच्छवाहा ने आपातकालीन राहत कार्य के दौरान बड़ी प्रतिबद्धता दिखाई है। मलेरिया (1994) और तपेदिक (1999–2000) की महामारी के दौरान वह एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थीं और सैकड़ों गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य, हजारों महिलाओं के पोषण और बालिकाओं के स्वास्थ्य को सुनिशचित किया। वह कवास (2006) में बाढ़ के आपातकालीन राहत कार्यों में प्रमुख थीं। सूखे में, वह एक सक्रिय समन्वयक थी।

सुश्री लता कच्छवाहा पंचायतीराज में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करने के मुद्दों पर महिलाओं के साथ काम किया। उन्होंने एससी एसटी, ओबीसी और सामान्य वर्ग की 6000 से अधिक महिलाओं के साथ काम किया है और उन्हें समाज के विभिन्न स्तरों पर निर्णय लेने में आगे बढ़ने के लिए प्रशिक्षित किया है। उन्होंने महिलाओं के आत्मनिर्भरता और महिलाओं में बेहतर प्रशासन सुनिशचित करने के लिए विकास के विभिन्न सफल मॉडल के लिए महिलाओं के प्रदर्शन को सुनिशचित किया।

एक समय था जब क्षेत्र में महिला साक्षरता दर 3 प्रतिशत थी। यह तब था जब लता जी ने मौसमी छात्रावासों के आयोजन के लिए टीम का नेतृत्व किया, इसमें पलायन करने वाले परिवारों के बालक–बालिकाओं की शिक्षा बाधित नहीं हो इसके लिऐ मौसमी छात्रावासों का संचालन किया गया। आवासीय छात्रावासों व शिविरों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण बालिका शिक्षा, माता–पिता को प्रेरित करना और स्कूल में ड्रॉप–आउट दरों को कम करना, नामांकन बढ़ाना, बालिका शिक्षा (335 किशोरी बालिकाओं को आवासीय प्रशिक्षण शिविरों में रख कर शिक्षा से जोड़ा) आदि।बालिकाओं को रखा जाता था जो बकरियां चराने का कार्य करती थी जिनको शिक्षा से जोड कर पांचवी कक्षा तक आवासीय शिविरों में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देकर आगे की कक्षाओं के लिए फॉर्म भरकर पढने के लिए प्रेरित किया। उनकी टीम ने विभिन्न सरकारी नेतृत्व वाली शैक्षिक परियोजनाओं और योजनाओं में भाग लिया। जैसे लोक जुंबिश, शिक्षाकर्मी, खोज, बालवाडी आदि। उन्होंने समग्र विकास के लिए परियोजनाओं का नेतृत्व किया।

सुश्री लता जी ने एकल महिलाओं, विधवाओं, शारीरिक अक्षमताओं वाली महिलाओं और वंचित सामाजिक वर्गों की महिलाओं के विकास के लिए काम किया है। उनके हक एवं अधिकारों की वकालत करने का उनका प्रयास सराहनीय है क्योंकि 100 से अधिक गांवों की महिलाओं को इसका लाभ मिल रहा है।

सुश्री लता की यह महत्वपूर्ण भूमिका है कि उनके काम के परिणामस्वरूप थार की हजारों महिलाओं की आत्म–सशक्तिकरण हुई, विशेष रूप से दलित महिलाओं, हजारों महिलाओं और लड़कियों की जागरूकता, महिलाओं की बेहतर सामाजिक स्थिति, महिला नेतृत्व, स्वास्थ्य देखभाल और स्वच्छता, जागरूकता, बालिकाओं के लिए बेहतर शिक्षा और जातिगत भेदभाव की खाई में कमी।

आपको जो मुख्य सम्मान मिले–

- सन् 1998–इंटरनेशनल प्राइज फॉर वूमन क्रिएटीविटी इन रूरल एरिया (स्वीजरलैंड सरकार)

- सन् 1999– महिला शक्ति अवार्ड (राजस्थान सरकार)
- सन् 2003– संजय घोष अवार्ड (वॉलन्टरी हेल्थ एसोसिएशन ऑफ इंडिया)
- सन् 2011– दिव्यांगों के विकास हेतु कार्य करने पर राजस्थान सरकार द्वारा राज्य पुरस्कार दिया गया।
- सन् 2019 – वुमन ऑफ ऑनर एचीवमेंट अवार्ड
- सन् 2020 – सैनिक क्षत्रिय माली सांस्कृतिक संवर्धन एवं शोध संस्थान, जोधपुर द्वारा जसधारी गोरांधाय पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार)

इसके अलावा जिला एवं संभाग स्तर पर कई पुरस्कार एवं सम्मान मिल चुके है।

महिला सशक्तिकरण (7871 महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़ना, जनकल्याण कारी योजनाओं का लाभ दिलाना एवं उनको अपने हक एवं अधिकारों पर जागरूक किया), कृषि (कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा), पशुपालन (थारपारकर गाय की नस्ल का संरक्षण एवं विकास), डेयरी विकास, नेत्र स्वास्थ्य, मलेरिया रोकथाम, जल संरक्षण एवं संवर्द्धन (टांका, बेरी, टांकली व नाडी निमार्ण एवं मरम्मत), स्वास्थ्य में प्रजनन स्वास्थ्य, महिला स्वास्थ्य, बाल स्वास्थ्य, दिव्यांगों का पुनर्वास आदि के बारे में विस्तृत कार्य लता कच्छवाहा के निर्देशन में किया गया। ये सब कार्य बाडमेर, जैसलमेर एवं जालोर जिलों में किया गया है तथा सतत जारी है। गरीब पिछड़े तबके की महिलाओं को रोजगार के विकल्पों से जोड़ा।

68 साल की उम्र में, वह अभी भी एक बेहतर समाज के विकास के लिए ऊर्जा और आकांक्षाओं से भरी है। वह एक प्रेरणादायक महिला नेता हैं। आपने बाड़मेर, जैसलमेर जिलों में दृष्टि बाधित, अंध एवं एवं मूक बधिर, मानसिक विमंदितों के पुनर्वास का कार्य बड़ी तन्मयता से किया एवं उसके उपरांत श्री सत्य सांई अंध एवं मूक बधिर विधालय, मानसिक विमंदित पुनर्वास गृह की शुरूआत करके लाभार्थियो के जीवन में परिवर्तन लाने में आपकी सकिय भूमिका रही। जिले के सैकड़ो दिव्यांगो को शिक्षा, रोजगार तथा तकनीकी शिक्षा से लाभान्वित कर आपने उनके सपनो को नया आयाम दिया। उम्र के इस पड़ाव में भी आपकी समाज सेवा की भावना से हम सभी गौरवान्वित है। धन्य है हमारा समाज जहां आप जैसी महिला ने जन्म लिया।

विवाह पश्चात विषम परिस्थितियों में शिक्षा प्राप्त कर, शिक्षा एवं म्यूजिक के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाली

डॉ. हरदेवी सैनी

डॉ हरदेवी सैनी का जन्म अगस्त 1975 में कृषक स्वर्गीय लक्ष्मीनारायण सैनी के यहां हुआ इनके पिता का देहांत 12वर्ष की उम्र में ही हो गया जिससे पढ़ाई जारी नहीं रख सकी। वर्ष 1995 में विवाह के पश्चात 1999 में अपनी पढ़ाई पुनः प्रारंभ करने के साथ ही राजस्थान संगीत संस्थान से स्वर संगीत का डिप्लोमा प्राप्त किया साथ ही शिक्षा जारी रखते हुए 2004 में बी.ए. करने के बाद म्युजिक में एम. ए. किया और 2012 में नेट/स्लेट भी किया। उसके बाद म्यूजिक में राजस्थान युनिवर्सिटी से पी.एच.डी. की उपाधि हासिल की।

उन्होंने बताया कि 12साल की उम्र में ही पिता की मृत्यु होने के बाद कक्षा 8 पास की शादी के बाद मन मे एक इच्छा हमेशा रही कि मैं अपनी आगे की पढ़ाई पूरी करूं ससुराल में ससुर ने भी मेरी पढ़ाई पुनः करने पर उसका विरोध किया पर मैं अपने इरादो पर डटी रही और यह बीड़ा उठाया कि मैं परिवार में रहकर ही अपनी पढ़ाई घर में करूंगी और फिर वहीं से शुरुआत हुई मेरे लक्ष्य की ओर बढ़ने की उस समय मेरे 6 महीनें के जुड़वा बेटे थे ससुराल में ही बार बार मेरी पढ़ाई पर ऑब्जेक्शन किया जाता था मगर मेर दृढ़ निश्चय मेरे इरादें मुझे हरबार और मजबूत करते जा रहे थे।

इसी दौरान मैंने महसूस किया कि महिलाओं के लिए शिक्षा कितनी जरूरी है उन्हीं चीजों ने मुझे महिलाओं को जागरूक करने बेटा या बेटी में कोई अंतर नहीं करने जैसी भाव मेरे अंदर पनपे और मैंने ऐसे प्रयास करना शुरू किया 2009 से मेरे आस–पास की ही वह महिलाएं जिनकी शादी हो चुकी है और लड़कियां जिनकी किन्हीं कारणों से पढ़ाई बीच में रुक गई थी और वह पढ़ाई करना चाहती हैं उनको मैंने जागरूक किया पढ़ने के लिए और उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की।

इसी समय मेरे आर्टिकल्स राजस्थान पत्रिका में महिला अत्याचार, कन्या भ्रुण हत्या,संगीत और प्रतियोगिता तैयारी कैसे करे जैसे प्रमुखता से भी प्रकाशित हुए। संगीत भाव अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है हम अपने भाव अपने विचार अपने बातों को संगीत के माध्यम से बहुत ही आसानी से सब तक पहुंचा सकते हैं यही विचार कर मैंने सन 2017 मे महात्मा ज्योति राव फुले सावित्री बाई पर स्वयं लिखकर कुछ सॉन्ग निकाले जिसका विमोचन मैंने माननीय श्री अशोक गहलोत से करवाया उसके बाद 2018 में मैंने माता सावित्री बाई फुले जी की जीवनी को लेकर और सॉन्ग बनाकर गाया था।

वर्तमान में आप सावित्री बाई राष्ट्रीय जागृति समिति के सदस्य और जय महात्मा फुले ब्रिगेड के प्रदेश उपाध्याय का प्रभार संभाल रही है।

जानती हूं मंजिल अभी बहुत दूर है पर मेरी कोशिश निरंतर रहेगी जो सही मुद्दे उन्हे भी मैं सोशल साइट्स पर उठाती हूं।

देश की पहली ऐसी महिला ऑफिसर हैं, जिन्होंने शादी के बाद आई. पी. एस. के लिए क्वालिफाई किया, लैडी सिंघम नाम से प्रसिद्ध इन पर फिल्म भी बन चुकी है

मंजिल सैनी (डीआईजी)

मंजिल सैनी का जन्म 19 सितंबर, 1975 को दिल्ली में हुआ था। वह दिल्ली कॉलेज ऑफ इकोनॉमिक्स से पासआउट हैं। यहां से गोल्ड मेडल जीता है। मंजिल 2005 बैच की आईपीएस ऑफिसर हैं। और उत्तर प्रदेश के बंदायू, मुजफ्फरनगर, इटावा, मथुरा समेत आधा दर्जन से भी ज्यादा जनपदों में कार्यरत रही हैं. आप उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सिक्योरिटी में भी अपनी कार्य को बखूबी से अंजाम दिया था।

उत्तर प्रदेश के लखनऊ में पहली दफा महिला एसएसपी पद पर तैनात हुई मंजिल सैनी हिमाचल के ऊना जिला के दिल्ली की बहु हैं। उनके पति जसपाल देहल एक्सपोर्ट कारोबारी हैं, जबकि जेठ डॉ. जी.एस. देहल जिला आयुर्वेदिक अस्पताल में पंचकर्मा के इंचार्ज हैं।

एक मजदूर की शिकायत पर किडनी रैकेट का भंडाफोड़ करने और मथुरा में प्रदर्शनकारी किसानों से जूझने वाली आईपीएस अफसर मंजिल दबंग अंदाज के चलते 'लेडी सिंघम' के रूप में चर्चित हैं।

मंजिल की उत्तर प्रदेश पुलिस के इस प्रमुख पद पर तैनाती के समय जिले में खुशी की लहर दोड़ पड़ी सोशल मीडिया पर भी उनके लेडी सिंघम के रूप में चर्चे खुब प्रचारित हो रखे थे। लखनऊ एसएसपी के रूप में आईपीएस मंजिल सैनी के चार्ज लेने से अपराधियों और अवैध धंधेबाजों से ज्यादा खौफजदा कई थानेदार थे, थानेदारों के भी होश उड़े हैं। इनमें से कई तो बड़े अधिकारी एवं सत्ता दल के नेताओं के पास सलामी ठोकने में जुटे हैं। दरअसल, यह खौफ इसलिए है, क्योंकि ऊना की यह दबंग आईपीएस बहू इससे पहले मुजफ्फरनगर, मथुरा, पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश के गृह नगर जनपद इटावा में जलवा दिखा चुकी हैं। यहां पोस्टिंग के दौरान मंजिल ने लापरवाह, आरामपरस्त और भ्रष्ट अधिकारियों का जीना दूभर कर दिया था।

मंजिल पर यूपी की सरकार ने भरोसा है। लखनऊ पोस्टिंग के समय बिगड़ी कानून व्यवस्था के आगे तेजतर्रार आईपीएस अधिकारी आशुतोष पांडेय ने भी घुटने टेक दिए। उनके बाद यहां तबादलों का दौर शुरू हो गया। आईपीएस अधिकारी आरके चतुर्वेदी को लखनऊ की कमान सौंपी गई।

इसके बाद आईपीएस अधिकारी जे रवींद्र गौड़, आईपीएस प्रवीण कुमार, आईपीएस यशस्वी यादव के बाद आईपीएस राजेश कुमार पांडेय को जिम्मेदारी सौंपी गई। चार साल में सात आईपीएस अधिकारी तैनात हुए, लेकिन बिगड़ी कानून–व्यवस्था जस की तस नजर आई। बताया जाता है कि वहां बेखौफ अपराधियों का आतंक बरकरार रहा था। ऐसे में तेज तर्रार मजिल सैनी ने वहां अपनी पोस्टिंग के दौरान अपराधियों एवं उनके सहयोग करने वालों के खिलाफ कठोर कानूनी कार्यवाही कर प्रदेश ही नहीं देश में अपने कार्यो से प्रसिद्वि प्राप्त की थी। उनके उत्कृष्ठ कार्यशैली की हर कोई तारीफ करता था। उनके पास किसी पीड़ित की शिकायत पर कार्यवाही नहीं होने पर वे तुरंत कार्यवाही कर पीड़ित को न्याय दिलाने के लिए हमेशा तत्पर रहती है।

2013 में यूपी के मुजफ्फरनगर जिले में हुए दंगों पर एक बॉलीवुड फिल्म बनाई गई, जिसका नाम मुजफ्फरनगर 2013 था। इस फिल्म में साउथ इंडियन एक्ट्रेस ऐश्वर्या देवन लीड रोल में नजर आईं। उन्होंने दंगों के समय मुजफ्फरनगर की एसएसपी रहीं मंजिल सैनी का रोल निभाया था। मंजिल सैनी ने 2013 के मुजफ्फरनगर दंगा कंट्रोल करने में अहम रोल निभाया था। शूटिंग भी उसी लोकेशन पर हुई है, जहां दंगे हुए थे। उनकी कार्यशैली के चलते उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में जहां भी उनकी पोस्टिंग रही वहां कानून का राज रहा तथा अपराधियों में खौफ। मंजिल सैनी हमेशा ही बिना दबाव व ईमानदारी से अपने कार्य से सभी वर्गो में प्रसिद्व हो रही है। वर्तमान में आप 49वी वाहिनी पीएससी गौत्तम बुद्व नगर के सेनानायक पद पर कार्यरत है समाज की होनहार ईमानदार बेटी पर हम सभी को गर्व है जो अपनी ड्यूटी के साथ ही पारिवारिक जिम्मेदारी को भी बखूबी निभा रही है।

अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिता के साथ राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाने वाली ओलपिंयन धावक

मनजीत कौर सैनी (डी.एस.पी.)

मनजीत कौर सैनी का जन्म 4 अप्रैल 1982 को पंजाब में हुआ। मनजीत कौर सैनी एक स्प्रिंट एथलीट हैं जो 400 मीटर में चौंपियन हैं। 16 जून 2004 को चेन्नई में आयोजित नेशनल सर्किट एथलेटिक मीट में उन्होंने 51.05 सेकेंड का 400 मीटर नेशनल रिकॉर्ड बनाया ।

उन्होंने के. एम. बेनामोल द्वारा नवंबर 2001 से बनाये गए पिछले रिकॉर्ड को तोड़ा। ऐसा करने के लिए, उन्होंने 2004 के एथेंस ओलंपिक लिए क्वालीफाइंग मार्क पास किया व चित्रा के सोमन, राजविंदर कौर और के. एम. बेनामोल के साथ मिलकर 4 गुणा 400 मीटर रिले में राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया ।

पंजाब पुलिस में एक पुलिस उपाधीक्षक (डीएसपी), मनजीत कौर सैनी ने 2004 एथेंस ओलंपिक में 4 गुणा 400 मीटर रिले दौड़ में भारत के लिए प्रतिस्पर्धा की, जहां उनकी टीम ने 26.89 के समय के साथ वर्तमान राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया। टीम अपने हीट में तीसरे स्थान पर रही।

अगले बीजिंग ओलंपिक में भी उन्होंने 4 गुणा 400 मीटर रिले में भारत का प्रतिनिधित्व किया, जहाँ उनकी टीम ने साठी गीथा, चित्रा के. सोमन और मनदीप कौर की जोड़ी को 28.83 के समय में प्रदर्शित किया और उनके हीट में सातवें स्थान पर रही।

2006 में दोहा एशियाई खेलों में, मंजीत ने भारत को 4 गुणा 400 मीटर रिले स्वर्ण का नेतृत्व किया। इससे पहले इसी स्पर्धा में उन्होंने कजाकिस्तान की अंतिम विजेता ओल्गा तेरेश्कोवा से महिलाओं की 400 मीटर दौड़ में भी रजत पदक जीता था। 2005 में, उन्होंने भारतीय एथलेटिक्स में योगदान के लिए अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया।

मनजीत कौर ने 2010 राष्ट्रमंडल खेलों में मंदीप कौर, सिनी जोस और अश्विनी अकुंजी के साथ 4 गुणा 400 मीटर रिले स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता था आपने देश के लिए अनेकों अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओ में गोल्ड और सिल्वर मेडल जीतने के साथ ही 51.05 सेकंड का नेशनल रिकॉर्ड भी बनाया है। आप अभी पंजाब पुलिस में डी. एस. पी. के पद पर है। हमें आपकी सफलता पर गर्व है आप समाज के युवाओ के लिये रॉल मॉडल है हम आपके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते है।

नैचौपैथी एवं योगा में विशेष योग्यता प्राप्त देश विदेश में अनेकों सेमिनारों में भाग ले समाज को गौरवान्वित करने वाली मातृशक्ति प्रेरक व्यक्तित्व

श्रीमती नेहा सांखला

जोधपुर निवासी नेहा सांखला का जन्म जोधपुर में 18 फरवरी, 1982 को परितोष सिंह परिहार के यहा हुआ। आरम्भिक शिक्षा हनुवंत आदर्श विद्या मंदर में प्राप्त की जहां संस्कृत में श्लोक, भारतीय संस्कृति का ज्ञान प्राप्त किया। 10वीं कक्षा राजकीय बालिका विद्यालय मगरा पूंजला से एवं 12वीं विज्ञान विषय 1998 में राजकीय बालिका सीनियर सैकण्डरी किसान कन्या से उत्तीर्ण की।

ग्रेजऐशन की शिक्षा पूरी करने के बाद वर्ष 2002 में सुनील सांखला के साथ विवाह करने के पश्चात वर्ष 2004 में पोस्ट ग्रेहुऐशन की शिक्षा पुरी की। दो पुत्रों के जन्म के पश्चात 2009 में पुनः शिक्षा प्राप्त करना शुरू किया। गांधी नेहरू एकेडमी राजघाट दिल्ली का योगा एवं नेचुरोपैथी डिप्लोमा 2012 में पुर्ण किया। उसके पश्चात 2015 में कोटा ऑपन यूनिवर्सिटी से डिप्लोमा इन योगा एण्ड आयुर्वेदा पंचकर्म किया।

2016 में क्वालिटी कांउसलिंग ऑफ इण्डिया से YCB Level 2 पास कर वर्ष 2017 में मोहनलाल सुखाडिया युनिवर्सिटी से योगा में 1 वर्षीय डिप्लोमा युनिवर्सिटी में तृतीय स्थान प्राप्त कर पूरा किया। 2018 में जैन विश्व भारती लांडनू से एम. ए. योगा की डिग्री लेने के बाद 2019 में योगा में नेट परीक्षा उत्तीर्ण की। 2019 में अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् में राजस्थान का सचिव नियुक्ति मिली। 2017 से अब तक इस परिषद् के DNYS Exam की Examiner भी है।

आपने योगा के क्षेत्र में विशेष योग्यता प्राप्त करने के साथ ही 2009 से 2020 तक नैचौपैथी व योगा के कई कैंपस लगाए है साथ ही नेशनल एवं इंटरनेशनल लेवल की कॉन्फ्रेस में भी भाग लिया। नेहा ने बताया कि वे इस क्षेत्र में बहुत काम करना चाहती है। समाज व देश के लिए भी कुछ करना चाहती है। उन्होंने कहा कि आज वो जो कुछ भी है अपने माता पिता की प्रेरणा संस्कार, आशीर्वाद व पति के साथ की वजह से है।

नेहा ने महिलाओं एवं बहनों के नाम संदेश देते हुए कहा कि स्त्री प्रकृति की वह शक्ति है जिसका कोई अंत नहीं, इस सृष्टि का निर्माण ही स्त्री से हुआ है। अतः अपनी क्षमताओं को पहचाने व उसे बाहर निकालो, उपयोग करो, इस देश को समाज को आज हमारी जरूरत है जैसे बूंद बूंद से घड़ा भरता है, संगठन में शक्ति होती है इसी प्रकार आज हम सभी मिल कर इस समाज व देश में व्याप्त बुराईयों को दूर कर सकते है। कभी भी स्वयं को छोटा ना समझें। समाज की महिलाओं एवं बहिनों के किसी भी प्रंकार के कार्य के लिए नेहा सांखला सदैव उपलब्ध है।

जोधपुर की बेटी ने अपने परिवार के साथ समाज को गौरवान्वित किया है हम आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते है।

महिला बॉडी बिल्डर के सफलता की कहानी

गीता सैनी

गुड़गांव। आज हम आपको एक ऐसी लड़की के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्होंने ऐसे काम मे अपना नाम बनाया है जिसके बारे में बोला जाता है कि ये सिर्फ लड़को का काम है। एक समय था जब पहलवानी और बॉडी बिल्डिंग सिर्फ लड़कों के खेल माने जाते थे लेकिन हमारी इस बहन से उन सब बन्धनों को तोड़कर एक नया कीर्तिमान बनाया है और लोगों को ये सोचने पर मजबूर किया है कि म्हारी छोरी छोरों से कम हैं के। दोस्तों हम बात कर रहे हैं गुड़गांव निवासी गीता सैनी के बारे में इन्होंने 21 साल की उम्र में बॉडी बिल्डिंग शुरू की और आज ये एक सफल बॉडी बिल्डर हैं।

असल मे इनके बॉडी बिल्डिंग में आने की कहानी बड़ी दिलचस्प है। हुआ यूं कि इनको अपना वजन कुछ ज्यादा लगा तो इन्होंने अपना वजन कम करने के लिए जिम जॉइन किया और इनका मकसद सिर्फ अपना वजन घटाना था। लेकिन इनको जिम का ऐसा चस्का लगा कि इन्होंने उसी को अपना कैरियर बना लिया।और आज ये एक सफल पेशेवर बॉडी बिल्डर हैं।

इन्होंने पहली बार मार्च 2017 में बॉडी बिल्डिंग चौंपियनशिप में भाग लिया और ये पहली बार मे ही टॉप 10 में जगह बनाने में सफल रहीं। उसके बाद फिर इन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

2018 में इन्हें सीनियर राष्ट्रीय चौंपियनशिप में कांस्य पदक मिला और एशियाई चौंपियनशिप में भी चौथा स्थान हासिल किया, इनकी हालिया प्रतियोगिता आईबीएनएफ (भारतीय बॉडीबिल्डिंग फेडरेशन) के तहत चेन्नई 2019 में आयोजित की गई थी, जहाँ इन्होंने गोल्ड मैडल जीता था। वर्तमान में ये पेशेवर बॉडी बिल्डर और जिम ट्रेनर के रूप में काम कर रही हैं, और अब ये आगे आने वाली प्रतियोगिताओ की तैयारियां भी कर रही हैं।

इनका मानना है कि कड़ी मेहनत से सब कुछ हासिल किया जा सकता है। हमें गर्व है गीता सैनी पर हम सभी आपके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करते है

सरकारी अधिकारी की जिम्मेदारी के साथ समाज सेवा

डॉ. मिनाक्षी कच्छवाहा

डॉ. मीनाक्षी कछवाहा धर्मपत्नी डॉ. प्रफुल्ल कछवाहा की (एमडी, एनेस्थीसिया, एमडीएम मेडिकल कॉलेज जोधपुर से सेवानिवृत्त प्रोफेसर) जो कि रक्षा विभाग DRDO जोधपुर में एक तकनीकी अधिकारी के रूप में राजकीय सेवा में है । डॉ. मिनाक्षी ने M.Sc., PhD (रसायन विज्ञान) शिक्षा प्राप्त की है।

सरकारी विभाग में अपने जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के साथ ही आपने समाज सेवा के लिए भी लायंस क्लब के माध्यम से आप समाज सेवा के अनेकों कार्य कर रही है जिसमें व्यक्तिगत रूप से इंसानों और जानवरों के लिए एक सामाजिक सहायता समूह साहस बनाया है साहस के माध्यम से वंचित बच्चों, मानसिक रूप से विकलांग बच्चों, वृद्वों की सेवा करना। साथ ही साहस समूह के फेसग्रुप साथियों के साथ आवरा कुत्तों, और अन्य जानवरों के लिए भोजन और देखभाल करने जैसे कार्य किए जाते है। ग्रुप के सदस्यों और स्वयंसेवकों द्वारा सेवा के लिए जरूरतमंदों तक पहुंच उन्हें मदद पहुंचाई जाती है। यही नहीं आपने अपने पुत्र के विवाह के समय दो गरीब लड़कियों का विवाह कर समाज को नई सेवा की सोच प्रदान की। हमें आप पर गर्व है।

वास्तुविद्, ज्योतिषाचार्य, नारी शक्ति की श्रेष्ठता का जीवन्त उदाहरण, समाज की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा

श्रीमती अल्का सैनी

माली सैनी समाज की श्रीमती अलका सैनी समाज की प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्षा जो स्त्री को कामयाबी समाज जनों के अवरोधों को पार करके, प्रतिकूल हालातों में समाज में अपना स्थान बनाना आसान नहीं होता। इस मिथक को तोड़ा है, हमारे समाज की अलका सैनी ने आज के समाज सेवा में क्रमशः आप सन् 2003 से महात्मा ज्योति बा फूले राष्ट्रीय जागृति मंच राजथ्सान तथा सावित्री बाई फूले राष्ट्रीस जागृति मंच से जुड़कर अपने समाजसेवा के सफर को लायंस क्लब के साथ मिलकर सर्व समाजसेवा को अपने जीवन में आत्मसात किया।

एक महिला होने के नाते वो जानती है कि जोड़ना क्या है, वह सजृन करती है, वह जानती है टूटना क्या है तभी उनके सृजन जरूरतमंद व्यक्ति के अस्तित्व का अधार है। आपने महिलाओं को उनकी भूमिका, उनका समोत्थान आर्थिक ओर पारीवारिक स्तर को बेहतर करने के लिए सक्रिय प्रयास किये है। अलका सैनी पिछड़े वर्ग के जरूरतमंदों तक पहुंची क्योकि वे स्वयं इस पिछड़े वर्ग का दर्द समझती है। पिछड़े वर्ग की महिलाओं व बच्चियों के लिए हमेशा संस्कृति की आड़ में अदृश्य बेडियां रची। अलका सेनी ने पूरे देश में घूम कर महिलाओं को उनकी स्वतंत्रता, संस्कारों के साथ खुद को कैसे साबित करना है यह समझाया।

संस्कारों से सुंस्कृत, सहृदय कर्मठ होकर हर जरूरतमंद तक पहुंची जिसमें प्रमुखता से :–

वृद्धाश्रम में जरूरतमंद को हर सामग्री पहुंचाई, वाटर कूलर पंखे लगाए।

मूक बधिर बच्चों की उचित शिक्षा हो, उनकी फीस की व्यवस्था से लेकर भवन में साउण्ड प्रूफ कमरा बना सहयोग दिया, जिससे उनकी स्पीच थैरपी प्रेक्टिस अच्छे से हो सके।

विकलांग भाई – बहनों को ट्रायसाईकिल, विज्ञापन साईकिल, उनके विवाह हेतु सहयोग, उनके रिश्तों के लिए सहयोग प्रदान किया।

नेत्रहिन स्कूलों में ब्रेनलिपी कागज, खाली कैसट तथा बच्चों की स्कूल फीस की व्यवस्था में सहयोग दिया।

अनाथ आश्रम में बच्चों के बीच 15 अगस्त, 26 जनवरी और रक्षाबंधन, दिवाली त्यौहार मनाया और उनकी सारी जरूरत की सामग्री समय समय पर प्रदान की। हर जगह पीड़ित मानव के लिए हर संभव प्रयास एवं पिछड़े समाज को आगे समाज की मुख्यधारा में चलने का हौसला दिया है ओर समझाया कि पिछड़े वर्ग को आगे लाने के लिए हमें लम्बी उड़ान भरनी है।

पिछड़े वर्ग की महिलाओं के साथ एक दूसरे की खुली मुट्ठी को थामा। पिछड़े वर्ग की महिलाओं के लिए जमीन तैयार की, तमाम कमियों के बावजूद पहले से अब हालातों को सुधारा है आगे भी सुधारने के लिए प्रयत्न कर रही है। यहीं नहीं पिछड़े वर्ग के सभी वर्ग अब हमारे साथ हो रहे है क्योंकि पिछड़े वर्ग को अपनी शक्ति का अहसास हो गया है ओर अब सभी अपने छोटे छोटे मदभेद भुला कार्य करने के लिए साथ हो लिए है जिससे पिछड़े वर्ग की दुनियां बदल रही है। समाज सेवा के क्षेत्र में स्वच्छ पारदर्शी व्यक्तित्व, समाज के हर वर्ग के लिए बेहद, सहज, सरल व्यवहारपूर्वक कार्यशैली अपनाई है। आज के समय में तेजी से दौड़ते भागते जमाने में किसी को भी दूसरे की आवाज सुनाई नहीं पड़ती ओर पिछड़े वर्ग को तो बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, ऐसे में सभी के लिए प्रयास किए जिसमें सभी के बच्चों को ऐसी शिक्षा मिले जिसमें उनके अधिकार, निर्णय एवं भावना का ख्याल रहे। आपने समाज सेवा को साधन नहीं साध्य के रूप में स्वीकारा है। माली सैनी समाज के हर जरूरतमंदों के प्रति सेवा, भावना लेकर चत रही है।

उन्होंने बताया कि वो पूरे देश में, हर प्रांत में सामाजिक संगठन में कार्य करते हुए स्वयं को भाग्यशाली मानती है कि मुझे ईश्वर ने यह मौका दिया है कि मैं समाज से जुड़े हर पहलू पर कार्य करके आना योगदान दे संकू। साथ ही समाज में व्याप्त दहेज दानव प्रथा को समाप्त करने हेतु दृढ़ संकल्पित हूं। माली सैनी समाज के हर व्यक्ति को अपने नाम के साथ माली सैनी लगाने का सुझाव दे रहे है जिससे हमारी पहचान हो हमें हमारी आबादी के अनुपात में राजनैतिक सामाजिक भागीदारी मिले। इसी कड़ी में लगभग 15 वर्षो से विभिन्न प्रातों में महात्मा ज्योति बा फूले माता सावित्री बाई फूले के विचारों एवं आदर्शो को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर सामाजिक जीवन में स्वजाति बंधुओं को जिसमें अनेक समूहों में यानी अलग अलग शखाओं में जैसे माली, सैनी, कुशवाहा, शाक्य, मौर्य, हार्डिया, सागरवंशी माली, मराठी माली, गुजराती रामी माली, फूल माली, रेड्डी सहित अनेकों गौत्रों से पहचाने जाने वाले समाज को एक मंच पर लाने का कार्य प्रमुखता से कर रही है।

आपने माली समाज में स्नेह मिलन, सम्मान समारोह और महिलाओं के जनजगारण के हेतु अनेकों कार्यक्रमों का आयोजन प्रमुखता से कर सामाजिक चेतना और जागृति को प्रत्यारोपित किया, माली समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों, कप्रथाओं तथा पुरानी मान्यताओं के प्रति लोगों को आगाह किया। महिलाओं तथा बच्चियों की शिक्षा के लिए लोगों को प्रेरित किया। पिछड़े वर्ग की सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक विकास के विचारों को सुदृढ़ करने हेतु समाज को संगठित होने के लिए विशेष प्रयास कर रही है। यहीं नहीं समाज की महिलाओं को मुख्यधारा में जोड़ने के लिए पूरे देश में विशेष तौर पर राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश में महिलाओं को जिला अध्यक्ष, प्रांताध्यक्ष तथा प्रदेश अध्यक्ष तोर पर नियुक्त करके माली समाज के संगठनों को मजबूती प्रदान की। महिलाओं में सामाजिक, शैक्षणिक तथा राजनैतिक चेतना का विकास किया है।

महिलाओं के उत्थान के लिए कार्य करने पर अलका सैनी को सावित्री बाई फूले पुरस्कार, सेवा मनिषी पुरस्कार, रेखा गांधी पुरस्कार, श्रेष्ठ सेवा कार्य महिर्षी अवार्ड, लायंस मनिषी आवार्ड, सेवा रत्न तथा अन्य अनेकों अर्वाडों से सम्मानित किया है। आपने विभिन्न सामाजिक संगठनों तथा अनेकों स्कूलों के कार्यक्रमों में समाज सेवा तथा बच्चों को मार्गदर्शित किया है। प्रदेश तथा देश की लगभग 15 सामाजिक संस्थाओं में पदाधिकारी तथा सदस्य के रूप में सामाजिक सेवा कर रही है विशेष तोर पर पिछड़ा वर्ग की संस्थाओं में कार्य करने का आपको अनुभव है।

3 जनवरी 2005 में नीमच में राष्ट्रीय स्तर का माता सावित्री बाई फूले जागृति मंच के तत्वावधान में अधिवेशन करया जिसमें देश भर से समाज के सभी वर्गो ने हजारों की संख्या में भाग लिया। 10 मार्च, 2005 को रामलीला मैदान में पिछड़े वर्ग को साथ लेकर माली समाज की समता परिषद् संगठन के साथ समाज के वरिष्ठ राजनीतिज्ञ छगनराव भुलबल के नेतृत्व में आयोजि महारैली में सहयोग प्रदान किया था जिसमें देश भर से लाखों लोग उपस्थित हुए थे तथा अनेकों राजनीतिक दलों के अध्यक्षों ने समाज के संगठनों को साथ देने की बात कही थी।

इसके अलावा 10 मार्च, 2006 को जयपुर में समाज तथा पिछड़े वर्ग की रैली के आयोजन में भी सक्रिय सहयोग प्रदान किया। व 3 जनवरी, 2015 को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में माली समाज व पिछड़ा वर्ग द्वारा आयोजित रैली में समाज को विकास की राह दिखाई।

सामाजिक संगठनों द्वारा सम्मान पत्र :-

वर्ष 2005 में माली समाज द्वारा महात्मा ज्योतिबा फूले राष्ट्रीय जागृति मंच, जयपुर द्वारा उल्लेखनीय समाज सेवा हेतु उत्कृष्ट सेवा कार्य के लिए प्रशस्ति पत्र।

वर्ष 2008 में राज्य संत भय्यूजी महाराज द्वारा नागरिक जागरूकता सम्मान पत्र।
वर्ष 2009 में माली मित्र विभूषण मुंबई।
वर्ष 2012–13 में रेखा गांधी सम्मान पत्र सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं तथा बालिकाओं के लिए सामाजिक जागरूकता कार्य करने हेतु।
वर्ष 2012–13 में पिछड़ा वर्ग इंदौर म.प्रदेश द्वारा सावित्री बाई फूले सम्मान पत्र।
वर्ष 2013–14 में मुस्कान ग्रुप द्वारा अवार्ड सेवा मुस्कान
वर्ष 2017 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा रामजी महाजन सेवा अवार्ड साथ में 1लाख रूपये नकद पुरस्कार(जिसे समाजसेवा हेतु दान कर किया)।
लायंस क्लब द्वारा सम्मान पत्र :–
वर्ष 2006 में में लायंस एक्सिलेंट सर्विस अवार्ड।
वर्ष 2007 में सर्वश्रेष्ठ लायंस चेयरपर्सन का अवार्ड।
वर्ष 2008 में लायंस लीडरशिप और सेवा कार्य अवार्ड
वर्ष 2008 में सर्वश्रेष्ठ लायंस चेयरपर्सन शिक्षा कार्य अवार्ड।
वर्ष 2009 लायंस सर्वश्रेष्ठ सेवा तथा सर्वश्रेष्ठ सेवा कार्य अवार्ड।
वर्ष 2010 लायंस इंटरनेशनल द्वारा मेलविन जोन्स फेलोशिप द्वारा नेत्रहिनों के लिए कार्य करने पर सम्मानित।
वर्ष 2010 में लायंस एक्सिलेंट सर्विस मेम्बरशिप ग्रोथ निचली बस्तियों में सेवा कार्य करने पर।
वर्ष 2010 में लायंस क्लब इंटरनेशनल द्वारा भास्कर पत्र समूह द्वारा सेवारत्न अवार्ड
वर्ष 2014 में लायंस क्लब द्वारा स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने के लिए सेवा अवार्ड।
वर्ष 2015 में लायंस सेवा मनिषी अवार्ड।

राजनीतिक पृष्ठभूमि : –

सन् 2004 से स्वदेशी जागरण मंत्र के कार्यकर्ता, शहर प्रमुख, इंदौर संभाग प्रमुख तथा वर्तमान में उज्जैन संभाग प्रमुख के पद पर कार्य कर रही है। स्वदेशी जागरण मंच के सभी कार्य जिसमें जन आंदोलन, स्वदेशी वस्तु के प्रति जागरूकता अभियान तथा विभिन्न सामाजिक विषयों पर बैठकों का आयोजन करना सम्मलित है। स्वदेश जागरण मंच के द्वारा सभी राज्यों की बैठकों तथा आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की।
सन् 2005 से भाजपा द्वारा आयोजित वार्ड तथा शहर के कार्य में भागीदारी निभा रही है। पार्टी द्वारा समय समय पर आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रमों में अपनी सक्रिय भूमिका पार्टी कार्यकर्ता के रूप में निर्वहन किया है जिसमें प्रमुख रूप से नगर पालिका निगम द्वारा शहर तथा ग्रामीण क्षेत्र में वृक्षारोपण तथा स्वच्छ भारत अभियान में सक्रियता।

सामाजिक पृष्ठभूमि : –

वर्ष 2000 से माली समाज में शहर महिला अध्यक्ष के रूप में समाज सेवा प्रारंभ की।
वर्ष 2005 में माली समाज के प्रथम महिला प्रदेश अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए माली समाज की लगभग 18 शाखाओं को एकजूट होकर कार्य करने तथा संगठित होने के लिए प्रेरित किया।
28 फरवरी, 2012 में माली सैनी समाज की प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्षा (महिला विंग) के रूप में मनोनीत हुई। माली समाज की महिलाओं को सामाजिक कार्यक्रमों में सक्रियता से आगे लाने का कार्य किया, उन्हें अपने अधिकारों के प्रति तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी दी, उन्हें आत्मविश्वास हेतु मंच प्रदान किये। महिलाओं के लिए सामाजिक, धार्मिक विचर गोष्ठियों का आयोजन किया तथा शिक्षा हेतु विशेष प्रयास किए।
इंदौर के सभी सामाजिक संगठनों के साथ जुड़कर विभिन्न स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया।
वृद्वआश्रम, मूक बघिर संस्थान, अनाथ आश्रम, विकलांग कल्याण संघ, नेत्रहीन संगठनों, कर्मशैली जनजागरूकता संगठन, संत सांवता माली संगठन, जयपुर फुलेरा माली समाज, संयुक्त माली समाज, नावावंशी माली समाज, मौर्य समाज, कुशवाह समाज, मारवाड़ी माली समाज, गुजराती रामी समाज, रेड्डी समाज को संगठित कर एक ही झण्डे के नीचे लाने का प्रयास।
सरकारी प्राथमिक विद्यालयों को गोद लेकर बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें उचित सुविधाऐं जैसे कॉपी–किताब, युनिफार्म, स्कूल बैग आदि उपलब्ध कराना।

फिल्म एवं टीवी इण्डस्ट्रीज की कॉस्ट्यूम डिजाइनर

श्रीमती रितू देवड़ा

शायद बहुत कम लोग जानते ये जानते है कि परदे पर 'जस्सी' को जस्सी का रूप देने वाली 'रितू देवडा' तो खुद हकीकत की जिन्दगी में किसी 'जस्सी' से कम नही है। जी हाँ श्रीमती रितू देवड़ा और कोई नही बल्कि हमारे ही माली समाज का एक हिस्सा है, जिसने जोधपुर के नागौरी बेरा के ही श्री रामसिंह जी कच्छवाहा के घर जन्म लिया और जोधपुर में ही पली–बढ़ी हैं। मगर इनका असली सफर शुरू होता है जब इन्होंने जोधपुर के ही बागर चौक में रहने वाले श्री किशनलाल जी देवड़ा के पुत्र राजेन्द्र कुमार देवड़ा से शादी करके उनके साथ बम्बई आ गयी।

श्री राजेन्द्र कुमार देवड़ा स्वयं 1986 से ही फैशन की दुनियाँ से जुड़े हुए है। वे 1983 में बम्बई चार्टड एकाउन्टेन्सी का कोर्स करने के उद्देश्य से आये मगर 3 साल सी.ए. करने के बाद उन्होंने अपने आपको रेडिमेन्ट गारमेन्ट के उभरते भविष्य की ओर आकर्षित पाकर उस दिशा में काम करने लगे अपनी सुझबुझ और मेहनत से वो भी आज गारमेन्ट लाइन के देश के गिनेचुने 'टेक्लोकोमर्शियल' लोगो में से एक माने जाते है। यही वजह है कि वे देश की बड़ी टेक्टाइल मिल 'सियाराम सिल्क मिल्स' के गारमेन्ट डिविजन 'ऑक्समबर्ग' में जनरल मैनेजर के पद पर कार्यरत है जिनकी देखरेख में कम्पनी प्रतिदिन 4000 गारमेन्ट बनाती है जो हमारे देश के साथ साथ विदेशों में भी निर्यात किये जाते है।

श्रीमती रितू देवड़ा शादी करके जब मुम्बई आयी तो यहाँ अपने पति के व्यस्त कार्यकाल की वजह से उनके पास दिन में 8 से 10 घन्टे खाली समय मिलने लगा जिसे खाली बैठ कर वैसे ही गंवाना श्रीमती रितू को उचित नही लगता था, उन्हें लगता था कि मेरे पति इतनी मेहनत करते है तो उनसे प्रेरित होकर श्रीमती रितू ने भी कुछ न कुछ करने का सोचा, काफी समय तो इसी उधेड़ बुन में निकल गया फिर पति–पत्नी ने सलाह करके ये सोचा कि कोई ऐसा क्षेत्र चुना जाय जिसमें उन्हें राजेन्द्रजी की भी मदद मिल सके। आखिर उन्होंने डिजाइनिंग शुरू करने का तय किया और सबसे पहले इन्होंने पति की मदद ली। उनके दोस्त जो कि पहले लाइन में कार्यरत थे राजा बुन्देला एवम् सतीश कौशिक की सलाह पर कार्य शुरू किया। सबसे पहले उनकी ही टी.वी. सीरियल 'ओ मारिया' और 'ये शादी नहीं हो सकती' के किरदारों के कपड़ो की डिजाइनिंग शुरू की और फिर तो पहचान, कपड़ो की जानकारी एवम् काम करने की क्षमता सभी का मिला जुला परिणाम ये हुआ कि फिर रितू को कभी पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ा।

आज श्रीमती रितू का नाम टेलिविजन जगत में बड़ी ही इज्जत से लिया जाता है। टी.वी. के कास्टयुम डिजाइनिंग क्षेत्र में तो श्रीमती रितू को नम्बर वन का दर्जा हासिल है। आप कोई भी बड़े और अच्छे सीरियल की तरफ नजर डालेंगे तो पायेंगे उसके कपड़े श्रम्मती रितू द्वारा डिजाइन किये गये है। श्रीमती रितू देवड़ा के मुंबई में अनेकों बुटिक है तथा अपने गृह नगर जोधपुर में भी आपने अपना बुटिक अफीम व रेस्टोरेंट द

रॉकयार्ड खोला हुआ है जो अपनी विशेष पहचान बनाए हुए है। वह कहती है कि किसी भी काम के प्रति शत प्रतिशत समर्पण ही हमें सफलता दिला सकता है क्योंकि जब किसी काम को सच्चे दिल से हम करते है तो योग्यता भी अपने आप ही हासिल होती है और काम की योग्यता ही हमें सफल भी बनाती है।

रितू की सफलता की श्रेणी में चार चाँद और लग गये जब टेलिविजन जगत में भी पहली बार एवार्ड की घोषणा की गयी और पहली बार 'बेस्ट कास्टयूम डिजाइनर ऑफ दी इयर' का एवार्ड भी रितू को ही उनके द्वारा डिजाइन किये गये कपड़ों को जो कि 'देश में निकला होगा चाँद' के लिये दिया। जो कि काफी गर्व की बात है। आज लगभग सभी टी. वी. चैनलों के सैकड़ों धारावाहिकों मेंश्रीमती रितू देवड़ा के डिजाईन किए गए कॉस्टयूम की सभी मुक्त कंठ से प्रशंसा करते है माली सैनी संदेश परिवार को समाज की श्रीमती रितू देवड़ा पर गर्व है जिन्होंने अल्प समय में टी.वी. इण्डस्ट्रीज में जो अपना मुकाम पाया है वह हम सभी को गौरवान्वित करता है। हम श्रीमती रितू देवड़ा के उज्ज्वलत्तम भविष्य की मंगल कामना करते है।

बधिरों के लिए पूर्णतया समर्पित – ''प्रत्येक व्यक्ति की उम्मीद की संस्थान''

सुश्री मनु खण्डोलिया

जयपुर में प्रत्येक व्यक्ति की उम्मीद की संस्थान संगठन की स्थापना 2015 में सामाजिक कार्य क्षेत्र के नए दृष्टिकोण के साथ कुछ सदस्यों के साथ की गई थी। संगठन की कहानी नए से शुरू नहीं होती है क्योंकि यह बचपन से है जब मिस रजनी खडोलिया और मिस मनु खडोलिया संगठन के संस्थापक ने अपने बधिर चचेरे भाइयों को देखा था और हमेशा दैनिक जीवन में अपने दर्द और समस्याओं पर भरोसा करते थे। यह उन्हें देखने के लिए उनमें एक जोश जगाता है। जबकि उनके साथ वे भरोसा करते हैं कि हजारों और उससे भी अधिक बच्चे हैं जिन्हें उनकी मदद की जरूरत है और कई आगे के हाथों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ये बच्चे बोल या सुन नहीं सकते हैं लेकिन उनकी आँखों में दर्द और परेशानियाँ देखी जा सकती हैं। इसलिए हमारी निस्वार्थ सेवा के साथ सेवा करने के लिए एक आदर्श वाक्य के साथ संगठन की स्थापना की गई थी।

हम इस अवसर को अपने एनजीओ में उनके सामाजिक कार्य को पेश करना चाहते हैं। हमारा संगठन विशेष रूप से बहरे बच्चों के लिए काम कर रहा है। हमारा सामाजिक कारण बच्चे के चेहरे पर मुस्कान लाना है। ये विशेष बच्चे विकलांग नहीं हैं, लेकिन वे अलग–अलग तरीके से सक्षम हैं। वे हमारी दया और लाचारी के लिए पैदा नहीं हुए हैं, लेकिन वे हमें मानवता और ईश्वर की रचना के करीब रखते हैं। हाल ही में हम बिना किसी सरकार के 28 बधिर बच्चों के लिए एक केंद्र चला रहे हैं। मदद। संगठन की स्थापना 2015 में सामाजिक कार्य क्षेत्र में एक नए दृष्टिकोण के साथ कुछ सदस्यों के साथ की गई थी।

''आपको शुरू करने के लिए महान नहीं बनना है, लेकिन आपको महान बनना है'' इसलिए संगठन ने आगे आकर निर्णय लिया और तथ्य जानने के बावजूद छात्रावास खोलने का निर्णय लिया, संगठन के रूप में रास्ता आसान नहीं है क्योंकि संगठन 3 वर्ष पुराना नहीं है – वे सरकार से कोई वित्त सहायता प्राप्त नहीं कर रहे हैं, लेकिन मदद करने वाले हाथ दूर नहीं हैं। इसके अलावा कई स्वयंसेवक और सदस्य आगे आए और संगठन के नैतिक समर्थन को बढ़ावा दें। हम खुद के लिए प्रतिबद्ध हैं कि जो भी कठिनाइयाँ हैं, हम उनकी मदद करेंगे। लगातार काम और उत्साह यह परिणाम और बहरे छात्रों के लिए एक छात्रावास खोला। संगठन भी वित्तीय रूप से सक्षम नहीं हैं, लेकिन सब कुछ समायोजित कर रहे हैं और उन्हें सर्वश्रेष्ठ प्रदान कर रहे हैं। हॉस्टल अब प्रदान कर रहा है .... 28 छात्रों को मुफ्त में सुविधाएं। हॉस्टल एनवायरनमेंट होम फ्रेंडली है और प्रत्येक और हर संभव सुविधा प्रदान करता है। हम उन्हें कई कौशल गतिविधियों जैसे कि डांडिया, क्रिसमस, दिवाली, योग उत्सव के साथ शामिल करते हैं, जिसका उद्देश्य उनके कौशल को विकसित करना है और बेलोंग आश्वस्त सीखने का एक डेमो है, जो उन्हें भविष्य का लचीलापन और आशावाद के साथ भविष्य का सामना करने में सक्षम बनाता है। इन सभी के अलावा, हम स्लम एरिया के बच्चों के साथ विभिन्न त्योहारों को भी मनाते हैं और उन्हें अध्ययन सामग्री, मिठाई, फल आदि वितरित करते हैं। हम स्लम एरिया में उनके अध्ययन के लिए विभिन्न शिविरों का भी आयोजन करते हैं। हमें विश्वास है कि जब अधिक से अधिक लोगों को हमारे बारे में पता चल जाएगा कि उनकी मदद करने वाले हाथों की बहुत इच्छा होगी, क्योंकि केवल ''आप'' और ''मैं'' जैसे लोग ही एक बड़ा अंतर बना सकते हैं। हम इस कभी न खत्म होने वाली यात्रा में आपके योगदान के लिए तत्पर रहेंगे। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आप वास्तव में, इस कारण के भाग के लिए अवसर प्राप्त करने के लिए धन्य होंगे।

मिशन – सबसे बड़ी संभव उपलब्धियों के लिए बधिरों को अवसर प्रदान करना। उनकी क्षमता को समझने और उनकी सराहना करने और हर बाधा को दूर करने के लिए उनके मन को प्रज्वलित करते हैं जो उन्हें प्रत्येक जरूरतमंद तक पहुंचने और उनके चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए वापस रखती है। इस क्षेत्र में युवाओं को उनके अधिक से अधिक योगदान के लिए प्रोत्साहित करना। प्रतिभाओं के समुचित दोहन का समर्थन करना और उनके सपनों और वास्तविकता की आकांक्षा को बदलना।

28 बहरे बच्चों को उनकी शिक्षा के लिए सहायता के लिए एक मुफ्त छात्रावास चलाना और झुग्गी के बच्चों के लिए भी काम करना, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करना और जरूरतमंद छात्रों को मुख्य धारा के समाज में एकीकृत करने में मदद करना। हम समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों तक पहुँचने के उद्देश्य से एक छोटे से (किराये) घर में एक मुफ्त छात्रावास चला रहे हैं। यह विशेष बच्चों (बधिर बच्चों) को शिक्षा प्रदान करने और उनके लिए एक बोर्डिंग स्थापित करने की बुनियादी सुविधाएं प्रदान करता है। ये बच्चे जयपुर के अलावा अन्य शहरों से आते हैं और जरूरतमंद हैं। हॉस्टल बच्चों को निवास और किसी भी अन्य सहायता की आवश्यकता प्रदान करता है जिनके पास विभिन्न कारणों से शैक्षिक अवसर नहीं हैं। यद्यपि बुद्धिमान, इस क्षेत्र के लोगों ने अवसरों की कमी, आर्थिक पिछड़ेपन, गरीबी और खराब संचार के कारण शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अधिक प्रगति नहीं की है। बोर्डिंग की सुविधा बच्चों को अध्ययन के लिए उचित वातावरण प्रदान करने में मदद करेगी।

संगठन ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए कुछ कक्षाएं और मार्गदर्शन प्रदान करके अपना पहला अनुकरणीय कदम उठाया। सेठ आनंदी लाल पोद्दार बधिर सरकार में सदस्यों और स्वयंसेवकों को सांकेतिक भाषा में प्रत्येक पाठ का अनुवाद करना चाहिए। स्कूल जबकि इस परियोजना से जुड़ी चीजें वे निर्भर करती हैं कि बहुत से बधिर छात्र हैं जो शिक्षा से बचते हैं क्योंकि छात्रावास की सुविधाओं की कमी के कारण वे जयपुर के बाहरी इलाके और गांवों में रहते हैं और निजी छात्रावास का खर्च उठाने के लिए वित्तीय रूप से सक्षम नहीं हैं, वहाँ कम हैं केवल इन कारणों से इन बधिर छात्रों के लिए सरकार का कोई शैक्षणिक संस्थान नहीं, वे अभी भी स्कूली शिक्षा से परहेज कर रहे हैं, 8–10 वर्ष की आयु प्राप्त करने के बाद भी, हर साल वे एक उम्मीद के साथ आते हैं, लेकिन एक ही परिणाम प्राप्त होता है और सरकार भी नहीं है प्रभावी तरीके से अपनी नीति को लागू करना। ये छात्र शब्दों के माध्यम से अपना दर्द व्यक्त नहीं कर सकते हैं, लेकिन उनकी गीली आंखें पूरी स्थिति का वर्णन करती हैं।

संस्था का उद्देश्य :

1. महानतम संभावित उपलब्धियों के लिए बधिरों को अवसर प्रदान करना।
2. अपने पोटेंशियल को समझने और उसकी सराहना करने और अपने दिमाग को इग्नोर करने के लिए
3. हर बाधा को त्यागने के लिए जो उन्हें वापस रखती है।
4. प्रत्येक और हर जरूरतमंद तक पहुंचें और उनके चेहरे पर मुस्कान लाएं।
5. इस क्षेत्र के लिए युवाओं को उनके अधिक और अधिक योगदान के लिए प्रोत्साहित करना।
6. प्रतिभा और उनके सपनों और वास्तविकता की आकांक्षा को बदलने के लिए एक उचित दोहन का समर्थन करना।

उपलब्धियां : –

1.FMTADKA द्वारा 31 मार्च 2019 को Heart of Gold –7 का

स्वर्ण जीता
2.प्रांतीय विश्व शिक्षा संघ और अनुभव मुक्ति–शक्ति अभिभावक संघ द्वारा सम्मानित
3.सेठ आनंदी लाल पोद्दार मुख–बदिर स्कूल–ऑन वर्ल्ड डिसेबिलिटी डे 3–दिसंबर–2018 से सम्मानित
4.जयपुर अंतर्राष्ट्रीय कविता पुस्तकालय 2–दिसंबर –2018 द्वारा प्रेरणा पुरस्कार 2018 से सम्मानित
5.संजना इवेंट्स द्वारा सम्मानित किया गया
6.पुलकित अकादमी और सामाजिक संथान द्वारा सम्मानित
7.सक्षम समदृष्टि समता विकास एवं अनुसंधान मण्डल द्वारा सम्मानित
8.महात्मा फुले ब्रिगेड एवं सावित्री बाई राष्ट्रीय जागृति मंच, राजस्थान 21–जून –2018 द्वारा राष्ट्रीय नारी शक्ति गौरव पुरस्कार 2018 से सम्मानित
9.अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8–मार्च –2018 को साकार महिला विकास समति द्वारा राष्ट्रीय महिला सम्मान से सम्मानित
10.अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8–मार्च –2018 को बैंक ऑफ बड़ौदा, गोपालपुरा शाखा द्वारा सम्मानित
11.जीवन जागृति फाउंडेशन द्वारा सम्मानित 16–अप्रैल–2017
12.अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8–मार्च –2017 को स्वरा संगम द्वारा सम्मानित किया गया।

सुश्री मनु खण्डोलिया की शैक्षणिक उपलब्धियां :
2019 डिप्लोमा इन साइन लैंग्वेजेज अली यावर जंग राष्ट्रीय संस्थान, दिल्ली
2011 समाजशास्त्र के मास्टर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
2009 राजनीति विज्ञान के मास्टर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
2006 कला स्नातक, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
2014 मास्टर ऑफ सोशियोलॉजी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
2012 राजनीति विज्ञान के मास्टर, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
2010 कला स्नातक, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

फेम इंडिया मैगजीन- एशिया पोस्ट सर्वे के 25 सशक्त महिलाओं 2020 की सूची में सीमा समृद्धि कुशवाहा

निर्भया के गुनहागारों को फांसी के फंदे पर पहुंचा समाज की बेटी ने दिलाया न्याय

नई दिल्ली। सीमा कुशवाहा के अथक परिश्रम से निर्भया के दरिंदों को हुई फांसी। हमें गर्व है समाज की बेटी पर जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी हार नही मानते हुए 7 सालों तक निर्भया को न्याय दिलाने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ डटी रही।

निर्भया आपको न्याय दिला कर एक सुकून है लेकिन आपके दर्द को कम नहीं कर सके थे। और देश हजारों बेटियाँ आज भी इसी दर्द में जी रही हैं। सिस्टम कब सक्रिय रूप से कार्य करेगा? – एडवोकेट सीमा कुशवाहा

मजलूमों की सशक्त आवाज हैं सीमा समृद्धि कुशवाहा

अपने छोटे से कैरियर में ही देश के सर्वाधिक चर्चित वकीलों में अपना नाम शुमार कर चुकीं सीमा समृद्धि कुशवाहा अब किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। बहुचर्चित निर्भया गैंग रेप के अपराधियों को फांसी दिलवाने के लिए दिन–रात एक कर देने वाली सीमा वर्तमान में सुप्रीम कोर्ट और दिल्ली हाईकोर्ट में अधिवक्ता हैं। वे बचपन से ही बेहद मेधावी थीं। उन्होंने राजनीति–शास्त्र में पीजी करने के अलावे मास कम्युनिकेशन (जर्नलिज्म) का कोर्स भी किया है।

ुरू से ही समाजसेवा और सुधार के क्षेत्रों में बहुत कुछ करना चाहती थीं, इसलिए इन्होंने एल.एल.बी. की डिग्री हासिल की।

उत्तर प्रदेश के इटावा के चंबल क्षेत्र के एक मध्यमवर्गीय परिवार में बी. डी. कुशवाहा के घर में 10 जनवरी,1982 को जन्मी सीमा बचपन से ही बड़े लक्ष्यों वाली और जुझारू स्वभाव की रही हैं। चंबल जैसे दर्गाम, असुरक्षित और दकियानूसी क्षेत्र में रहने के बावजूद उन्होंने उस माहौल में भी कई–कई किलोमीटर दूर जा कर अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी की। पिता का सहयोग उन्हें हमेशा मिला। उनके पिता क्षेत्र में प्रभाव रखने वाले ग्राम–प्रधान थे।

सीमा समृद्धि कुशवाहा ने वर्ष 2006 में लॉ की डिग्री प्राप्त करने के बाद वर्ष 2007 में इलाहाबाद हाईकोर्ट से वकालत की शुरूआत की। वे वास्तव में सिविल सर्विसेज में जाना चाहती थीं लेकिन यूपीएससी द्वारा वर्ष 2011 में पाठ्यक्रम में अचानक किये गये बदलाव ने उनकी तैयारियों पर विपरीत असर डाला। वे इस बदलाव के विरुद्ध चले आंदोलन की अगुवा भी रही हैं।

समाज के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे अन्याय को देखते हुए इन्होंने वकालत के जरिये ही गरीबों और मजलूमों को न्याय दिलाने का मार्ग चुना। वर्ष 2012 में निर्भया के साथ हुए घिनौने अपराध ने उन्हें अंदर तक झकझोर दिया। उन्होंने तब ही निर्धारित कर लिया था कि निर्भया के दरिंदों को फाँसी के फंदे तक पहुँचा कर रहेंगी। इंदिरा गांधी को अपना आदर्श मानने वाली सीमा समृद्धि राजनीति में आ कर बड़े नेतृत्व को निभाने की भी तैयार में हैं। वे राजनीति को समाज में बदलाव का सशक्त माध्यम मानती हैं। वर्तमान में सीमा "निर्भया समृद्धि ट्रस्ट" व "महात्मा ज्योतिबा फुले फाउण्डेशन " की लीगल एडवाइजर हैं।

समाजसेवी के रूप में सीमा सैकड़ों लोगों की मदद कर रहीं है जिनमें रेप, घरेलू हिंसा की शिकार महिलाएं ज्यादा हैं। वे देश भर के कई ऐसे मामलों में वकील हैं।

समाज की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ ही देश विदेश से निर्भया को न्याय दिलाने के लिए सीमा कुशवाहा को हार्दिक बधाई प्रेषित की। हमें समाज की होनहार युवा अधिवक्ता की काबिलियत पर गर्व है आप समाज की युवा पीढ़ी एवं मातृ शक्ति के लिए आदर्श है।

शिक्षा प्रेमी, प्रथम महिला महापौर, नगर निगम, जोधपुर

डॉ. (सुश्री) ओमकुमारी गहलोत

आपका जन्म सन् 1937 में पिता श्री बस्तीराम गहलोत के यहाँ हुआ। आपने शिक्षा विभाग, राज्य सरकार की नौकरी पर रहते हुए, डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की तथा सहायक उप–निदेशक के पद से सेवानिवृत हुई। आप 12 वर्ष तक लगातार संयुक्त सचिव पद पर (भारत स्काउट गाइड, जोधपुर मण्डल की) रही तथा वर्तमान में उप–प्रधान पद पर कार्यरत है। आप जिला कलेक्टर द्वारा सात बार विभिन्न कार्य क्षेत्र में सम्मानित की गई। समाज द्वारा 1985 में समाज विभूषण सम्मान से विभूषित किया गया। 1983 में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कर्ष सेवाओं के लिए राज्यपाल राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित किया गया तथा 1999 में बार–टू मेडल ऑफ मेरिट पदक प्रदान किया गया। आपने वैदिक कन्या उ.मा.विद्यालय में एक कक्ष का निर्माण, चौपासनी विट्ठलेश्वर में एक 'हट' का निर्माण करवाया। हरिद्वार जोधपुर भवन में निर्माण हेतु 31,000 रूपये एवं पावटा अस्पताल में भी आर्थिक सहयोग दिया। आप वार्ड सं. 41 नगर निगम जोधपुर से 1989 में पार्षद चुनी गई तथा 04.11.2004 को इसी वार्ड से पुनः पार्षद जीत कर महापौर, नगर निगम के पद को सुशोभित किया।

डॉ ओमकुमारी ने अपने अनुभव कुछ इस तरह साझा किया उन्होंने कहा कि महिला संवेदनशील होती है। उन्होंने कहा वो स्वयं सरकारी नौकरी में रही। यहां प्रशासनिक कार्यकाल रहा तो जब महापौर का काम देखना शुरू किया तो बहुत ज्यादा कठिनाई नहीं आई। कई बार प्रशासनिक होती थी लेकिन अच्छी बात यह थी की मेरे सारे साथी अधिकारी आईएएस रहे।

उनकी और मेरी मानसिकता से अधिक से अधिक काम करवाने की थी। मेरे समय में सरकार भाजपा की थी और बोर्ड कांग्रेस का था। ऐसे में बजट की सबसे ज्यादा समस्या रही। सरकार का सहयोग कम था। सरकार ने चुनौती दी कि खुद कमाओ और खर्च करो। इसे भी हमने स्वीकार किया। सरकारी विभागों से अधिकांश वसूली की। 60 पार्षद थे उस समय, उन्होंने जो मांगा और जितनी आमदनी थी उस हिसाब से काम करवाया।

प्रशासनिक अधिकारी, उप आयुक्त नगर निगम, जोधपुर

श्रीमती रेणु सैनी

नाम : **रेणु सैनी**
धर्मपत्नी : राजेन्द्रकुमार (DTO, Jodhpur)
पिता : किशनलाल सैनी (होटल मनीष, होटल कृष्णा पैलेस)
अध्यक्ष, किशनगढ़ होटल एवं गेस्ट हाऊस एसोशियशन
महामंत्री, राजस्थान माली सैनी महासभा
शिक्षा : बी.ए.
उपलब्धियां : वर्ष 1998 आठवीं बोर्ड में मेरिट,
वर्ष 2012 कक्षा 12वीं में राजस्थान में 42वां स्थान गार्गी पुरस्कार सम्मानित
राजस्थान के मुख्यमंत्री द्वारा 3 बार सम्मानित (माली संस्थान, जोधपुर)

2007 मे प्रथम बार में आरएएस की परीक्षा पास की और एक्साईज इंस्पेक्टर में नियुक्ति मिली। 2010 में पुनः आर ए एस की परीक्षा पास की और राज्य सेवा में CTO (Assistant Commercial TaX Officer) पद पर नियुक्ति मिली।

2012 में पुनः आर ए एस की परीक्षा पास की और राजस्थान प्रशासनिक सेवा के पद पर नियुक्ति मिली तब आपने एसडी ओ भीनमाल, बागोड़ा, पोकरण के पद पर कार्य किया साथ ही पी ओ सिरोही के पद पर भी अपनी सेवाएं प्रदान की।

वर्तमान में आप नगर निगम, जोधपुर में डिप्टी कमिश्नर के पद पर अपनी सेवाएं प्रदान कर रही है। आप तेज तर्रार ऑफिसर के रूप में अपनी विशेष पहचान रखती है। आपकी प्रशासनिक क्षमताओं एवं कार्यशैली से अनेकों समस्याओं का निदान कर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। समाज की युवा प्रशासनिक अधिकारी के रूप में आप समाज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरक व्यक्तित्व है। हमें आप पर गर्व है।

जिनके लिए समाज सेवा ही जीवन का लक्ष्य है, निःस्वार्थ समाज सेविका

डॉ. मोनिका सैनी

पिता का नाम :जेसाराज टाक
माता का नाम :मांगीदेवी टाक
जन्मतिथि :18 जनवरी, 1969
जन्म सीन :लाडनूं राजस्थान
पति : मुरलीधर सैनी पुत्र स्व. रावतमल सैनी

व्यवसाय : समाजसेवा
शिक्षा : एम. ए. (2013) क्रियेटिव राइटिंग इन इंग्लिश, पी.एच.डी.

सामुदायिक सहभागिता : अध्यक्ष, वन संरक्षण एवं पर्यावरण समिति, सरदारशहर। जिलाध्यक्षा, सैनी महिला मण्डल। तहसील संयोजिका नेत्रदान, रक्तदान, जनजागरण अभियान। उप प्रधान, स्काउट गाईड स्थानीय ईकाई, सरदारशहर

सदस्या : द आई बैंक सोसायटी, राजस्थान। जिला सीएलजी सरदारशहर। जिला स्वास्थ्य सहलाहकार समिति, चुरू। राज. एस.बी.डी. महाविद्यालय विकास समिति सरदारशहर। रेड क्रॉस सोसायटी, चुरू

आजीवन सदस्या : अपना घर, भरतपुर

कार्यकारिणी सदस्य : गर्भस्थ शिशु संरक्षण समिति सरदारशहर

लक्ष्य : अधिक से अधिक लोगों को रक्तदान हेतु प्रेरित करना। नेत्रदान महादान, इसे जनमानस को समझाना एवं प्रेरणा हेतु सद्प्रयास करना। पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों में जनजागरूकता लाना, वन विभाग के कार्यक्रमों से आम जन को जोड़ना। कन्या भ्रुण हत्या एक जघन्य अपराध है, इस बात का व्यापक प्रचार–प्रसार करना एवं कन्या भ्रुण हत्या रोकने हेतु सतत प्रयत्नशील रहना। बालिकाएं परमात्मा की श्रेष्ठ कृति है। बालक बालिका का भेद मिटाने हेतु प्रयास करना। बालिका शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु तन मन धन से सहयोग करना समाज में व्याप्त कुरीतियों यथा दहेज, मृत्युभोज, बाल विवाह के दुष्परिणामों से जनमानस को अवगत कराने हेतु प्रयास करना।

सम्मान : जिला प्रशासन द्वारा रक्तदान, जन जागरण अभियान, नेत्रदान हेतु वर्ष 2013 में। जिला प्रशासन द्वारा बालिका शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, वृक्षारोपण, गौसेवा एवं शिशु संरक्षण हेतु श्रेष्ठ कार्य हेतु वर्ष 2017 में। राजस्थान सरकार वन विभाग द्वारा वृक्ष वर्धक पुरस्कार 2016 में।

विश्वविद्यालय की अधिष्ठाता, समाजसेविका, लेखिका शिक्षा शास्त्र में डाक्टरेट, 25बार रक्तदान करने का गौरव लेखिका, कवियत्री, अंतराष्ट्रीय स्तर पर शोध पत्र का प्रकाशन, मातृशक्ति, नारी शक्ति अवार्ड सम्मानित, उत्कृष्ट वक्ता, पयार्वरण सरंक्षक, युवाओं की प्रेरक व्यक्तित्व

डॉ. अरुणा अंचल (सैनी)

समाज में कुछ महिलाएं ऐसी हैं जो फर्श से अर्श तक का सफर बड़ी तनमन्यता से पूरा करती हैं। ऐसी ही एक नारी हैं बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय की अधिष्ठाता एवं कबीर अनुभूति सेवा समिति की निदेशक डॉ. अरूणा अंचल।

समाज में कुछ महिलाएं ऐसी हैं जो फर्श से अर्श तक का सफर बड़ी तनमन्यता से पूरा करती हैं। समाज में ऐसी नारियों को जहां पूरा सम्मान मिलता है वहीं आने वाली पीढ़ी उनसे प्रेरणा भी लेती है। ऐसी ही एक नारी हैं बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय की अधिष्ठाता एवं कबीर अनुभूति सेवा समिति की निदेशक डॉ. अरूणा अंचल।

डॉ. अरूणा अंचल का जन्म 27 अगस्त को पंजाब के आदमपुर में हंसराज सैनी के घर हुआ। उनकी शादी रोहतक के कृष्ण सैनी के साथ हुई। शिक्षा में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त डॉ. अरूणा अंचल एक समाजसेविका, लेखिका के साथ एक पथ प्रदर्शक शिक्षक भी हैं। एक साधारण से परिवार में जनमी डॉ. अरूणा शुरू से ही मेहनत करने की धनी रही हैं। पांच बहनों में ये मंजली हैं। अपने पिता से इन्होंने 'सादा जीवन उच्च विचार' पर आगे बढ़ती रही। पिता एक फौजी थे जिसके कारण इनकी पढ़ाई भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हुई। जल्दी ही इनका विवाह रोहतक के कृष्ण सैनी से हो गया। शादी एक ऐसे परिवार में हुई जहां इनको खेत व गायें–भैंस की देखभाल करनी पड़ती थी। पर फिर भी अपने पढ़ाई को आगे बढ़ाने की बात अपने पति के सामने रखी और पति की सहायता से पढ़ाई पूरी की।

अपने पति का हाथ बंटाने के लिए घर के काम करने के साथ–साथ पठानिया पब्लिक स्कूल में बतौर शिक्षक कार्य शुरू किया। यहां एक दशक कार्य करने के बाद इन्होंने झज्जर में प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया। परिवार को ऊपर उठाने के लिए इन्होंने अपनी पढ़ाई फिर शुरू की और शिक्षा शास्त्र में डाक्टर की उपाधि प्राप्त कर शिक्षण महाविद्यालय में प्राचार्या के रूप में एक दशक निकाला। यहां से इन्होंने पीछे मुडकर नहीं देखा। इसके साथ–साथ डॉ. अरूणा आंचल सामाजिक कार्यों के लिए भी तन–मन–धन से जुट गई। महिलाओं तथा कन्याओं को हर तरह से जागरूक करने के लिए उनसे जुड़ गई। इसके लिए उन्होंने सबसे पहले अपने परिवार से शुरूआत की।

आज अपनी मेहनत से ये बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय में शिक्षा विभाग की अधिष्ठाता व विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। पिछले दो दशकों से शिक्षण कार्य में हैं।

डॉ. अरूणा 25 बार रक्तदान कर चुकी हैं। यह प्रेरणा उन्हें अपने पिता जो एयरफोर्स से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं, उनसे मिली। इनकी कई शोध पत्र अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। इनकी बहुत सी कवितायें, लेख आदि अखबारों, पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके हैं। इन्हें वृंदावन शोध संस्थान, भारत उत्थान उनयास की तरफ से शाश्वत सम्मान कला व साहित्य के लिए सम्मानित किया गया है। इन्हें नई दिल्ली यूथ पार्लियामेंट की तरफ से उत्कृष्ट वक्ता, मातृ शक्ति अवार्ड, हरियाणा कला परिषद्, इंटरनेशनल एंपावर्ड वूमेन, साइंस एंड टेक्रोलोजी आर्गेनाइजेशन नई दिल्ली, नारी शक्ति अवार्ड तथा ऑल इंडिया रेडियो नई दिल्ली की तरफ से भी उत्कृष्ट वक्ता से नवाजा गया। इसके साथ ही रोहतक रेडियो स्टेशन पर नशा मुक्ति दिवस पर कविता वाचन कर चुकी हैं। इसके साथ और भी बहुत से सम्मान इनकी झोली में हैं। यह पर्यावरण संरक्षण के रूप में भी मानी जाती हैं। डॉ. अरूणा प्रमुख रूप से किशोर बच्चों पर काम कर रही हैं। यह उन्हें सकारात्मक शिक्षा के रूप में बात करती हैं तथा काउंसलिंग भी करती हैं।

हम सभी को अरूणा अंचल पर गर्व है आप आज की युवा पीढ़ी के लिए आदर्श है।

विश्व की सबसे छोटी कथा वाचिका

देवी ममता

जन्म–देवी ममता का जन्म माली समाज के सांखला गौत्र में विक्रम संवत् 2059 के श्रावण ुक्ल पक्ष तृतीया (हरियाली तीज) 23. 7. 2001 को राजस्थान के नागौर शहर के राठौड़ी कुआं मौहल्ले में हुआ। माताश्री का नाम श्रीमती पार्वती देवी एवं पिताश्री का नाम श्री श्री 1008 महामण्डलेश्वर स्वामी कुशालगिरी जी महाराज है।

आप विश्व की सबसे छोटी कथा वाचिका है तथा अब तक सैकड़ों कथाओं के विशाल आयोजन से पूरे देश में प्रसिद्ध है आपके पिताश्री महामण्डलेश्वर कुशाल गिरी जी महाराज ने विश्व स्तरीय श्री कृष्णा गौपाल गौशाला के माध्यम से हजारों बिमार गायों की सेवा का गौ सेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है इस गौशाला में प्रतिदिन सैकड़ों बिमार गायों की सेवा अत्याधुनिक ऑपरेशन थियेटर में ऑपरेशन एवं उत्कृष उचिकित्सों द्वारा इलाज किया जाता है देवी ममता अपने पिताजी के विचारों से प्रभावित हो न केवल कथा वाचन करती है वरन् गौ–सेवा के कार्यो में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती हैं।

आपकी कथाएं प्रदेश के अलावा देश के विभिन्न शहरों में आयोजित होती है तथा कथा स्थल क्षेत्र में गो–सेवा के लिए आप लाखों रूपये की आर्थिक सहायता भी प्रदान करती है। समाज की इस छोटी सी कथा वाचिका की कथा सुनने हतारों धर्मप्रेमी उपस्थित रहते है।

माली सैनी संदेश के आजीवन सदस्यता सूची

श्री रामचंद्र गोविंदराम सोलंकी, जोधपुर
श्री नरेश स्व. श्री बलदेवसिंह गहलोत,जोधपुर
श्री प्रभाकर टाक (पूर्वअध्यक्ष नगर पालिका), पीपाड़
श्री बाबूलाल(पूर्व अध्यक्ष नगर पालिका), पीपाड़
श्री बंशीलाल मरोठिया, पीपाड़
श्री बाबूलाल पुत्र श्री दयाराम गहलोत, जोधपुर
श्री सोहनलाल पुत्र श्री हापुराम देवड़ा, मथानियां
श्री अमृतलाल पुत्र श्री ब्रह्मसिंह परिहार, जोधपुर
श्री भोमाराम पंवार(पूर्व उपा., नगरपालिका, बालोतरा
श्री रमेशकुमार पुत्र श्री शंकरलाल गहलोत, बालोतरा
श्री लक्ष्मीचंद पुत्र श्री मोहनलाल सुंदेशा, बालोतरा
श्री वासूदेव पुत्र श्री बाबूलाल गहलोत, बालोतरा
श्री मेहश पुत्र श्री भगवानदास चौहान, बालोतरा
श्री हेमाराम पुत्र श्री रूपाराम पंवार, बालोतरा
श्री छगनलाल पुत्र श्री मिश्रीलाल गहलोत, बालोतरा
श्री सोनाराम पुत्र श्री देवाराम सुंदेशा, बालोतरा
श्री सुजाराम पुत्र श्री पुनम सुंदेशा, बालोतरा
श्री नरेन्द्रकुमार पुत्र श्री अणदाराम पंवार, बालोतरा
श्री शंकरलाल पुत्र श्री मिश्रीमल परिहार, बालोतरा
श्री घेवरचंद पुत्र श्री भोमजी पंवार, बालोतरा
श्री रामकरण पुत्र श्री किशनाराम माली, बालोतरा
श्री रतन पुत्र श्री देवजी परिहार, बालोतरा
श्री मोहनलाल पुत्र श्री रतनाजी परमार, बालोतरा
श्री कैलाश काबली(अध्यक्ष माली समाज), पाली
श्री घीसाराम देवड़ा(मं. महामंत्री, भाजपा), भोपालगढ़
श्री शेषाराम पुत्र श्री मांगीलाल टाक, पीपाड़
श्री बाबूलाल माली,(पूर्व सरपंच, महिलावास) सिवाणा
श्री रमेशकुमार सांखला, सिवाणा
श्री श्रवणलाल कच्छवाहा, लवेरा बावड़ी
संत श्री हजारीलाल गहलोत, जैतारण
श्री मदनलाल गहलोत, जैतारण
श्री राजूराम सोलंकी, जालोर
श्री जितेन्द्र जालोरी, जालोर
श्री देविन लच्छाजी परिहार, डीसा
श्री हितेशभाई मोहनभाई पंवार, डीसा
श्री प्रकाश भाई नाथालाल सोलंकी, डीसा
श्री मगनलाल गीगाजी पंवार, डीसा
श्री कांतिभाई गलबाराम सुंदेशा, डीसा
श्री नवीनचंद दलाजी गहलोत, डीसा
श्री शिवाजी सोनाजी परमार, डीसा
श्री पोपटलाल चमनाजी कच्छवाहा, डीसा
श्री भोगीलाल डायाभाई परिहार, डीसा
श्री मुकेश ईश्वरलाल देवड़ा, डीसा
श्री सुखदेव वक्ताजी गहलोत, डीसा
श्री दरगाजी अमराजी सोलंकी, डीसा
श्री भरतकुमार परखाजी सोलंकी, डीसा
श्री जगदीश कुमार रमाजी सोलंकी, डीसा
श्री किशोरकमुार सांखला, डीसा
श्री बाबूलाल गीगाजी टाक, डीसा
श्री देवचंद, रगाजी कच्छवाहा, डीसा
श्री सतीशकुमार लक्ष्मीचंद सांखला, डीसा
श्री गणपतलाल नारायण सोलंकी, डीसा
श्री रमेशकुमार भूराजी परमार, डीसा
श्री वीराजी चेलाजी कच्छवाहा, डीसा
श्री सोमाजी रूपाजी कच्छवाहा, डीसा
श्री शंकरलाल नारायणजी सोलंकी, डीसा
श्री फुलाजी परखाजी सोलंकी, डीसा
श्री अशोककुमार पुनमाजी सुंदेशा, डीसा
श्री देवाराम पुत्र श्री मांगीलाल परिहार, जोधपुर
श्री संपतसिंह पुत्र श्री बींजाराम गहलोत, जोधपुर
श्री भगवानराम पुत्र श्री अचलुराम गहलोत, जोधपुर
श्री जितेन्द पुत्र श्री प्रेमसिंह कच्छहा, जोधपुर
श्री सीताराम पुत्र श्री रावतमल सैनी, सरदारशहर
श्री जीवनसिंह पुत्र श्री शिवराज सोलंकी, जोधपुर
श्री घेवरजी पुत्र श्री भोमजी, सर्वोदय सोसायटी, जोधपुर
श्री जयनाराण गहलोत, चौपासनी चारणान, मथानियां
श्री अशोककुमार, श्री लक्ष्मीनारायण सोलंकी, जोधपुर
श्री मोहनलाल, श्री पुरखाराम परिहार, चौखा, जोधपुर
श्री प्रेमकिशन पुत्र श्री भंवरलाल सोलंकी, चौखा
श्री हरीसिंह पुत्र श्री चुन्नीलाल गहलोत, जैसलमेर
श्री विजय परमार, तुषार मोटर्स एण्ड कंपनी, भीनमाल
श्री भंवरलाल पुत्र श्री किस्तुर सोलंकी, भीनमाल
श्री शिवलाल परमार, भीनमाल
श्री ओमप्रकाश परिहार, राजस्थान फार्मेसिया, जोधपुर
श्री प्रेमप्रकाश सैनी, मिलन रेस्टोरेण्ट, सीकर
श्री लक्ष्मीकांत पुत्र श्री रामलाल भाटी, सोजतरोड़
श्री रामअकेला, पुत्र श्री गोकुलराम सैनी, पीपाड़ शहर
श्री नरेश देवड़ा, देवड़ा मोटर्स, जोधपुर
श्री प्रेमसिंह सांखला, सांखला सिमेंट, जोधपुर
श्री कस्तुरराम पुत्र श्री हिमाजी सोलंकी, भीनमल
श्री सांवरराम परमार, भीनमाल
श्री भारताराम परमार, भीनमाल
श्री विजय पुत्र श्री गुमानराम परमार, भीनमाल
श्री डी. डी. पुत्र श्री भंवरलाल भाटी, जोधपुर
श्री ब्रजमोहन पुत्र स्व. श्री रामस्वरूप परिहार, जोधपुर
श्री प्रेमसिंह पुत्र श्री किशोरलाल परिहार, जोधपुर
श्री जयसिंह पुत्र श्री ओमदत्त गहलोत, जोधपुर
श्री मनोहरलाल पुत्र श्री मदनलाल गहलोत, जोधपुर
श्री समुन्द्रसिंह पुत्र श्री नारायणसिंह परिहार, जोधपुर
श्री हिम्मतसिंह पुत्र श्री हरीसिंह गहलोत, जोधपुर
श्री हनुमानसिंह पुत्र श्री बालूराम सैनी, आदमपुरा
श्री अशोक सांखला, पीपाड़
श्री अशोक पुत्र श्री सोहन सांखला, जोधपुर
श्री नटवरलाल माली, जैसलमेर
श्री दिलीप तंवर, जोधपुर
श्री महेन्द्रसिंह पंवार, जोधपुर
श्री संपतसिंह गहलोत, जोधपुर
श्री जगदीश सोलंकी, जोधपुर
श्री मुकेश सोलंकी, जोधपुर
श्री श्यामलाल गहलोत, जोधपुर
श्री अमित पंवार, जोधपुर
श्री राकेशकुमार सांखला, जोधपुर
श्री रविन्द्र गहलोत, जोधपुर
श्री रणजीतसिंह भाटी, जोधपुर
श्री तुलसीराम कच्छवाहा, जोधपुर
सैनी उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़
माली श्री मोहनलाल परमार, बालोतरा
श्री अरविंद सोलंकी, जोधपुर
श्री सुनील गहलोत, जोधपुर
श्री कुंदनकुमार पंवार, जोधपुर
श्री मनीष गहलोत, जोधपुर
श्री योगेश भाटी, अजमेर
श्री रामनिवास कच्छवाहा, बिलाड़ा
श्री प्रकाशचंद सांखला, ब्यावर
श्री झूमरलाल गहलोत, जोधपुर
श्री गुमानसिंह गहलोत, जोधपुर
श्री अशोक सोलंकी, जोधपुर
श्री महावीर सिंह भाटी, जोधपुर
श्री जयप्रकाश कच्छवाहा, जोधपुर
श्री अशोक टाक, जोधपुर
श्री नरेन्द्रसिंह गहलोत, जोधपुर
श्री मदनलाल गहलोत, सालावास, जोधपुर
श्री नारायणसिंह कुशवाहा, मध्य प्रदेश
श्री भंवरलाल देवड़ा, बावड़ी, जोधपुर
श्री जवाराराम परमार, रतनपुरा (जालोर)
श्री रूड़ाराम परमार, सांचौर
श्री जगदीश सोलंकी, सांचौर
श्री कपूरचंद गहलोत, मुबंई
श्री टीकमचंद प्रभुराम परिहार, मथानिंया
श्री अरूण गहलोत, गहलोत क्लासेज, जोधपुर
श्री विमलेश नेनाराम गहलोत, मेड़तासिटी (नागौर)
श्री कैलाश ऊँकारराम कच्छवाहा, जोधपुर
माली (सैनी) सेवा संस्थान सब्जी मण्डी, पीपाड़
श्री मदनलाल सांखला, बालरंवा
श्री भीकाराम खेताराम देवड़ा, कुड़ी फार्म, तिंवरी
श्री गणपतलाल सांखला, तिंवरी
श्री रामेश्वरलाल गहलोत, तिवंरी
श्री देवाराम हिरालाल माली, मुंबई,
श्री घनश्याम झुमरलाल टाक, खेजड़ला
श्री मिश्रीलाल जयनारायण कच्छवाहा, चौखा, जोधपुर
अखिल भारतीय माली (सैनी) सेवा सदन, पुष्कर

चेन्नई माली समाज के अध्यक्ष शिवलाल माली का आकस्मिक निधन

चेन्नई। माली समाज ट्रस्ट की रीढ़ की हड्ड़ी ओर एक तरह से कहे तो बच्चे बच्चे की जुबान पर रहने वाले हमेशा खुशमिजाज मिलनसार प्रतिभा के धनी चेन्नई माली समाज अध्यक्ष शिवलाल माली का आकस्मिक निध्न हो गया। शिवलाल माली हमेशा समाज को जोड़ने एक दूसरे के सहयोग करने वाले चाहे वो तन, मन और धन हो और आपसी तालमेल बिठाने में माहिर थे। किसी भी तरह का कोई रोब कोई हठधर्मिता जैसे लोभ उनमें नाम मात्र भी नही था।

उनका बस एक ही सपना हमारा समाज एक हो सब साथ में बैठे और अपने 3 साल के कार्यकाल में लगभग आप ने अपने समाज के हर एक व्यक्ति से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित किया और समाज से सभी को जोड़ कर रखा और मंदिर भवन की तीसरी वर्षगांठ के तीसरे दिन आप श्री वैंकूठ धाम मे पधार गए होनी को काई नहीं टाल सकता लेकिन समाज ने एक अनमोल युवा समाजसेवी खो दिया है। समाज की अनेकों संस्थाओं एवं पदाधिकारियों ने शिवलाल माली के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया है।

समाज के सच्चे समाजसेवी श्री शिवलाल माली के जाने से जो रिक्तता हुई ही उसे कभी भरा नही जा सकता है। हम सभी ईश्वर से प्रार्थना करते है दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान कर अपने श्री चरणों में स्थान दे और परिजनों को यह असीम दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

श्री सुगनाराम पुत्र श्री बुधाराम भाटी, पीपाड़ शहर
श्री पारसराम पुत्र श्री जयसिंह सोलंकी, जोधपुर
श्री रूपचंद पुत्र श्री भंवरलाल मरोठिया, पुष्कर
श्री धनाराम पुत्र श्री जुगाराम गहलोत,सालावास, जोधपुर
श्री कृपाराम पुत्र श्री आईदान सिंह परिहार, चौखा,जोधपुर सरपंच श्री रामकिशोर पुत्र श्री हप्पाराम टाक, बालरवां
श्रीमती अंजू(पं.समिति सदस्य), सुपुत्री श्री ढ़लाराम गहलोत, चौपासनी चारणान
श्री केवलराम पुत्र श्री शिवराम गहलोत, चौपासनी चारणान
श्री रामेश्वर पुत्र श्री सवाई राम परिहार, मथानियां
सरपंच श्रीमती मिनाक्षी पत्नी श्री चद्रसिंह देवड़ा, मथानियां
सरपंच श्रीमती गुड्डी पत्नी श्री खेताराम परिहार, तिंवरी
श्री अचलसिंह पुत्र श्री रूपाराम गहलोत, तिंवरी
श्रीमती रेखा(उप प्रधान) पत्नी श्री संजय परिहार, मथानियां
श्री चैनाराम पुत्र श्री माणकराम देवड़ा, मथानियां
श्री अरविंद पुत्र श्री भंवरलाल सांखला, मथानियां
श्री उम्मेद सिंह टाक पुत्र स्व. सेठ श्री कनीराम टाक, जोधपुर
श्री गिरधारीराम पुत्र श्री राजुराम कच्छवाहा, खींवसर
श्री देवेन्द्र सिंह पुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह गहलोत
श्री मदनलाल (ग्राम सेवक) पुत्र श्री सोमाराम गहलोत, मथानियां
श्री लिखमाराम सांखला पुत्र श्री छोटुराम सांखला, रामपुरा भाटियान, तिंवरी
सरपंच श्रीमती संजू पत्नी श्री हुकमाराम सांखला, रामपुरा भाटियान, तिंवरी
श्री श्यामलाल पुत्र श्री मांगीलाल गहलोत, मथानियां त. तिंवरी
श्री खेताराम सोलंकी, लक्ष्मी स्टोन कटिंग, पीपाड़ शहर

श्री गोबरराम पुत्र श्री हरीराम कच्छवाहा, पीपाड़ शहर
श्री शंभु पुत्र श्री मूलचंद गहलोत, अजमेर
श्री रामनिवास पुत्र श्री पूनाराम गहलोत, जोधपुर
श्री धर्माराम सोलंकी, सोलंकी खाद बीज, जोधपुर
श्री धनराज पुत्र श्री राणाराम सोलंकी, पीपाड़ शहर
श्री संपतराज पुत्र श्री बाबूलाल सैनी, पीपाड़ शहर
सी. ए. श्री महेश पुत्र श्री आनंदीलाल गहलोत, जोधपुर
श्री हनुमान सिंह गहलोत, हनुमान टेंट हाऊस, जोधपुर
श्री मयंक पुत्र श्री दीनदयाल देवड़ा, जोधपुर
श्री नित्यानंद पुत्र श्री धनसिंह सांखला, जोधपुर
श्री महेश पुत्र श्री अमरसिंह गहलोत, जोधपुर
श्री ओमप्रकाश पुत्र श्री धनसिंह गहलोत, जोधपुर
श्री कैलाश पुत्र श्री श्यामलाल गहलोत, जोधपुर,
श्री भारतसिंह पुत्र श्री लिखमाराम कच्छवाहा, जोधपुर
श्री संदीप पुत्र श्री नृसिंह कच्छवाहा, जोधपुर
श्री धमेन्द्र पुत्र श्री संतोष सिंह गहलोत, जोधपुर
श्री निर्मल सिंह (एस.ई.)पुत्र श्री भजनसिंह कच्छवाहा, जोधपुर
श्री महेन्द्रसिंह कच्छवाहा(चैयरमेन, पीपाड़) पुत्र श्री पुखराज कच्छवाहा, पीपाड़
श्री अमृतलाल टाक पुत्र श्री चेनाराम टाक, बुंचकला, पीपाड़
श्री चांदरतन पुत्र श्री माणकचंद सांखला, बीकानेर
श्री कमलेश पुत्र श्री मुल्तान सिंह कच्छवाहा, पीपाड़ शहर
श्री सहीराम पुत्र श्री हिन्दुराम गहलोत, पीपाड़ शहर
श्री मनमोहन पुत्र श्री मनोहर सिंह सांखला, जोधपुर
श्रीमती कमला धर्मपत्नी श्री रमेशचंद्र माली, जोधपुर
श्री दशरथ पुत्र श्री विशन सिंह गहलोत, जोधपुर
श्री राजकुमार पुत्र श्री रतनलाल सोलंकी, जोधपुर
श्री मेवाराम पुत्र स्व. श्री नारायण सोलंकी, जोधपुर
श्री गंगाराम पुत्र श्री हरीराम सोलंकी, जोधपुर
डॉ. हिरालाल पुत्र श्री मादुराम पंवार, जोधपुर

श्री गंगाराम पुत्र श्री किशनलाल सोलंकी, जोधपुर
श्री धरमाराम भाटी, अध्यक्ष क्षत्रिय माली समाज माधपुर (तमिलनाडु)
श्री राहुल भाटी सुपुत्र श्री जितेन्द्रसिंह भाटी, जोधपुर
श्री किसनाराम देवड़ा, श्री जी एन्टरप्राइजेज, जोधपुर
श्री(इंजि.)तेजप्रताप पुत्र श्री मंगलसिंह गहलोत, जोधपुर
श्री अभय सिंह पुत्र श्री मांगीलाल गहलोत, जोधपुर
श्री विरेन्द्र सिंह पुत्र श्री आनंदसिंह गहलोत, जोधपुर
श्री सोहनलाल पुत्र श्री नेपाराम देवड़ा, बालरंवा, तिंवरी
श्री अमृत सांखला, फ्यूचर प्लस क्लासेज, जोधपुर
श्री चेतन देवड़ा पुत्र स्व. श्री मानसिंह देवड़ा, जोधपुर
श्री अरविंद गहलोत (पार्षद) पुत्र श्री मांगलाल गहलोत, जोधपुर
सीए श्री अर्जुन पुत्र श्री कांतिलाल परिहार, बाली, पाली
श्री पप्पुराम पुत्र श्री रामचंद्र गहलोत, चौखा, जोधपुर
डॉ. श्री महेन्द्र भाटी 'त्रिकाल', रायपुर, पाली
श्री रोहित पुत्र श्री राजेन्द्र सिंह गहलोत, जोधपुर
श्री रामेश्वर सिंह पुत्र स्व. लाल सिंह सांखला, जोधपुर
श्री जगन्नाथ सिंह पुत्र श्री मेघसिंह गहलोत, जोधपुर
श्री हुक्माराम भाटी पुत्र श्री सुखदेवराम भाटी, जोधपुर
श्री श्याम लाल पुत्र श्री बुद्वाराम भाटी, पीपाड़ शहर
श्री लक्ष्मीचंद पुत्र श्री रामकिशन माली, करौली
श्री चेतन सिंह पुत्र श्री संतोकसिंह गहलोत, जोधपुर
श्री लुंबाराम देवड़ा, जगदम्बा पब्लिक स्कूल, जोधपुर
श्री विकास कच्छवाहा पुत्र श्री नरेन्द्रसिंह, जोधपुर
श्री कानाराम सांखला, कानजी स्वीट्स, जोधपुर
श्री कुशाल राम सांखला, रामजी स्वीट्स, जोधपुर
श्री मुकेश टाक पुत्र श्री हरीसिंह टाक, जोधपुर
श्री अरविंद पुत्र श्री आनंदप्रकाश गहलोत, जोधपुर
श्री आनंदसिंह पुत्र श्री जगदीश सिंह सांखला, जोधपुर
श्री जयंत सांखला,आर.एस.एम.विद्याश्रम, जोधपुर
श्री प्रदीप कुमार पुत्र श्री मोहनलाल कच्छावा, अजमेर
श्री ताराचंद पुत्र श्री मोतीलाल सांखला, मथानियां

माली सैनी सन्देश

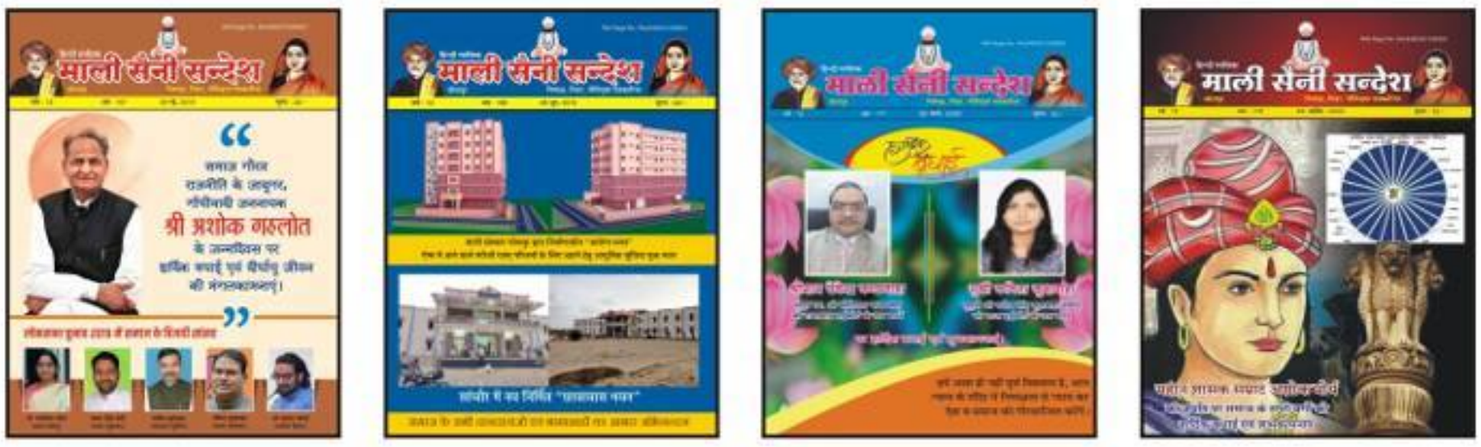

ही क्यों ?

क्योंकि ?

हमारे पास है सैकड़ों एन. आर. आई. सहित पांच हजार पाठकों का विशाल संसार

क्योंकि ?

हम बताते है सच्चाई तथा सामाजिक गतिविधियों की संपूर्ण जानकारी जो कि समाज में हो रही है।

हमें विज्ञापन दीजिये

क्योंकि
हमारी क्रियेटिव टीम के साथ
यह सजाती है आपके ब्राण्ड को पूरे
देश ही नहीं विदेशों में भी

घर बैठे माली सैनी संदेश मंगाने के लिए भर कर भेजें

सदस्यता फार्म

दिनांक _____

माली सैनी संदेश पत्रिका देश के प्रत्येक राज्य के प्रमुख शहरों के साथ ही ग्रामिण क्षेत्रों में माली सैनी समाज के लोगों की जानकारियों आपको विगत 15 वर्षो से हर माह पहुंचाकर समाज के विभिन्न वर्गो में हो रहे समाज उत्थान एवं शिक्षा तथा अन्य क्षेत्र के विकास कार्यो की जानकारी प्रदान कर रहा है। समय समय पर समाज के विभिन्न आयोजनों की भी विस्तृत जानकारी पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से सभी को उपलब्ध कराई जा रही है। यहीं नहीं देश के बाहर विदेशों में रह रहे समाज बंधुओं को भी समाज की संपूर्ण जानकारी वेब–साईट के माध्यम से भी उपलब्ध कराई जा रही है। समाज की प्रथम ई–पत्रिका होने का गौरव भी आप सभी के सहयोग से हमें ही मिला है।

हमारी वेबसाईट www.malisaini.org में समाज के सभी वर्गो की विस्तृत जानकारियां उपलब्ध है एवं www.malisainisandesh.com में हमारी मासिक ई पत्रिका के वर्तमान एवं पूर्व के अंकों का खजाना आपके लिए हर समय उपलब्ध है। आप हमें पे–टी.एम. से मोबाईल नंबर 9414475464 पर भी सदस्यता शुल्क भेज पत्रिका प्राप्त कर सकते है।

डाक से नियमित रूप से निम्न पते पर माली सैनी संदेश पत्रिका भेजने के लिए डिमाण्ड ड्राफ्ट/ मनीआर्डर माली सैनी संदेश के नाम से भेज रहा हूं।

सदस्यता राशि

दो वर्ष रु 400/- | **पांच वर्ष रु 900/-** | **आजीवन रु 3100/-**

नाम/संस्था का नाम _____

पता _____

फोन।/मोबाईल _____ ई-मेल _____

ग्राम _____ पोस्ट _____ तहसील _____

जिला _____ पिनकोड _____

राशि (रुपये) _____ बैंक का नाम _____

डिमाण्ड ड्राफ्ट/मनीआर्डर क्रमांक _____ (डीडी/एमओ माली सैनी संदेश के नाम से भेजें)

अतः मुझे/हमें भी अंग्राकित पते पर माली सैनी संदेश पत्रिका डाक द्वारा भेजें।

दिनांक _____

हस्ताक्षर

सदस्यता हेतु लिखे : - प्रसार प्रभारी

3, जवरी भवन, भैरुबाग मंदिर के सामने, महावीर काम्प्लेक्स के पीछे, सरदारपुरा, जोधपुर (राज।)

Mobile : 94144 75464 Visit us at : www.malisainisandesh.com
www.malisaini.org. E-mail :malisainisandesh@gmail.com; editor@malisaini.org

RATES

Advertisements

COLOR (Full Page)

Back Cover	10,000/-
Inside Cover	5,000/-

BLACK

Full Page	2,500/-
Half Page	1,500/-
Quarter Page	1,000/-

write us : P. O. Box 09, Jodhpur
Cell : 94144 75464,

log on : www.malisainisandesh.com
e-mail : malisainisandesh@gmail.com
e-mail : editor@malisaini.org

कार्यालय : 3, जवरी भवन, भैरुबाग मंदिर के सामने, महावीर कॉम्पलेक्स के पीछे, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)

www.malisainisandesh.com

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली समाज की सम्मानित मातृशक्ति

शिशाविद् प्रथम महापौर
डॉ. ओमकुमारी गहलोत

बंदायु सांसद
संघमित्रा मौर्या

प्रथम महिला विधायिका
शोभारानी कुशवाहा

पूर्व सांसद कुरुक्षेत्र
कैलाशो सैनी

पूर्व सभापति नगर परिषद
कमलेश सैनी

नगर पालिका चुरु
चैयरमेन पायल सैनी

निर्भया केस वकील
सीमा सृमद्धि कुशवाहा

राष्ट्रीय महासचिव माली समाज
विनीता माली

प्रदेश उपाध्यक्ष
कुंती देवड़ा परिहार

समाज सेविका
डॉ. मोनिका सैनी

प्रशासनिक अधिकारी
रेणु सैनी (आएएस)

लेखिका, कवियत्री
डॉ. अरुणा अंचल सैनी

कथा वाचिका
साधना सैनी

मिस इण्टरनेशल यूएसए
श्री सैनी

मिसेज इण्टरनेशल
दिप्ती सैनी

समाज सेविका
मधु कच्छवाहा

प्रदेश सचिव
मधु सांखला

जिला उपाध्यक्ष
मीना सांखला

समाज सेविका, प्रवक्ता
दिव्या गहलोत सांखला

समाज सेविका
कुसमुलता परिहार

Postal Regd No. Jodhpur/463/2017-19

हार्दिक बधाई

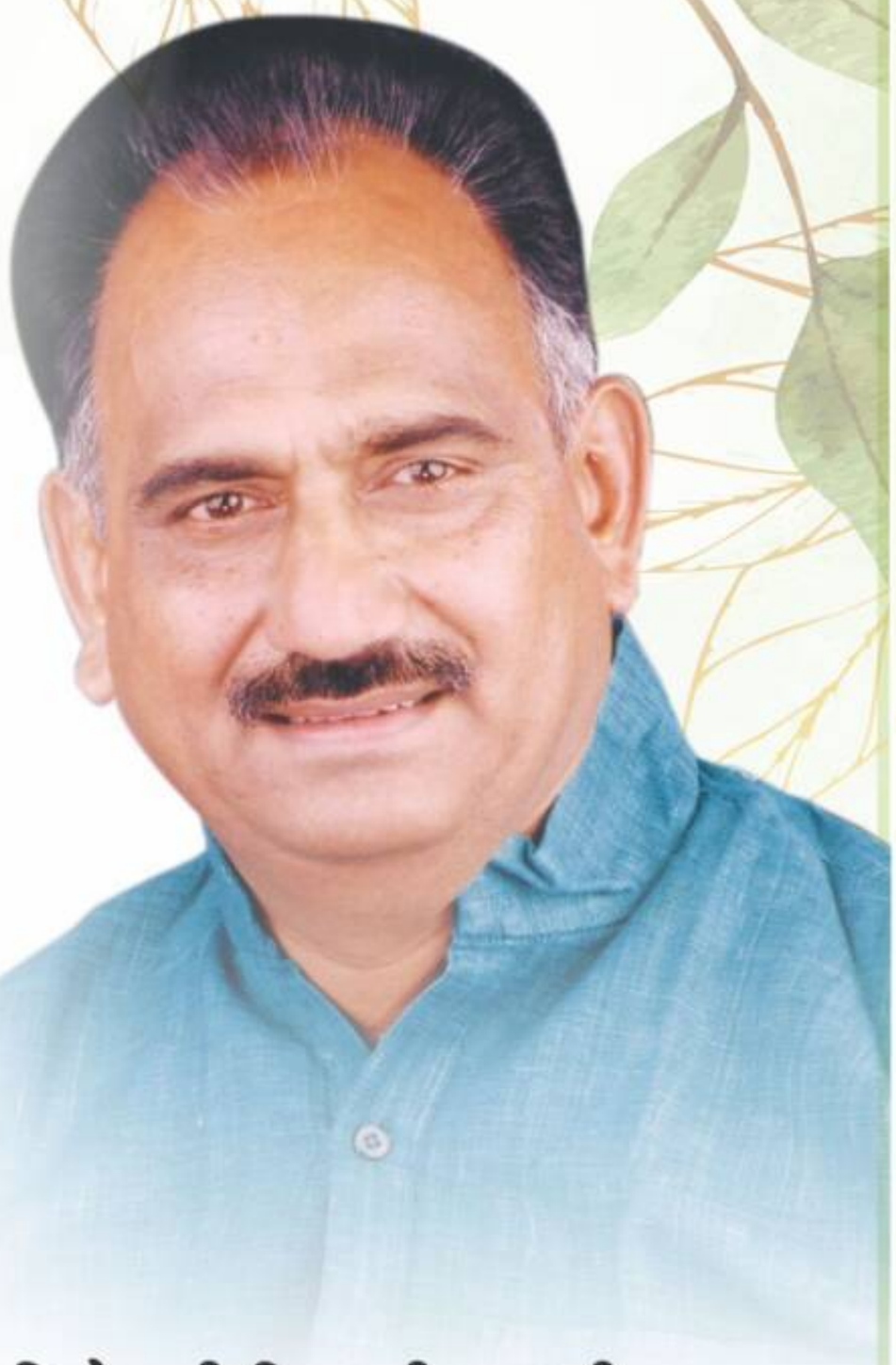

वरिष्ठ राजनैतिज्ञ, संत शिरोमणी लिखमीदास जी
महाराज स्मारक विकास संस्थान के संस्थानक
अध्यक्ष, पूर्व मंत्री

श्री राजेन्द्र गहलोत

के राज्यसभा सांसद निर्वाचित होने पर हार्दिक
बधाई एवं शुभकामनाएं।

शुभेच्छु :

माली सैनी संदेश परिवार

स्वत्वाधिकारी संपादक / मालिक / प्रकाशक / मुद्रक
मनीष गहलोत के लिए भण्डारी ऑफसेट, न्यू पॉवर हाऊस
सेक्टर-7, जोधपुर से छपवाकर माली सैनी संदेश कार्यालय
सोजती गेट के अंदर, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित
फोन : 9414475464
ई-मेल - malisainisandesh@gmail.com

पत्र व्यवहार के लिए पता
P.O. Box No. 09, JODHPUR